CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

7·2 V₂

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत के महान् योगी

षष्ठ खण्ड

विश्वनाथ मुखर्जी

अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

BHARAT KE MAHAN YOGI

Part VI

by

VISHWANATH MUKERJEE

1989

© विश्वनाथ मुखर्जी

प्रथम संस्करण : १९८९ ई०

प्रकाशक

अनुराग प्रकाशन, चौक, वाराणसी–१

मुद्रक

विद्या प्रिंटिंग प्रेस, ब्रह्माघाट, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

उन अगणित पाठकों को
जिन्हें संतों के प्रति आस्था है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरोवाक

योगियों का योग भी एक विज्ञान है, जैसा कि स्वामी विशुद्धानन्द ने कहा है। संसार में जितनी चीजें आविष्कृत हुई हैं, उनके पीछे वैज्ञानिकों ने साधनाएँ की हैं तब कहीं जाकर वह सब चीजें मानव के उपयोग में आ रही हैं। खेद की बात है कि सुभीता पाने पर भी तत्कालीन संस्कृति-मंत्री श्री हुमायूँ कबीर ने इसकी उपेक्षा कर दी, अन्यथा इस दिशा में भारत लाभान्वित अवश्य होता। घटना इस प्रकार की है—

पंडित शिवऔतार शर्मा जिनका जन्म बिजनौर जिले में हुआ था, वे अपनी साधना के माध्यम से दूसरों के चिन्तन की बात तुरत बता देते थे। यहाँ तक कि आगे क्या होनेवाला है, यह भी बता सकते थे। इस बारे में श्रद्धेय पण्डित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ने लिखा है—"नवभारत टाइम्स के सहायक संपादक, दिल्ली निगम के सदस्य श्री हरिदत्त शर्मा (स्व०) से मिल बैठने का अवसर मिला तो उन्होंने तरुण साधक शिवऔतार शर्मा की चर्चा करते हुए कहा—'मैंने उनके बारे में बहुत कुछ सुना था, पर मैं ऐसी बातों पर विश्वास नहीं करता। एक दिन मैं अपनी उलझन में उलझा था और निर्णय नहीं कर पा रहा था कि क्या करूँ; अचानक वे आ गये और बिना मेरे पूछे ही उन्होंने कुछ देर बाद कहा—'इस समय आप इस उलझन में हैं कि डिप्टी मेयर का पर्चा भरें या नहीं।'

"मैं भौचक, क्योंकि सचमुच मैं इसी उलझन में था। शर्माजी ने कहा—'आप यह पर्चा अवश्य भरेंगे, पर परिस्थितियाँ ऐसी करवट लेंगी कि आप उसे वापस ले लेंगे।' और सचमुच मैंने पर्चा भरा और दूसरे दिन वापस ले लिया।"

आगे प्रभाकरजी ने लिखा है—"इस संस्मरण ने मेरी दिलचस्पी बढ़ा दी। वे भारत के महामहिम राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद से मिले तो राष्ट्रपति ने पूछा—'बताओ, मैं क्या सोच रहा हूँ ?'

"उन्होंने कहा—'आप जो कुछ सोच रहे हैं, उसे कागज पर लिखने की कृपा करें। मैं आपसे दूर बैठता हूँ।'

"राष्ट्रपति ने बहुत सावधानी बरती और वे ऊपर के कक्ष में चले गये। शिव-औतार नीचे बैठे रह गये। उनके पास दो सैनिक अधिकारी मौजूद थे। ऊपर जाकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्रपति ने अपना चिन्तन कागज पर लिखा और फिर नीचे आ गये। शिवऔतार ने उन्हें बता दिया कि अगले तीन महीनों में क्या होनेवाला है। प्रश्न के साथ-साथ उत्तर भी बताये। इनमें एक तो राष्ट्रपति से सम्बन्धित था, दूसरा मन्त्रिमण्डल और तीसरा अन्तर्राष्ट्रीय घटना के बारे में था। सभी उत्तर सही प्रमाणित हुए।

"इस घटना के कुछ दिनों बाद शिवऔतार भारत के प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू से मिले। नेहरूजी ऐसे चमत्कारों पर विश्वास नहीं करते थे लेकिन हर नयी बात पर दिलचस्पी लेते थे। उन्होंने पूछा—'बताओ, इस वक्त मैं क्या सोच रहा हूँ ?'

"शिवऔतार ने कहा—'आप इतनी जल्दी-जल्दी और इतनी दूर की बातें सोचते हैं कि उनमें से किसी एक को पकड़ना कठिन है। अगर आप किसी विशेष बात का उत्तर चाहते हैं तो उसे कागज पर लिखें।'

"शिवऔतार द्वारा दिये उत्तर से प्रसन्न होकर उन्हें अपने मन्त्रिमण्डल के सदस्य श्री हुमायूं कबीर के पास भेजा। सारी बातें सुनने के बाद कबीर साहब ने जवाब दिया—'हम प्रमाणित विज्ञान की खोज के लिए सहायता देते हैं और यह कोई प्रमाणित विज्ञान नहीं है'।"

प्रभाकरजी ने अपने लेख में एक प्रश्न को स्थापित किया है—"योग को अभी तक साधुओं का काम समझा जाता रहा है, पर उन दिनों दिल्ली में अमेरिकी वैज्ञानिकों की सहायता से योग के जो वैज्ञानिक परीक्षण हुए, क्या वे महत्त्वपूर्ण नहीं थे ? हमारे यहाँ ऐसे अनेक लोग हैं जो डॉक्टरों की उपस्थिति में अपनी नाड़ी और हृदय-गति को एक विशेष समय तक बन्द कर देते हैं और फिर चला देते हैं। डॉक्टरी का प्रमाणित विज्ञान इसे असम्भव बताता रहा है। विज्ञान के अनुसार एक आदमी कितनी देर तक बिना साँस लिये रह सकता है। इसका किताबों में लिखा उत्तर बेकार है, क्योंकि भारत में ऐसे अनेक लोग हैं जो कई-कई सप्ताह सन्दूक में बन्द होकर जमीन में गड़ जाते हैं और कई सप्ताह बाद जीवित निकलते हैं। कौन कहता है कि हम इन सबको प्रमाणित मान लें, पर हमारे देश का विज्ञान एक बार इन्हें अप्रमाणित तो कहे, जिससे नयी पीढ़ी अन्धश्रद्धा से बचे।"

इस खण्ड में इस उद्धरण को देने का अर्थ यह है कि पिछले खण्डों को पढ़कर अनेक पाठकों ने योगियों के चमत्कार पर अविश्वास प्रकट किया तो कुछ राहत पाने के उद्देश्य से मेरे यहाँ आये। मैं न तो योगी हूँ और न कभी योगियों से लाभ उठाया है, पर सभी घटनाओं पर विश्वास करता हूँ, क्योंकि जिन्हें लाभ हुआ है, उनकी जबानी घटनाओं को सुन चुका हूँ। बिना शान्ति, संतोष प्राप्त किये कोई अन्धभक्त नहीं होता।

—लेखक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुक्रमणिका

स्वामी सदानन्द सरस्वती	१
पवहारी बाबा	२१
हरिहर बाबा	३४
साईं बाबा	५४
रणछोड़दास महाराज	७२
अवधूत माधव पागला	८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सदानन्द सरस्वती

प्रातःकाल का समय था। पंडित राममाणिक्य अपनी चटशाला में छात्रों को कठोपनिषद् की व्याख्या करते हुए अर्थ वता रहे थे। ठीक इसी समय एक स्वरूपवान् किशोर आया। साष्टांग प्रणाम करने के पश्चात् वह विनीत भाव से खड़ा हो गया।

आगन्तुक की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखते हुए राममाणिक्य ने कहा—"आयुष्मान् हो। कहो वत्स, क्या चाहते हो ?"

किशोर ने हाथ जोड़ते हुए कहा—"आपके चरणों का आशीर्वाद प्राप्त करने आया हूँ। मुझे अपना शिष्य वनने का गौरव प्रदान करें। आपसे ज्ञान प्राप्त करने आया हूँ।"

राममाणिक्यजी को समझते देर नहीं लगी कि वालक ज्ञान-पिपासु है। अध्ययन के लिए आया है। उन्होंने नाम-धाम और अव तक के अध्ययनों के वारे में कई प्रश्न पूछने के वाद कहा—"मुझे तुम्हारे जैसे शिष्य को विद्यादान देने में हर्ष होगा। किन्तु अपने निवास आदि का प्रबंध स्वयं करना होगा।"

किशोर ने कहा—"निवास के लिए 'तांतीपाड़ा' (जुलाहों का मुहल्ला) में मुझे एक घर मिल गया है। शेष प्रवंध श्रीचरणों की कृपा से कर लूँगा।"

पंडितजी ने हर्षित होकर कहा—"साधु, साधु। तव अगली प्रतिपदा से अध्ययन प्रारंभ करना।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काशी, मिथिला, काश्मीर, नवद्वीप की भाँति किसी जमाने में वर्तमान कलकत्ता नगरी का एक कोना जो वराहनगर नाम से जाना जाता है, संस्कृत-विद्या का केन्द्र था। यह अठारहवीं शताब्दी के मध्य की बात है। इसी वराहनगर में वंश-परम्परा से बंगाल के प्रसिद्ध पंडित राममाणिक्य रहते थे, जिनकी चटशाला में विभिन्न स्थानों से विद्यार्थी संस्कृत के अध्ययन के लिए आते थे। राममाणिक्य के छात्र राजा, महाराजा और जमींदारों के यहाँ जाकर पूजा-पाठ तथा धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते थे।

कुछ ही दिनों में राममाणिक्य ने अनुभव किया कि आगन्तुक किशोर अत्यन्त मेधावी छात्र है। आगे चलकर यह बालक अपने गुरु का मुख उज्ज्वल करेगा। जब किसी गुरु को प्रतिभाशाली छात्र प्राप्त होता है तब वे अपना सारा ज्ञान दे देने में संकोच नहीं करते। आगन्तुक किशोर शिरोमणि भट्टाचार्य कुछ ही दिनों में अपने श्रम तथा लगन से अनेक विषयों में पारंगत हो गया।

इसी बीच गुरुदेव राममाणिक्य का निधन हो गया। शिरोमणि भट्टाचार्य गुरु-पुत्र श्री गौरीप्रसाद तर्कालंकार को चटशाला में गुरु-पद पर आसीन करके उनकी सहायता करने लगे। कुछ वर्षों बाद गुरु-पुत्र गौरीप्रसाद का निधन हो गया।

गौरीप्रसाद के निधन के बाद शिरोमणिजी का दिल टूट गया। उन्होंने अपने गुरु की चटशाला को गुरुजी के पौत्र रामप्रसाद विद्यालंकार को सौंपकर अपने निवास-स्थान पर अलग से एक चटशाला की स्थापना की। इस प्रकार वराहनगर में दो चटशालाएँ कार्य करने लगीं। रामप्रसादजी भी असाधारण पंडित थे, परन्तु शिरोमणि भट्टाचार्य की ख्याति उनसे अधिक थी। बंगाल के कई जमींदार और राजा आपके मंत्र शिष्य बन गये।

शिरोमणि भट्टाचार्य की ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ती गयी। इसके पीछे भट्टाचार्यजी की पत्नी का विशेष हाथ था। वह असाधारण सुन्दरी थी। दूसरी ओर अत्यन्त कोमल हृदयवाली थी। दूर-दूर से आये छात्रों को भोजन देती, स्नेह देती और अस्वस्थ होने पर तीमारदारी करती थी।

शिरोमणिजी की इन सेवाओं से प्रभावित होकर गाँव के लोग अनाज-तरकारी की सहायता देते थे। जब किसी सामग्री की आवश्यकता होती तब वे सहायता करते थे। जल पानी भरते, लकड़ी चीरते, चारों ओर सफाई करते। जीवन सरल गति से चल रहा था।

शिरोमणिजी के प्रिय छात्रों में चिन्तामणि, संन्यासीचरण, ठाकुरदास और कालीचरण मैत्र थे, पर वे सबसे अधिक स्नेह ठाकुरदास से करते थे। वह इसलिए कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठाकुरदास उनके गुरु पण्डित राममाणिक्य का प्रपौत्र था। इसके अलावा एक और प्रमुख कारण था।

वढ़ती उम्र के कारण शिरोमणिजी अशक्त हो गये। शरीर में जगह-जगह मांस झूलने लगा था। अपने गुरु से प्राप्त मंत्र की साधना करते हुए भगवान् से प्रार्थना करते—"प्रभो, अब मुझे मुक्ति दो।"

सहसा एक दिन जब वे ध्यानस्थ हुए तब उन्हें लगा जैसे वे किसी अदृश्य स्थान में उपस्थित हैं और एक शक्ति उन्हें आदेश दे रही है—"शिरोमणि, अभी समय नहीं आया है। जब तक ठाकुरदास के ज्ञान का विकास नहीं होगा तब तक तुम्हें प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। वह शापभ्रष्ट ऋषि है। यही उसका अंतिम जन्म है। उसके ज्ञान का विकास होने पर तुम्हारी लीला समाप्त होगी।"

शिरोमणिजी यह भविष्यवाणी सुनकर चौंक उठे। उन्हें ठाकुरदास की जन्म-कहानी अच्छी तरह याद है। गुरुदेव के पुत्र गौरीप्रसाद असाधारण विद्वान् थे। उनके जीवनकाल में ही ठाकुरदास ने वृद्धावस्था में जन्म लिया था। गौरीप्रसाद के दो पौत्रों का विवाह हुए काफी दिन व्यतीत हो गये थे, पर दोनों ही संतान-हीन रहे। गौरी-प्रसाद की पत्नी चिंतित हो उठी। कहीं यह वंश लुप्त न हो जाय। अपने पति से आज्ञा लेकर गौरीप्रसाद की पत्नी तारकेश्वर धाम चली गयी।

आज भी वंगाल स्थित तारकेश्वर धाम को जाग्रत स्थान माना जाता है जहाँ नित्य लाखों यात्री आते हैं और मन्नत मानते हैं। बाबा तारकेश्वर से गौरीप्रसाद की पत्नी ने कामना की कि मेरे रामप्रसाद को एक ऐसा पुत्र दो जो मेरे वंश का मुख उज्ज्वल कर सके। मैं उसका लालन-पालन तुम्हारा प्रसाद समझकर करूँगी।

दादी की मनोकामना पूरी हो गयी। यथासमय बच्चे ने जन्म लिया। दादी ने पोते का नाम रखा—ठाकुरदास। शुक्ल पक्ष के चाँद की तरह लड़का बड़ा होता गया। मुंडन-अन्नप्राशन के बाद दादा चले गये। उपनयन होने के बाद पिता रामप्रसाद परलोकवासी हुए। इस घटना के बाद माँ भी पति के मार्ग पर चली गयी। बालक अभी बचपन की ड्योढ़ी पार भी नहीं कर सका और स्नेह-दान करनेवाले तीन-तीन प्राणी चले गये।

ठाकुरदास उपेक्षित न रहे, इसलिए दादी ने पिता-माता के अभाव को दूर करने के लिए सबसे अधिक स्नेह देने लगी। बड़ी भाभियों ने उसे देवर के रूप में नहीं, बेटे के रूप में स्वीकार किया।

अक्सर जब बड़े भाई प्रेमचन्द उसे डाँटते तब दादी नाराज होकर कहती—"शर्म नहीं आती छोटे भाई को डाँटते ? मेरा फूल-सा पोता तेरे कारण पीला पड़ता जा रहा है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रेमचन्द वेदान्तवागीश कहते—"दादी, तुम्हारे दुलार ने इसे ढीठ बना दिया है। ब्राह्मण-वंश का लड़का है, अगर वेद-उपनिषद् नहीं पढ़ेगा तो खायेगा क्या ?"

दादी कहती—"बड़ा होने पर जब बुद्धि आयेगी तब स्वयं ही सब करेगा। जिस बच्चे ने माँ-बाप के स्नेह को नहीं जाना, उस पर कठोर शासन करेगा तो मैं किसके सहारे जिऊँगी ? मेरे जीवित रहते मेरा योग्य पुत्र, गृहलक्ष्मी बहू चली गयी। कम-से-कम उसे मेरे सहारे छोड़ दे।"

इस घटना के बाद प्रेमचन्द ने डाँटना-फटकारना बन्द कर दिया। ठाकुरदास दिनभर अपने साथियों के साथ खेलता था। अक्सर न जाने कहाँ गायब हो जाता था। लेकिन उसके सभी साथी यह जानते थे कि वह श्मशान-भूमि में रहनेवाले भैरवी तथा सिद्ध बाबा के पास नित्य जाता है। अक्सर कालीघाट जाकर मंदिर-दर्शन करता है।

प्रेमचन्द को पूर्ण रूप से निःस्पृह देखकर दादी समझ गयी कि वह मुझसे नाराज है। एक दिन स्वयं ठाकुरदास को लेकर शिरोमणिजी की चटशाला में पहुँचा आयी। ठाकुरदास को पाकर शिरोमणिजी फूले नहीं समाये। आखिर गुरु-घराने का लड़का अपनी चटशाला छोड़कर मेरे यहाँ आया है।

शिरोमणिजी की चटशाला में ठाकुरदास का आगमन शुभ हुआ। वृद्ध पंडित ने अनुभव किया कि जैसे उनके नेत्र की ज्योति बढ़ गयी हो। उनमें नवजीवन और स्फूर्ति आ गयी हो। अब मिजाज का चिड़चिड़ापन भी दूर होने लगा है। कुछ ही दिनों में शिरोमणिजी ने अनुभव कर लिया कि यह सब ठाकुरदास के कारण हो रहा है।

× × ×

बड़े भाई प्रेमचन्द और छोटे भाई ईशानचन्द दोनों ही सवेरे स्नान करने के बाद घर पर कुलदेवता की पूजा करते थे। पूजा के लिए बागों से फूल ले आने का काम ठाकुरदास को करना पड़ता था। नित्य भोर के समय वह गाँव के भिन्न-भिन्न बागों में जाकर फूल चयन करता था।

एक दिन जब वह बेल की पत्तियाँ तोड़ रहा था तब पता नहीं किधर से आवाज आयी—"क्यों रे छोकरे, जिस टहनी से मैं पत्तियाँ तोड़ रहा हूँ, उसे तू क्यों तोड़ दे रहा है ?"

ठाकुरदास ने कहा—"अरे वाह ! मैं जिस डाली को पकड़ रहा हूँ, उसमें आप तोड़ रहे हैं। ऊपर से मुझ पर बिगड़ रहे हैं।"

वृद्ध ने कहा—"आखिर तू इन बेलपत्तियों को लेकर क्या करेगा ? पूजा-पाठ कुछ जानता भी है ?"

ठाकुरदास ने सोचा कि अगर पूजा करता हूँ, कहूँगा तो मंत्र पढ़ने को कहेंगे, इसलिए उसने कहा—"मैं गायत्री-पाठ करता हूँ। पूजा तो दादा करते हैं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृद्ध ने पूछा—"तू गायत्री मंत्र जानता है ? जरा सुना तो मुझे।"

ठाकुरदास से गायत्री मंत्र सुनने के बाद वृद्ध ने कहा—"गायत्री मंत्र जानता तो है, पर उच्चारण ठीक नहीं है। मंत्र ठीक से उच्चारण करना सीख।"

ठाकुरदास ने कहा —"अब सीखूंगा।"

वृद्ध ने कहा—"मुझसे सिखेगा ? मैं सिखा दूँगा। कल से और जल्दी यहाँ आ जाना। तुझे बहुत कुछ सिखा दूँगा। लेकिन देख, यह बात किसीसे मत कहना, वर्ना कुछ भी नहीं सीख सकेगा।"

इतना कहने के पश्चात् वृद्ध ने सिर से लेकर हृदय और पीठ पर हाथ फेर दिया। ठाकुरदास एक झटके में सिहर उठा। उसे लगा जैसे तीव्र गति से कुछ उसके मस्तिष्क से उतरकर पैरों तक आ गया। जब तक वह प्रकृतिस्थ हो, उसके पहले ही वृद्ध महाशय न जाने कहाँ गायब हो गये। पता नहीं कहाँ रहते हैं, कौन हैं ? इन्हें गाँव में तो कभी नहीं देखा।

लगातार तीन वर्ष तक उक्त अपरिचित वृद्ध से ठाकुरदास मंत्र आदि की शिक्षा लेता रहा। घर या गाँव के किसी मित्र को यह बात मालूम नहीं हो सकी। नित्य पूजा-घर में फूल-बेलपत्तियाँ रखकर वह न जाने कहाँ गायब हो जाता था।

समय गुजरता गया। ठाकुरदास अब पन्द्रह वर्ष का हो गया था। एक दिन दादी ने प्रेमचन्द से कहा—"बेटा, मेरी बड़ी इच्छा है कि मेरे रहते ठाकुरदास का विवाह हो जाय। छोटी बहू को आशीर्वाद देकर भगवान् के दरबार में जाऊँ।"

प्रेमचन्द ने कहा—"दादी, तुम बिलकुल सठिया गयी हो। इस कच्ची उम्र में दासू (घर का नाम) का विवाह करने से क्या फायदा ? जो लड़का दिन-रात आवारों के साथ घूमता है, 'क' में आ की मात्रा 'का' नहीं जानता, उसका विवाह करने से क्या लाभ ? ईशान के विवाह से क्या लाभ हुआ ? पढ़-लिखकर भी किसी काम का नहीं हुआ। दिनभर अड्डेबाजी करता रहता है।"

कड़वी बातें सहनी पड़ती हैं। दादी जानती है कि घर का सारा बोझ प्रेमचन्द पर है। उन्होंने कहा—"नहीं रे, विवाह के बाद दासू की मति-गति ठीक हो जायगी। यही अंतिम काम है। तू मेरे सामने इसका विवाह कर दे। कौन जाने इसके कारण हमारा वंश चले।"

प्रेमचन्द को समझते देर नहीं लगी कि अगर इस कार्य को टालता गया तो दादी नित्य किचकिच करेगी। पका आम जल्द पेड़ से गिर पड़ता है। कौन जाने दादी कब चल दें। ठाकुरदास का विवाह हो गया।

बहू को गोद में बैठाकर दादी विलाप करने लगी—"अरे रामप्रसाद, तू कहाँ चला गया बेटा ? आज तेरी दुलारी बहू आयी है रे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस विवाह के कई माह बाद रामप्रसाद के एक शिष्य हरगोविन्द वराहनगर आये। अगले माह वे तीर्थयात्रा पर जानेवाले थे। यहाँ आने का उद्देश्य था—गुरुमाता से आशीर्वाद प्राप्त करना। बातचीत के सिलसिले में गुरुमाता ने कहा कि अगर असुविधा न हो तो मैं भी तीर्थयात्रा पर साथ चलूं?

गुरुमाता के प्रस्ताव को हरगोविन्द ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। मझले पौत्र ईशानचन्द को साथ लेकर दादी तीर्थयात्र के लिए चली गयी। कुछ दिनों बाद ईशानचन्द को मुंडित मस्तक और सफेद वस्त्र में आते देख प्रेमचन्द का हृदय धक-सा रह गया। देखते ही देखते घर में कोहराम मच गया। सबसे अधिक विलाप ठाकुरदास करता रहा। आज उसने जीवन में पहली बार अनुभव किया कि दादी का स्नेह कितना महान् था।

× × ×

श्रावण का महीना था। बाहर मूसलाधार पानी बरस रहा था। ऐसे मौसम में धुले कपड़े पहनते देख पत्नी राधारानी ने अपने पति ठाकुरदास से कहा—"इस मौसम में बाहर जाने की क्या जरूरत? पानी रुक जाय तब चले जाइयेगा।"

ठाकुरदास ने जवाब दिया—"अब मैं दूध पीता बच्चा नहीं हूँ। बीस वर्ष उम्र हो गयी। आँधी आये या वर्षा, पर मुझे जाना ही पड़ेगा। डरो मत, साँप, भूत-प्रेत मुझे स्पर्श नहीं करेंगे और न पानी से कोई नुकसान होगा। जब लौटकर आऊँगा तब देखना मेरे कपड़े सूखे रहेंगे।"

राधारानी जानती है कि नित्य रात के समय पतिदेव कहीं चले जाते हैं। कहाँ जाते हैं, क्यों जाते हैं, यह नहीं बताते और न राधारानी इसके लिए उत्सुकता प्रकट करती है। प्रत्येक रात को जब वे सकुशल लौट आते हैं तब उसे संतोष हो जाता है।

स्वयं ठाकुरदास भी जानता है कि अगर पत्नी को सही बात बता दूँगा तो वह भयभीत हो उठेगी, तब साधना में विघ्न होगा। गुरुदेव ने इस दिशा में चुप रहने को कहा है।

धीरे-धीरे कई माह गुजर गये। नवरात्रि का पर्व आ गया। इन दिनों प्रेमचन्द के पास विभिन्न स्थानों से दुर्गा सप्तशती के पाठ के लिए वटुकों की माँग आती है। योग्य छात्रों को भेजने पर भी पाठ करनेवालों की कमी पड़ गयी।

उस दिन धूप में बैठे तेल मालिश करते हुए प्रेमचन्द अपने-आप कहने लगे—"इतने बड़े पंडित घराने में अयोग्य वंशधर पैदा हुए हैं। दो-दो भाइयों के रहते, पराये घर के लड़कों को चण्डीपाठ के लिए भेजना पड़ रहा है। एक को अड्डेबाजी से फुरसत नहीं और दूसरा दादी के दुलार में मूर्ख निकल गया। मेरा क्या, मेरे बाद सभी को पता चलेगा जब हल जोतना पड़ेगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठीक इसी समय पूजा के लिए फूल लेकर ठाकुरदास आया। बड़े भैया की बातें सुनकर उसने कहा—"बड़े भैया, मुझे कहीं जाने की आज्ञा दें। मैं चण्डीपाठ करूँगा।"

बड़े भैया ने कहा—"ईशान लायक होकर भी नालायक है और तू तो पूरा गधा है। चला है चण्डीपाठ करने।"

दादा की बात लग गयी। उन्हें क्या मालूम कि अब उनका छोटा भाई कितना योग्य हो गया है। अगर वे इसे जान पाते तो ऐसी बात न कहते। ठाकुरदास पूजा-घर से पोथी उठा लाया और दादा के सामने सस्वर पाठ करने लगा—

ॐ कालीं रत्ननिबद्धनूपुरलसत्पादाम्बुजामिष्टदां
काञ्ची-रत्न-दुकूल-हार-ललितां नीलां त्रिनेत्रोज्ज्वलाम्।
शूलाद्यस्त्रसहस्रमण्डितभुजामुद्यद्वक्त्रपीनस्तनी-
माबद्धामृतरश्मिरत्नमुकुटां वन्दे महेशप्रियाम्॥
ॐ नमश्चण्डिकायै

अभी पोथी का वेठन पूरी तरह खुला नहीं है। इधर पाठ प्रारंभ हो गया। यह साहस प्रेमचन्द वेदान्तवागीश में भी नहीं है। वे तेल लगाना भूल गये। बड़ी बहू रसोईघर से बाहर आ गयी। मझली बहू सफाई छोड़कर आँगन में आ गयी। छोटी बहू, ईशान सभी आसपास आकर खड़े हो गये। राह चलते लोग इस मधुर कंठ से आकर्षित होकर भीतर आने लगे। वृक्षों पर पक्षियों का काकली स्वर शान्त हो गया। सभी लोग मंत्रमुग्ध भाव से खड़े 'देवीसूक्तम्' का पाठ सुनते रहे। किसीको समय का कौन कहे, अपने तन-बदन की सुध नहीं रही।

एकाएक प्रेमचन्द उठ खड़े हुए और झट ठाकुरदास को गोद में उठाकर चूमने लगे। उनकी आँखों से आनन्द के आँसू बह निकले। उन्होंने पूछा—"क्यों रे पगले, किसने तुझे ऐसी शिक्षा दी? किसके यहाँ पढ़ता था? मुझे चौंकाने के लिए छिपाता आया है?"

ठाकुरदास ने सोचा कि गुरुदेव ने सही बात कहने को मना किया है। उसने कहा—"तांतीपाड़ा के शिरोमणि पंडित के यहाँ पढ़ता हूँ।"

प्रेमचन्द उसकी झूठ को पकड़ नहीं सके। जब-कि वह उस अपरिचित वृद्ध से यौगिक-शक्ति के जरिये सारा ज्ञान प्राप्त करता रहा।

धीरे-धीरे समय गुजरता गया और इस बीच अनेक घटनाएँ हुईं। शिरोमणि भट्टाचार्य स्वर्गवासी हो गये। संन्यासीचरण ने विवाह कर लिया। गाँव की माता न जाने कहाँ चली गयीं। अब केवल सिद्धबाबा गाँव में हैं। अक्सर अपने मित्रों के साथ उनके निकट ठाकुरदास जाता है। सिद्धबाबा हठयोग की शिक्षा देते हैं।

एक दिन बातचीत के सिलसिले में सिद्धबाबा ने जब यह देखा कि ठाकुरदास दूर चला गया है तब उन्होंने संन्यासीचरण से कहा—"तुम लोग ठाकुरदास का विशेष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध्यान रखना। वह साधारण प्राणी नहीं है। शापभ्रष्ट दिव्य पुरुष है। बहुत जल्द इस गाँव को छोड़कर दूर कहीं चला जायगा।"

संन्यासीचरण के अलावा अन्य किसीने इस चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन संन्यासीचरण ने सिद्धबाबा की चेतावनी पर विश्वास किया। इस घटना के बाद से उसने ठाकुरदास के साथ और अधिक घनिष्ठता बढ़ायी।

एक दिन गाँव के लोग चौंक उठे। सिद्धबाबा जो कई वर्षों से वराहनगर में रहते थे, न जाने कहाँ गायब हो गये। ठाकुरदास या उसके मित्रों को भी इसकी जानकारी नहीं थी। अब वे जहाँ बैठते थे, वहाँ अक्सर ठाकुरदास अकेला बैठकर ध्यान लगाने लगा।

एक दिन आँखें खोलने पर उसने देखा—सामने कई मित्र बैठे हैं। पूछा—"तुम लोग कब आये?"

संन्यासीचरण ने कहा—"काफी देर हुई। तुम ध्यानस्थ थे, इसलिए हम चुपचाप बैठे रहे। क्या सोच रहे हो?"

ठाकुरदास ने कहा—"इधर कुछ दिनों से तीर्थ-भ्रमण करने की इच्छा हो रही है। सोचता हूँ कि कहीं चल दूँ।"

संन्यासीचरण ने कहा—"यह तो शुभ समाचार है। मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा। कब चलोगे?"

बातचीत में दिन तथा समय निश्चित हो गया। चिन्तामणि और कालीचरण भी चलने को तैयार हो गये। अधिक रात गये ठाकुरदास अपने अपरिचित वृद्ध गुरुदेव के पास आशीर्वाद माँगने चला गया।

राधारानी गर्भवती थी। प्रसव के सिलसिले में नैहर चली गयी थी। ठाकुरदास ने सोचा कि सही बात कहने पर बड़े दादा अनुमति नहीं देंगे। ससुराल जाने का बहाना बनाकर वह कलकत्ते की ओर रवाना हो गया। उसके जाने के कई रोज बाद प्रेमचन्द को सही बात मालूम हुई। वे छोटे भाई के इस आचरण से बड़े दुःखित हुए। यह समाचार राधारानी तक पहुँच गया।

× × ×

गाँव से चलकर चारों युवक कलकत्ता आये। यहाँ काली देवी का दर्शन करने के बाद पश्चिम की ओर बढ़ गये। गया, काशी, नैमिषारण्य, मथुरा, वृन्दावन आदि स्थानों का दर्शन करते हुए हरिद्वार पहुँच गये। मार्ग में एक साथी और साथ हो लिया।

जाड़ा समाप्त हो गया था। अप्रैल के अंत में अनेक साधु-महात्मा तथा गृहस्थ बदरीनाथ दर्शन करने के लिए जा रहे थे। इन यात्रियों के साथ पाँचों युवक रवाना हो गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीसरे दिन जब ये पाँचों युवक आगे बढ़ रहे थे तब मंदगति से चलने के कारण ठाकुरदास थोड़ी देर के लिए पिछड़ गया। ठीक उसी समय उसे लगा जैसे कोई उसका नाम लेकर पुकार रहा हो। चकित दृष्टि से चारों ओर देखने पर कोई दिखाई नहीं दिया।

पुनः आवाज आने पर पीछे सुदूर दृष्टि जाने पर ठाकुरदास ने देखा—एक पहाड़ी पर एक संन्यासी खड़े हैं जो हाथ के इशारे से अपने पास बुला रहे हैं। मंत्रमुग्ध की तरह ठाकुरदास उनकी ओर चल पड़ा। उस वक्त उसे यह होश नहीं रहा कि आगे मित्र-मंडली गयी है, जब वे उसकी तलाश करेंगे तो कैसे मुलाकात होगी। आगे चलने-वाले मित्रों को भी ध्यान नहीं रहा। वस्तुतः यह दैवयोग पहले से ही निश्चित था।

पहाड़ी के समीप पहुँचने पर उक्त अपरिचित संन्यासी ने हाथ के इशारे से ऊपर आने का रास्ता बताया। इधर ठाकुरदास इस ऊहापोह में पड़ गया कि इन्हें मैं पहचानता नहीं, पर इन्हें मेरा नाम कैसे मालूम हो गया? मुझे क्यों बुला रहे हैं? आखिर यह हैं कौन?

ऊपर आने पर ठाकुरदास ने देखा कि उक्त संन्यासी जहाँ खड़े हैं, उनके ठीक पीछे एक गुफा है। तभी अपरिचित संन्यासी ने कहा—"जरा ठहरो। गुफा में अँधेरा है। प्रकाश की व्यवस्था कर लूँ तब बातें होंगी।"

गुफा में रोशनी जलाने के बाद संन्यासी अपने साथ ठाकुरदास को भीतर ले गये। वृद्ध संन्यासी ने कहा—"एक अपरिचित व्यक्ति ने कैसे तुम्हारा नाम लेकर पुकारा और यहाँ बुला लाया, इस पर शायद तुम्हें आश्चर्य हो रहा होगा। संभव है, कुछ डर भी लग रहा हो। तुम मेरे गुरुभाई हो। जिन गुरुदेव से तुम शिक्षा प्राप्त करते रहे, मैं भी उन्हीं पूज्यपाद का शिष्य हूँ। मैं गुरुदेव के आदेश से यहाँ हूँ। सारी बातें तुम्हें धीरे-धीरे मालूम हो जायेंगी। सामने कंडाल में पानी है। मुँह-हाथ धो लो।"

मुँह-हाथ धोकर ठाकुरदास गुफा के भीतर आया तो देखा कि बाघ के चमड़े के आसन पर संन्यासीजी बैठे हैं और उनके ठीक सामने एक आसन बिछा है। खाली आसन की ओर उन्होंने बैठने का इशारा किया। प्रदीप के प्रकाश में ठाकुरदास ने देखा—गुफा की प्राचीरों में खोदकर आलमारियाँ बनायी गयी हैं जिनमें पुस्तकें रखी हैं। गुफा की ऊँचाई अधिक नहीं है। तभी संन्यासीजी उठकर दूसरी ओर चले गये।

थोड़ी देर में एक पात्र में खाद्य-सामग्री और कमंडल में पानी लेकर आये। उन्होंने कहा—"लो, भोजन करके आराम करो।"

ठाकुरदास ने कहा—"मुझे एक बात की चिन्ता सता रही है। मैंने अपने साथियों को कोई सूचना नहीं दी और न वे जान सके कि मैं यहाँ कैसे चला आया। वे लोग मेरे लिए चिन्तित हो रहे होंगे। शायद मेरी तलाश में परेशान होंगे।"

वृद्ध ने कहा—"उनके लिए परेशान होने की जरूरत नहीं। आज नहीं तो कल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वे अन्य यात्रियों के साथ आगे बढ़ जायेंगे। उनसे तुम्हें अलग होना ही था। मैं यहाँ काफी दिनों से गुरुदेव के आदेश की प्रतीक्षा कर रहा था। अब आदेश प्राप्त हो गया है। अब आराम करो। शेष बातें कल होंगी।"

दूसरे दिन भोर के वक्त जब ठाकुरदास सोकर उठा तो संन्यासीजी ने कहा—"चलो, गंगा-स्नान कर आयें।"

कल शाम के धुँधलके में इस स्थान को ठाकुरदास ठीक से देख नहीं सका था। इस वक्त गुफा के बाहर आने पर उसने देखा कि कल वह टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डियों के सहारे यहाँ आया था। गुफा के दूसरी ओर गंगा नदी तक जाने का सरल मार्ग है। स्नान के पश्चात् गुफा के दूसरी ओर के बाग से फूल-बेलपत्ती लाकर वह पूजा करने लगा।

पूजा समाप्त करने के बाद पुनः गुफा के बाहर आया। बाहर एक पहाड़ी व्यक्ति खड़ा था। इसे देखते ही उसने प्रणाम किया। जब तक वह उस पहाड़ी से कोई प्रश्न करे, उसके पहले ही गुफा से संन्यासीजी खप्पर लेकर बाहर आये। पहाड़ी ने खप्पर में भोजन की सामग्री तथा कमण्डल में दूध उड़ेल दिया। चलते समय पुनः दोनों व्यक्तियों को प्रणाम किया।

संन्यासीजी के पीछे-पीछे पुनः गुफा के भीतर आकर वह चारों ओर अच्छी तरह से देखने लगा। गुफा के भीतर दूसरी ओर से काफी रोशनी आ रही है। बगल में एक कमरा है। इस कमरे के बाहर फूलों का बाग है। सामने कई देवी-देवताओं की मूर्तियाँ हैं। बगल में रसोई बनाने का सरंजाम है।

अभी वह चारों ओर देख ही रहा था कि तभी भीतर से संन्यासीजी आये और कहा—"सामनेवाली मूर्ति गुह्यकाली की है। उनकी बगल में शिवजी और उधर बदरीनाथजी की हैं। गुरुदेव ने मुझे बताया था कि एक दिन तुम यहाँ आओगे। तुम्हारे आने तक मुझे यहाँ रहना पड़ेगा। अब तुम आ गये हो। आगे से यह सब तुम्हारे जिम्मे रहेगा।"

भोजन के बाद वृद्ध ने कहा—"खाने-पीने की चिन्ता करने की जरूरत नहीं। यहाँ नित्य सुबह राजा की ओर से सीधा आता है। शाम के समय मिष्टान्न और फल एक व्यक्ति दे जाता है। यहाँ के राजा धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। साधुओं को राज्य की ओर से सीधा और दूध भेजा जाता है। यहाँ जो लोग साधना करते हैं, उनका ख्याल रखा जाता है। इस पहाड़ी पर इधर-उधर अनेक साधु-संत तपस्या कर रहे हैं। राजा के अलावा स्थानीय पहाड़ी भी आवश्यक सामग्री दे जाते हैं। गुरुदेव की आज्ञा है कि अब तुम यहाँ कुछ दिनों तक साधना करो। जब तक उनकी आज्ञा न हो तब तक कहीं मत जाना। अध्ययन के लिए अनेक पुस्तकें हैं। गुरुदेव और भगवान् की कृपा से यहाँ तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शाम को वही पहाड़ी युवक फल-मिष्टान्न आदि दे गया। सारी सामग्री लेकर वृद्ध स्वामी ने भगवान् को भोग लगाया। भोजन के पश्चात् दोनों सो गये। दूसरे दिन सोकर उठने पर ठाकुरदास ने देखा कि वह गुफा में अकेला है। कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद वह प्रातःक्रियादि करने चला गया।

लौटकर आने पर पहाड़ी युवक को सारी सामग्री लेकर खड़े रहते देखा। अब ठाकुरदास समझ गया कि वृद्ध संन्यासी यहाँ की सारी जिम्मेदारी मुझे सौंपकर चले गये।

× × ×

कुछ दिनों बाद एक दिन विचित्र घटना हुई। नियम के अनुसार पहाड़ी युवक से भोज्य पदार्थ लेने के लिए ठाकुरदास जब गुफा के बाहर आया तो देखा कि उसके सामने बाल्यसखा संन्यासीचरण खड़ा है। दोनों एक-दूसरे को हर्षमिश्रित आश्चर्य से देखने लगे। फिर दोनों आपस में गले मिलकर आँसू बहाने लगे।

ठाकुरदास ने पहाड़ी युवक से सीधा लेने के बाद संन्यासीचरण से कहा—"आओ, भीतर आओ। वहीं बैठकर बातें करेंगे।"

गुफा के भीतर दोनों आराम से बैठे। इसके बाद ठाकुरदास ने इन लोगों से बिछुड़ने से लेकर अब तक की सारी घटनाओं का उल्लेख किया।

संन्यासीचरण ने कहा—"तुम्हें किसीने आवाज दी, इसे मैंने सुना। उस समय चढ़ाई की थकान के कारण ख्याल नहीं किया। सोचा, हम लोगों में से किसीने पुकारा होगा। कुछ दूर आगे आने पर हम लोग विश्राम के लिए एक जगह बैठे तब देखा कि तुम गायब हो। कुछ देर इन्तजार करने के बाद तुम्हारी तलाश में पीछे की ओर लौटे। चारों ओर नाम ले-लेकर पुकारा गया, फिर भी कुछ पता नहीं चला। हम भयभीत हो उठे। आखिर ठाकुरभाई कहाँ गायब हो गये। हम लोगों के साथ चलनेवाले यात्री आगे बढ़ गये। इधर शाम का अँधेरा बढ़ता जा रहा था। आश्रय के लायक आसपास कोई स्थान नहीं था। एक पेड़ के नीचे आग जलाकर हम चारों बैठ गये। मैं रातभर रोता रहा। पुनः दूसरे दिन हम वहीं बैठे रहे ताकि कहीं रुक गये हो तो आने पर मुलाकात हो जाये। उसी दिन शाम को एक संन्यासी आये। हमारी मुसीबत सुनकर उन्होंने कहा—'आप लोगों ने अपने मित्र के बारे में जो कुछ कहा, उससे लगता है, वे महापुरुष हैं। जब वे तलाश करने पर नहीं मिले तब व्यर्थ में समय गँवाने से अच्छा है कि आप लोग आगे बढ़ जायें।' संन्यासी की बातों का प्रभाव हम सब पर पड़ा और हम लोग तीसरे दिन आगे चल पड़े। पहाड़ी जलवायु हम लोगों से सह्य नहीं हुई। पहले कालीचरण, फिर चिन्तामणि बीमार हुआ। इसके बाद हमारा अपरिचित साथी भी अस्वस्थ हो गया। इन तीनों की तीमारदारी करने में काफी दिन लग गये। बाद में मैंने दोनों मित्रों को घर वापस भेज दिया। लेकिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम्हारी याद बराबर बनी रही। आगे बढ़ने की अपेक्षा मैं भी वापस लौट आया। जहाँ से तुम गायब हुए थे, वहीं आकर एक कुटिया में रहने लगा। मुझे विश्वास हो गया था कि तुम यहीं कहीं पर होगे। जब कभी मुझे मौका मिलता तब तुम्हारी तलाश में इधर-उधर चक्कर काटा करता था। बरसात का मौसम होने के कारण यात्रियों का आवागमन कम हो गया। मैं अपनी कुटिया में बैठा जंगल का दृश्य देखा करता था। एकाएक एक दिन देखा कि एक पहाड़ी युवक नित्य एक पहाड़ी पर कुछ सामान लेकर जाता है और खाली हाथ वापस लौटता है। उत्सुकतावश आज मैंने उस युवक का पीछा किया और तुम मिल गये।"

ठाकुरदास ने कहा—"बरसात के कारण ही हम आपस में मिल सके, वर्ना मैं कुटिया से बाहर नहीं निकलता। भोजन करने के बाद अध्ययन या साधना करता हूँ। स्नान के लिए पीछे के रास्ते से जाता हूँ। अच्छा हुआ, जो तुम आ गये। अब यहीं रह जाओ। एक से दो भले।"

इस घटना के कुछ दिनों बाद एक दिन संन्यासीचरण ने देखा कि वह गुफा में अकेला है। उसने सोचा—शायद शौच के लिए गया होगा। इसके बाद वह स्वयं शौचादि के लिए चला गया। वापस लौटने पर देखा—एक अपरिचित बालक उसकी प्रतीक्षा में खड़ा है।

संन्यासीचरण ने पूछा—"कहो वत्स, क्या बात है ?"

बालक ने एक पत्र उसे दिया। उसमें लिखा था—"भाई संन्यासी, पूज्यपाद गुरुदेव के आदेश से मुझे तुरत रवाना होना पड़ा। तुम्हें बताकर नहीं आ सका। तुम्हारी इच्छा हो तो इस गुफा में अनिश्चित काल के लिए रह सकते हो। यदि न रहना चाहो तो इस बालक को पूजादि की जिम्मेदारी सौंपकर जा सकते हो। अब गुरुदेव का आदेश मिलने पर ही मुलाकात संभव होगी। तुम्हारा, ठाकुरदास।

संन्यासीचरण ने आगन्तुक बालक से कई प्रश्न किये, पर वह संतोषजनक उत्तर नहीं दे सका। उसने कहा—"मैं पंजाब में रहता था। कल ही यहाँ आया हूँ और मुझे यह पत्र देकर यहाँ भेजा गया है।"

लड़के की बातों से स्पष्ट पंजाबी लहजा प्रकट हो रहा था। संन्यासीचरण ने पूछा—"क्या तुम अकेले इस गुफा में रह सकते हो ?"

"क्यों नहीं रह सकूंगा ? गुरुदेव का आदेश तो मुझे मानना ही पड़ेगा। गुरुदेव जब दूसरा आदेश देंगे तब उसका पालन करूँगा।"

लड़के का साहस देखकर संन्यासीचरण चकित रह गया। ठाकुरदास के अभाव के कारण उसकी यहाँ रहने की इच्छा नहीं हुई। बालक को सारी जिम्मेदारी देकर वह तीर्थ-भ्रमण करने निकल गया।

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विभिन्न स्थानों की यात्रा करने के वाद संन्यासीचरण अपनी जन्मभूमि वापस आया। यहाँ वहन तथा वहनोई उसकी सारी जायदाद हड़प चुके थे। अपनी पत्नी को लेकर वह पुनः देशाटन करने निकल गया।

सहसा गंगासागर के मेले में एक अपरिचित संन्यासी सामने आकर खड़ा हो गया और कहा—"आपका नाम शायद संन्यासीचरण है। ठाकुरदास की तलाश यहाँ कर रहे हो? आजकल वह अमरकंटक में है। अभी नहीं, अभी दो वर्ष वाद वह तुमसे काशी में मिलेगा। चिन्ता करने की जरूरत नहीं।"

इस संन्यासी की भविष्यवाणी से संन्यासीचरण ने श्रद्धा से गद्गद होकर उन्हें प्रणाम किया। सिर उठाते ही देखा—वे न जाने कहाँ गायव हो गये। चारों ओर देखने पर भी दिखाई नहीं पड़े।

लगातार दो वर्ष भ्रमण करते हुए संन्यासीचरण सपरिवार काशी आया। नित्य गंगा-स्नान और मंदिर-दर्शन करता था। एक दिन चौसट्टी देवी के मंदिर से कुछ दूर आगे उसे लगा जैसे उसका नाम लेकर कोई बुला रहा हो। पीछे मुड़कर देखा। एक गेरुआ वस्त्रधारी संन्यासी पास आ रहा था।

पास आने पर संन्यासीचरण को पहचानने में देर नहीं लगी। वह वालसखा ठाकुरदास था। हाथ में कमण्डल, भाल पर भस्म, श्मश्रु-आनन। आज गले से लगने के वदले उसने ठाकुरदास के चरण-स्पर्श किये।

वातचीत के सिलसिले में ठाकुरदास ने कहा—"गंगासागर के मेले में तुम्हारी मुलाकात जिस संन्यासी से हुई थी, वे मेरे गुरुभाई स्वामी अघोरानन्द थे जिन्होंने तुमसे यह कहा था कि दो वर्ष वाद मैं काशी में तुमसे मिलूँगा। आज मुलाकात हो गयी।"

ठाकुरदास के साथ अन्य कई संन्यासी थे। गली में भीड़ थी। साथी संन्यासियों में से किसीने कहा—"स्वामीजी, हम आगे वढ़ें?"

ठाकुरदास ने कहा—"हाँ, आप लोग मठ में चलिये। मैं थोड़ी देर वाद आऊँगा।"

स्वामियों के जाने के वाद ठाकुरदास ने कहा—"चलो, तुम्हारे डेरे पर वातें होंगी। वीच वाजार में वातें करना उचित नहीं है।"

संन्यासीचरण के डेरे पर आने के वाद दोनों में वातें होने लगीं। संन्यासीचरण की सारी रामकहानी सुनने के वाद ठाकुरदास ने कहा—"अच्छा ही हुआ जो तुमने गाँव छोड़ दिया। मैं तो यहाँ गुरुदेव की आज्ञा से आया हूँ। शीघ्र ही यहाँ से चल दूँगा। स्वामी अघोरानन्द को तुमने पहचाना नहीं होगा। हरिद्वार में पहाड़ के ऊपर से मुझे बुलानेवाले वही थे। तुम लोग जव हरिद्वार के आगे किसी वृक्ष के नीचे आग जलाकर बैठे रहे तव दूसरे दिन जिस संन्यासी ने तुम लोगों को आगे वढ़ने का निर्देश दिया था, वे भी स्वामी अघोरानन्द ही थे। जिस वालक को गुफा की जिम्मेदारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सौंपकर तुम चले गये, उसका नाम सच्चिदानन्द है। आजकल वह गिरनार पर साधना कर रहा है।"

थोड़ी देर चुप रहने के बाद ठाकुरदास ने कहा—"गुरुदेव के आज्ञानुसार मैंने संन्यास-ग्रहण कर लिया है। अब मैं पूर्ववर्ती नाम त्यागकर सदानन्द सरस्वती बन गया हूँ। यों मेरे भक्त और शिष्य मुझे ठाकुर सदानन्द के नाम संबोधन करते हैं। तुमसे कुछ गुप्त बातें कहनी हैं। उसे यहाँ नहीं कह सकता। नगर के पश्चिमी क्षेत्र में बटुकभैरव तथा बैजनाथ मंदिर के मध्य में कामाख्या देवी का मंदिर है। कल रात को वहीं मिलना।"

इतना कहकर सदानन्दजी चले गये। दूसरे दिन रात के वक्त संन्यासीचरण कामाख्या देवी के मंदिर में जाकर उनकी प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी देर बाद वे आये और उसे साथ लेकर बैजनत्था मंदिर के पीछे चले गये।

वहाँ से वापस आते समय सदानन्द सरस्वती ने राह चलते कहा—"मैंने जितनी क्रियाएँ बतायीं, उनका अभ्यास करते रहना। इससे साधना के मार्ग पर बढ़ते जाओगे। साधक के लिए यही चरम लक्ष्य होता है।"

संन्यासीचरण को अन्य और उपदेश देकर सदानन्दजी ने काशी छोड़ दी। इसके बाद वे कहाँ गये, इसका पता संन्यासीचरण को नहीं लगा।

× × ×

सदानन्दजी अपने गुरुदेव के आज्ञानुसार भारत के तमाम महत्त्वपूर्ण स्थानों में भ्रमण करते हुए पुनः अमरकंटक आये। जिस वक्त वे घने जंगलों से गुजर रहे थे, उसी समय उन्होंने देखा कि मार्ग में एक व्यक्ति असहाय अवस्था में पड़ा कराह रहा है। आसपास कोई नहीं था।

संत-स्वभाववश वे उसकी सेवा करने लगे। उनके स्पर्श से उसे आराम मिला और वह गहरी नींद में सो गया। यह देखकर स्वामीजी प्रातःक्रिया से निवृत्त होकर भोजन बनाने लगे। भोजन के बाद थोड़ा-सा प्रसाद उस व्यक्ति के लिए उन्होंने छोड़ दिया।

अब तक वह व्यक्ति होश में आ गया था। स्वामीजी का प्रसाद ग्रहण करते ही उसकी सारी कमजोरी दूर हो गयी। यह देखकर स्वामीजी ने पूछा—"इस जंगल में तुम कैसे आ गये?"

उस व्यक्ति ने कहा—"मैं अपने लोगों के साथ तीर्थयात्रा करने निकला था। अचानक अस्वस्थ हो गया। मुझे इस हालत में छोड़कर लोग चले गये।"

स्वामीजी ने कहा—"तुम्हारे सभी साथी आगे बढ़ गये हैं। अब तुम जीवन में कभी बीमार नहीं होगे। तेज चाल से चलकर अपने साथियों को पकड़ लो।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उस व्यक्ति ने कहा—"स्वामीजी, आपके कारण मुझे जीवन-दान मिला है, अब मुझे दूर न भगाइये। मैं इन चरणों की सेवा करता रहूँगा।"

स्वामीजी ने कहा—"मुझे किसीकी सेवा की जरूरत नहीं है। अपनी सेवा तुम स्वयं करो। मैं ठहरा रमता योगी। आज यहाँ, कल वहाँ।"

इतना सुनने के बाद उस व्यक्ति ने स्वामीजी के चरण पकड़ लिए और रोने लगा। उसका आग्रह देखकर लाचारी में स्वामीजी ने कहा—"ठीक है। कुछ दिन मेरे साथ रह सकते हो। क्या नाम है तुम्हारा?"

"हरिचरण।"

स्वामीजी अपने साथ हरिचरण को लेकर विभिन्न स्थानों का दर्शन करते हुए रोयलेश्वर[1] तीर्थ आये। यहाँ पहाड़ के ऊपर एक शिव-मंदिर है। यहाँ कुछ दिन विश्राम करने के बाद जंगल में प्रवेश कर गये। हरिचरण ने देखा—चारों ओर हिंसक जानवर घूम रहे थे। स्वामीजी लगातार दो दिन तक बिना अन्न-जल ग्रहण किये बराबर चलते जा रहे हैं। इधर हरिचरण भूख से व्याकुल हो उठा था। संकोचवश वह स्वामीजी से कुछ कह नहीं पा रहा था, क्योंकि वे भी भूखे थे। इस जंगल में एक भी फल का वृक्ष दिखाई नहीं दे रहा था।

दोपहर के वक्त स्वामीजी ने कहा—"तुम्हारे कष्ट का अनुभव मुझे हो रहा है। मैं यहाँ विश्राम कर रहा हूँ। तुम यहाँ आगे जाकर बायीं ओर चले जाओ और देखो कि वहाँ कोई जलाशय है या नहीं।"

हरिचरण आज्ञा पाकर रवाना हुआ और थोड़ी देर बाद तेजी से दौड़ता हुआ वापस आ गया। सारी घटना सुनने के बाद उन्होंने कहा—"जब मैंने कहा कि बायीं ओर जाना तब दायीं ओर क्यों गये?"

स्वामीजी इतना कह पाये थे कि लंगूरों का एक झुंड सामने आकर बैठ गया। हरिचरण ने कहा—"यही सब मुझे··· ··· ···।"

वह अपनी बात पूरी नहीं कर सका। भय से हकलाने लगा। स्वामीजी ने कहा—"डरो मत।"

इसके बाद उन्होंने लंगूरों की ओर देखते हुए कहा—"लड़का गलती से उधर चला गया था। इसे पानी लाने के लिए भेजा था।" फिर हरिचरण की ओर देखते हुए स्वामीजी ने कहा—"अब बायीं ओर जाओ। तुम गलत रास्ते पर चले गये थे। बायीं ओर तालाब है, वहीं से पानी ले आओ। इनसे डरने की जरूरत नहीं। ये सब रामजी के भक्त हैं।"

---

१. पंजाब स्थित प्रसिद्ध तीर्थस्थान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरिचरण डरते-डरते आगे बढ़ा। रह-रहकर पीछे देख लेता था। लेकिन उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि अब लंगूर उसका पीछा नहीं कर रहे हैं। पानी लाने के बाद उसनें स्वामीजी को यह कहते सुना—"मेरे साथ आया वालक दो दिन से कुछ खाया नहीं। इसके खाने लायक फल ले आओ।"

आश्चर्य पर आश्चर्य हो रहा था। स्वामीजी लंगूरों से अपनी भाषा में वात कर रहे थे और इधर लंगूर उनकी आज्ञा का पालन कर रहे थे। थोड़ी देर वाद दो लंगूर कोहँड़े जैसा एक फल लाये। स्वामीजी ने उस कोहँड़े को पैंतीस टुकड़ों में काटकर उसे आग पर सेंकने लगे। इसके वाद एक-एक टुकड़ा प्रत्येक लंगूर को खिलाने लगे। लंगूर विना किसी प्रकार की हुज्जत किये अपना-अपना हिस्सा खाते रहे। अंत में दो टुकड़े शेष रहे। उनमें से एक टुकड़ा और दूसरे से कुछ और भाग स्वामीजी ने खाया।

इधर हरिचरण मन ही मन कुढ़ रहा था। इस वक्त तो उसे इतनी भूख सता रही थी कि वह पूरे फल को खा जाता। एक टुकड़े से कम में क्या होगा। लेकिन दो कौर खाते ही उसका पेट भर गया। भूख की सारी ज्वाला समाप्त हो गयी। फल नहीं, मानो अमृत था।

अपने अपराध को स्वीकार करते हुए हरिचरण ने स्वामीजी के चरण पकड़ लिये। स्वामीजी ने कहा—"तुम्हारा क्रोध अकारण नहीं था। भूख की ज्वाला ऐसी ही होती है। इस फल के गुण तुम्हें नहीं मालूम हैं। यह एक अजीव प्रकार का फल है जो इस जंगल में होता है और इसे थोड़ा सेंककर खाना चाहिए। इस फल के वारे में यहाँ के लंगूरों को ही जानकारी है। जब कोई संन्यासी इस मार्ग से गुजरता है तव यहाँ के लंगूर उनकी भूख इसी फल के जरिये मिटा देते हैं। भले हीं ये जानवर हैं, पर इनमें बुद्धि है।"

कुछ देर विश्राम करने के वाद पुनः दोनों व्यक्ति रवाना हुए। आगे-आगे लंगूरों का दल मार्ग दिखाता हुआ चल रहा था। जंगल के वाहर आने पर स्वामीजी ने लंगूरों से कहा—"अव तुम लोग वापस चले जाओ। फिर कभी आऊँगा तव मुलाकात होगी।"

इतना सुनते ही लंगूरों का दल वापस चला गया। हरिचरण के लिए यह आश्चर्यजनक घटना थी। स्वामीजी की वातें लंगूरों ने कैसे समझ लीं?

इस बार स्वामीजी हरिचरण को साथ लेकर जूनागढ़ स्थित गिरनार पर्वत पर आये। चोटी पर चढ़ने के वाद उन्होंने कहा—"सच्चिदानन्द, कहाँ हो?"

इस आवाज को सुनते ही सच्चिदानन्द के वदले एक वाघ आया। उसे देखते ही हरिचरण की हालत खराव हो गयी। स्वामीजी निर्भय होकर उसके सिर पर हाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फेरने लगे। तभी सामने की गुफा से एक युवक साधु बाहर आया और स्वामीजी के चरण-स्पर्श किये।

कुशल-मंगल के पश्चात् सभी गुफा के भीतर आये। ज्ञातव्य है कि हिमालय की तरह यहाँ भी अनेक संत साधना करते हैं, पर सामान्य लोग उन संतों को देख नहीं पाते। सदानन्द स्वामी के आगमन को सुनकर अनेक संत उनका दर्शन करने आये। उन लोगों के आग्रह पर सदानन्दजी वहाँ ठहर गये। इनमें से कोई वेदान्त पढ़ने लगा और कोई योग के वारे में ज्ञान प्राप्त करने लगा।

कुछ दिनों के वाद स्वामी सदानन्द ने हरिचरण से कहा—"अब तुम अपने घर वापस चले जाओ। मुझे यहाँ न जाने कब तक ठहरना पड़ेगा। तुम्हारे लिए यह सौभाग्य की बात है कि इस पर्वत पर रहनेवाले संतों का दर्शन कर सके। घर जाकर भजन करो, इससे तुम्हारा कल्याण होगा।"

हरिचरण साथ रहने के लिए आग्रह करने लगा। स्वामीजी ने कहा—"नहीं। अब तुम्हें वापस जाना ही होगा। मैं यहाँ कुछ लोगों को क्रिया योग की शिक्षा दूँगा और स्वयं कुछ क्रियाएँ करूँगा जो तुम्हारे रहते संभव नहीं होगा। एक वात और, मैंने तुमसे कहा था कि वापस जाकर मेरी लड़कियों से मुलाकात कर मेरा समाचार देना। उनसे यह भी कहना कि वे मेरा श्राद्ध न करें, मैं कृत श्राद्ध पिण्ड हूँ। यह मेरा आदेश है।"

हरिचरण इस आज्ञा के विपरीत कुछ कहने का साहस नहीं कर सका। स्वामीजी वहाँ दो वर्ष रहने के वाद काशी चले आये।

काशी में उन दिनों कामाख्या मंदिर के पास राधाश्रम नामक एक वृहद् बाग था। उसी वाग में एक वृक्ष के नीचे वे ध्यानमग्न होकर बैठे रहते थे। प्रायः कुछ संन्यासी वहाँ शास्त्रार्थ करने आ जाते थे। नगर में एक सिद्ध महात्मा आये जानकर अक्सर दर्शनार्थी भी आ जाते थे। स्वामीजी के निकट स्वामी घरघरानन्द, काष्ठजिह्वा स्वामी, तैलंग स्वामी, झोला वावा आदि महात्मा भी आते थे। सदानन्द स्वामी भी उनके आश्रम में यदाकदा जाते थे।

एक दिन एक सेठ स्वामी सदानन्द का दर्शन करने आया। व्यापार में काफी घाटा होने के कारण उसका हृदय अशान्त था। स्वामीजी उसकी मनःस्थिति भाँप गये। वोले—"जाओ, घर जाकर शुद्ध चित्त से भगवत्-भजन करो। तुम्हारा कल्याण होगा।"

स्वामीजी के आज्ञानुसार वह भजन करने लगा और उसे सफलता मिली। उसने अनुभव किया कि यह सव स्वामीजी के आशीर्वाद के कारण हुआ है। उनकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृपा से उऋण होने तथा कृतज्ञता-ज्ञापन के लिए एक दिन वह अपने साथ चाँदी का एक कमंडल, नये वस्त्र और फल लेकर स्वामीजी की सेवा में आया।

स्वामी सदानन्द ने यह सब सामग्री लेने से इनकार कर दिया। जब वह अत्यधिक आग्रह करने लगा तब उन्होंने कहा—"आज इन चीजों को लेकर वापस जाओ। रातभर विचार करना और कल जैसी इच्छा हो करना।"

दूसरे दिन वह जब आया तो देखा—स्वामीजी वहाँ नहीं थे। उसने उनकी तलाश में आसपास चक्कर काटे, पर वे नहीं मिले।

इधर स्वामीजी दर्शनार्थियों की भीड़ से तंग आ चुके थे। संकटमोचन के पश्चिमी भाग में एक स्थान पर आकर रहने लगे। सुबह-शाम मलत्याग के लिए कुछ संन्यासी यहाँ आते थे। सामान्य नागरिक सुनसान स्थान होने के कारण नहीं जाते थे। यहाँ आनेवाले संन्यासियों में से कुछ लोगों ने आपको पहचान लिया और वे आग्रह करने लगे कि इस स्थान को त्यागकर उनके साथ रहें, पर स्वामी सदानन्द को यह स्वीकार नहीं हुआ। उन्होंने इशारे से आग्रह किया कि मेरे बारे में किसीको कुछ न बताया जाय।

इधर स्वामीजी से उपकृत होनेवाले सेठ महाशय सरगर्मी से सदानन्दजी की तलाश करता रहा। आखिर उसे पता चल गया। उसने आकर क्षमा माँगी। इधर स्वामीजी ने मौनव्रत धारण कर रखा था। सेठ ने स्वामीजी के लिए वहीं एक गुफा बनवा दी। सदानन्दजी उसी गुफा के भीतर जाकर समाधि लगाने लगे। केवल सुबह-शाम बाहर आते थे तब लोगों को उनका दर्शन प्राप्त होता था।

धीरे-धीरे यहाँ भी अनेक भक्त जुटने लगे। इससे साधना में व्यतिक्रम होने लगा। आखिर एक दिन लोगों को मालूम हुआ कि स्वामीजी इस स्थान को त्याग चुके हैं। कहाँ गये, कब गये, इसका पता किसीको नहीं चला।

स्वामी अघोरानन्द के शिष्य स्वामी रामानन्द के बयान से पता चलता है कि उन्होंने सदानन्दजी को कैलास पर्वत पर देखा था। उस समय वे काफी वृद्ध हो गये थे, पर उनमें शक्ति की कमी नहीं थी। कहा जाता है कि एक बार गंगोत्री में रामानन्द ने देखा कि एक वृद्ध संन्यासी गंगा-स्तव पाठ करते हुए जा रहे हैं। गंगा में स्नान करने के बाद वे पहाड़ पर चढ़ने लगे। कौतूहलवश रामानन्दजी उनके पीछे-पीछे चलने लगे। लेकिन उनकी तरह चलना रामानन्दजी के लिए संभव नहीं हो रहा था।

कुछ दूर आगे बढ़ने पर वृद्ध संन्यासी ने पीछे की ओर देखा। रामानन्दजी को अपने पीछे आते देख उन्होंने हाथ के इशारे से वापस चले जाने की आज्ञा दी।

रामानन्दजी ने हाथ जोड़ते हुए कहा—"भगवन्, मैं कुछ दिनों तक आपकी सेवा करना चाहता हूँ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृद्ध संन्यासी न जाने क्या सोचते रहे तब तक रामानन्दजी उनके समीप पहुँच गये। अपने भीगे वस्त्र से उनकी आँखों पर पट्टी बाँध दी। इसके बाद रामानन्दजी के हाथ को पकड़कर आगे चलने लगे। रामानन्दजी को लगा जैसे वे चल नहीं रहे हैं, बल्कि उड़ रहे हैं।

आँखों पर से पट्टी हटाने पर रामानन्दजी ने देखा—सामने एक बड़ी गुफा है। चारों ओर बरफ ही बरफ है। पेड़, पौधे, पशु-पक्षी के नामोनिशान नहीं हैं। बाहर तूफानी हवा चल रही है। एकाएक वृद्ध संन्यासी न जाने कहाँ गायब हो गये।

वहीं खड़े-खड़े रामानन्दजी ने अनुभव किया कि पास कहीं शंख, घंटा, घड़ियाल, नगाड़ा बज रहा है। वह स्थान यहाँ से कितनी दूर है, इसका अन्दाजा नहीं लगा। एकाएक हवा में सुगंध आने लगी। कुछ देर बाद पूर्वपरिचित वृद्ध संन्यासी आये। उन्होंने पास आकर कहा—"पूर्वजन्म की तपस्या के कारण तुम यहाँ तक आ सके हो। इस जन्म में अभी तुम्हारी साधना इतनी नहीं हुई है कि यहाँ के सभी दृश्य देख सको। लो, प्रसाद खाओ। अब महात्माओं के पास दर्शन करने चलेंगे।"

प्रसाद खाते हुए रामानन्द ने पूछा—"महाराज, इस स्थान का क्या नाम है?"

वृद्ध संन्यासी ने कोई उत्तर नहीं दिया। दोनों कुछ दूर तक एक मंदिर के समीप आये। वहाँ अनेक महात्मा अपने-अपने आसन पर बैठे हुए थे। रामानन्द को देखते ही एक महात्मा ने कहा—"यह बटुक तो अघोरानन्द का शिष्य है।"

अपने गुरु का नाम सुनते ही रामानन्दजी चकित दृष्टि से देखने लगे। उन्होंने बैठे हुए सभी महात्माओं के चरण-स्पर्श किये।

एक अन्य महात्मा ने कहा—"रामानन्द, अपने गुरुदेव से हमारा नमो नारायण कहना। उनसे कहना कि यहाँ सदानन्द कुशलपूर्वक है। अब वे यहाँ से कहीं नहीं जायेंगे। तुमने सिद्धबाबा से पूछा था कि इस स्थान का क्या नाम है, उन्होंने जवाब नहीं दिया। इस स्थान का नाम है—कैलासपुरी। अपने सौभाग्य के कारण तुम सिद्धबाबा के साथ चले आये, अन्यथा हमें देख नहीं पाते।"

एकाएक वहाँ भैरवी माता आयीं और बोलीं—"आरती का समय हो गया है, महात्मागण। कृपया आप लोग पधारें।"

स्वामी सदानन्द ने रामानन्द से कहा—"हम लोग अब जा रहे हैं। तुम हमारे साथ नहीं जा सकते। अब अपने गुरु के बताये उपदेशों के अनुसार साधना करते रहो। इससे तुम्हारा जीवन उन्नत होगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भैरवी माता ने उन्हें एक फल देते हुए कहा—"इस फल को हमेशा अपने पास रखना। इससे साधना में सिद्धि प्राप्त होगी। अब इन महात्माओं को प्रणाम कर आशीर्वाद लो।"

भैरवी माता के आज्ञानुसार रामानन्द ने सभी के चरण-स्पर्श किये। एकाएक न जाने क्या हुआ कि झटका-सा लगा। आँखें खोलने पर रामानन्दजी ने देखा कि गंगोत्री की धर्मशाला में सोये हुए हैं। उन्होंने सोचा—क्या मैं अब तक स्वप्न देख रहा? उन्हें याद आया कि वे स्वयं गंगा-स्नान करने गये थे। एकाएक पीछे की ओर देखा तो भैरवी माता द्वारा प्रदत्त फल और उनके भीगे वस्त्र सिरहाने रखे हुए हैं। आखिर मैं यहाँ कैसे आ गया? इस प्रश्न का उत्तर देनेवाला वहाँ कोई नहीं था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पवहारी बाबा

परमहंस रामकृष्ण के तिरोधान के पश्चात् स्वामी विवेकानन्द का मन बहुत अशान्त हो गया था। अपने जीवन काल में रामकृष्णदेव बराबर उनका मार्ग-दर्शन करते थे। अब वह सहारा नहीं रहा। फलतः जब स्वामीजी का मन उखड़ता तब वे आश्रम से कहीं चले जाते थे। चलते समय गुरुभाइयों से कहते—"अब आश्रम में वापस नहीं आऊँगा। यही आखिरी है।" लेकिन उनका यह निश्चय खंडित हो जाता था। कुछ दिन इधर-उधर बिताकर पुनः वापस आ जाते थे।

सन् १८८८ ई० के दिनों उन्होंने निश्चय किया कि बेकार इधर-उधर समय नष्ट करने की अपेक्षा तीर्थाटन करूँ। तीर्थाटन के बारे में उन्होंने लिखा है—"भारत में जो लोग ब्रह्मचर्य अवलम्बन कर धार्मिक जीवन व्यतीत करते हैं, वे लोग आमतौर पर भारत के विभिन्न प्रदेशों में घूमते हुए विभिन्न तीर्थों का दर्शन करते हैं। देव-मंदिरों का दर्शन करते हुए अपना समय व्यतीत करते हैं। जिस प्रकार किसी वस्तु को बराबर हिलाते-डुलाते रहने पर उसमें जंग नहीं लगता, उनका कहना है कि इस प्रकार भ्रमण करने पर उनमें मलिनता प्रवेश नहीं करती। इससे एक और उपकार होता है, वे लोग द्वार-द्वार पर धर्म वहन कर ले जाते हैं। जो लोग गृहस्थी त्याग चुके हैं, उनके लिए यह आवश्यक है कि भारत के चारों तीर्थों का दर्शन करें।"

स्वामी विवेकानन्द ने अपने इस कथन को चरितार्थ किया था। विभिन्न तीर्थों का दर्शन करते हुए वे सन् १८९० ई० में गाजीपुर आये। यहाँ अफीम-विभाग के अफसर गगन तथा बचपन के मित्र सतीश बाबू के यहाँ ठहरे। गाजीपुर के लोग रामकृष्णदेव के मानस-पुत्र स्वामी विवेकानन्द को पाकर खुशी से फूले नहीं समाये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बातचीत के सिलसिले में स्वामी विवेकानन्द ने कहा—"यहाँ पवहारी बा नामक एक योगी पुरुष रहते हैं। मैं उनका दर्शन करने के लिए आया हूँ। अगर आ लोग प्रबंध कर दें तो कृपा होगी। मैं इसी उद्देश्य से यहाँ आया हूँ।"

गगन बाबू ने कहा—"पवहारी बाबा नगर में नहीं रहते। वे यहाँ से कुछ कुर्त्ता गाँव में रहते हैं। वहाँ जमीन में एक गुफा बनाकर उसीमें निवास करते हैं। पहले जब आश्रम में रहते थे तब उनका दर्शन हो जाता था। अब गुफा में रहने कारण उनका दर्शन कठिन हो गया है।"

गगन बाबू के साथ स्वामीजी कुर्त्ता गाँव स्थित पवहारी बाबा के आश्रम आये तो देखा कि वास्तव में गगन बाबू का कथन ठीक है। स्थानीय भक्तों से ज्ञा हुआ कि बाबा हमेशा गुफा के भीतर रहते हैं। कब बाहर निकलेंगे, कहा नहीं जा सकता स्वामीजी ने सोचा कि नगर में रहते हुए बाबा से सत्संग नहीं किया जा सकता यहीं कहीं रहना होगा। उपयुक्त स्थान की तलाश में चारों ओर घूम-फिरकर देख लगे। पास ही नीबू का एक बड़ा बाग था। स्वामीजी ने मन ही मन निश्चय कि कि वे यहीं आकर रहेंगे। यहाँ रहने पर बाबा से मुलाकात कभी न कभी अवश्य होगी।

इस निश्चय के बाद स्वामीजी नीबू के बाग में आकर रहने लगे। कई दिनों प्रयत्न के बाद स्वामीजी की मुलाकात पवहारी बाबा से हुई। वह भी साक्षात्-दर्श नहीं हुआ। स्वामीजी को गुफा के भीतर जाने का आदेश नहीं मिला। मुहाने के पा खड़े होकर बातचीत करते रहे। लगातार कई दिनों तक उपदेश ग्रहण करने के बा स्वामीजी को अपार ज्ञान मिला। इस सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है—

"ज्ञान ही विस्मय-राज्य के द्वार को खोल देता है। जो ज्ञान हमें उस वस्तु निकट ले जाता है, जिसे जान लेने पर सभी को जाना जा सकता है (मुंडकोपनिष १।१।३), जो सभी प्रकार के ज्ञान का केन्द्र है, जिसके स्पन्दन से सभी प्रकार के विज्ञा जीवन्त हो उठते हैं, वही धर्म-विज्ञान निश्चय ही श्रेष्ठ है, क्योंकि वही केवल मनुष्य संपूर्ण ध्यानमय जीवन को समर्थ बनाता है। धन्य है वह देश, जो देश इसे पराविद्य कहता है।"

लगातार कई दिनों के उपदेशों के बाद एक दिन पवहारी बाबा ने कहा—"ज साधन, तन सिद्धि। गुरु के घर में हमेशा गौ की तरह पड़े रहो।"

ज्यों-ज्यों सत्संग का क्रम बढ़ने लगा त्यों-त्यों स्वामी विवेकानन्द का आकर्ष उनके प्रति बढ़ने लगा। उन्हें समझते देर नहीं लगी कि पवहारी बाबा उच्चकोटि योगी पुरुष हैं। हठयोग और राजयोग दोनों को सिद्ध कर चुके हैं। स्थानीय लोग इन्हें ठीक से समझ नहीं सके हैं। सम्भव है, बाबा ने अपनी शक्ति को कभी प्रकट नहीं किय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। अन्त में एक दिन उन्होंने निश्चय किया कि योग-मार्ग-सिद्धि प्राप्त करने के लिए वे पवहारी बाबा से दीक्षा लेंगे।

एक दिन उन्होंने पवहारी बाबा से निवेदन किया। बाबा त्रिकालदर्शी थे। उन्हें यह ज्ञात था कि किसी भी व्यक्ति को निर्दिष्ट व्यक्ति ही दीक्षा देता है, दूसरे किसीका अधिकार नहीं होता। उन्होंने कहा—"पहले तुम अपने पूर्व गुरु से अनुमति प्राप्त कर लो।"

स्वामीजी ने सोचा कि पवहारी बाबा मुझे योग की शिक्षा देना नहीं चाहते। शायद इसीलिए टालना चाहते हैं। प्रत्युत्तर में उन्होंने कहा—"मेरा विश्वास है कि मुझे अनुमति मिल जायेगी। आप अपनी स्वीकृति देने की कृपा करें।"

पवहारी बाबा संभवतः मुस्कराये। उन्होंने 'एवमस्तु' कहकर विवेकानन्द स्वामी को विदा दी। स्वामीजी प्रसन्न चित्त से नीबू-बाग में वापस आये। रात को सोने के पूर्व स्वामीजी ने देखा—सहसा घनघोर अंधकार में प्रकाश उद्भासित हुआ और उस प्रकाश में स्वयं भगवान् रामकृष्ण प्रकट हुए। उनकी दोनों आँखें बन्द थीं। आँखों में आँसू थे।

स्नेहसिक्त इस मूर्त्ति को देखते ही स्वामीजी व्याकुल स्वर में कह उठे—"नहीं, नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा। रामकृष्ण के अलावा इस हृदय पर और किसीका अधिकार कदापि नहीं होगा। जय रामकृष्ण, जय रामकृष्ण।"

लेकिन मन की शंका दूर नहीं हुई। दीक्षा लेने के एक दिन पूर्व उन्होंने निश्चय किया—यह मेरे मन का भ्रम था। इस प्रकार के योगी इस पृथ्वी पर कभी-कभी आते हैं। मुझे पवहारी बाबा से ज्ञान ले लेना चाहिए।

इस निश्चय के बाद वे अपने हृदय पर रामकृष्ण के स्थान पर पवहारी बाबा को स्थापित करने लगे। लेकिन इस कार्य में उन्हें सफलता नहीं मिली। उस ज्योतिर्मय पुरुष ने स्वामीजी के प्रयासों को विफल कर दिया। स्वामीजी समझ गये कि मेरा तन-मन उन पावन चरणों में सदा के लिए अर्पित हो चुका है जहाँ अन्य किसीके लिए कोई स्थान नहीं है।

स्वामीजी को मुकरते देख पवहारी बाबा सम्भवतः मन ही मन मुस्कराये। इसके बाद ज्ञान की बातें चलने लगीं। अब तक स्वामीजी का मन शान्त हो चुका था। शायद इसीलिए उन्होंने लिखा—"हम लोगों में अधिकतर भावमय जीवन के साथ कर्म का सामंजस्य नहीं रख पाते। कुछ महात्मागण ऐसा कर पाते हैं। हम लोगों में शायद अधिकतर गंभीर रूप में चिन्तन करने पर कार्यशक्ति को खो देते हैं। इसी वजह से अनेक महामनस्वी जितने उच्च आदर्शों को अपने जीवन में प्राप्त करते हैं, उसे जगत् में, कार्यरूप में परिणत करने की जिम्मेदारी काल के हाथ सौंप जाते हैं। जब तक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपेक्षाकृत क्रियाशील मस्तिष्क आकर उन आदर्शों को कार्यरूप में परिणत नहीं कर लेता तब तक उनकी चिन्ताराशि को इसके लिए प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। लेकिन इन बातों को लिखते समय हम अपने दिव्यचक्षु से उक्त पार्थसारथी को देख रहे हैं—मानो वे दोनों विरोधी सैन्यदल के बीच रथ पर खड़े होकर बायें हाथ से दृप्त अश्व को संयत कर रहे हैं। वर्मधारण योद्धा वेष में, प्रखर दृष्टिरत से समवेत सेनाओं का निरीक्षण कर रहे हैं और स्वाभाविक ज्ञान के द्वारा दोनों पक्षों की सैन्य-सज्जा की राई-रत्ती को देख रहे हैं। दूसरी ओर हम यह भी देख रहे हैं कि भयभीत अर्जुन को चौंकाकर वे अपने श्रीमुख से कर्म के अद्‌भुत रहस्यों को प्रकट कर रहे हैं। जो कर्म के भीतर अकर्म अर्थात् विश्राम या शान्ति तथा अकर्म अर्थात् विश्राम के भीतर कर्म को देखते हैं, मानवों में वे ही बुद्धिमान् हैं, वे ही योगी हैं, वे ही सभी प्रकार के कर्म करते हैं—

> **कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः।**
> **स बुद्धिमान् मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत्** ॥ (गीता ४।१८)

यही पूर्ण आदर्श है। लेकिन इस आदर्श तक बहुत कम लोग पहुँच पाते हैं अतएव जैसा है, हमें वैसा ही लेना होगा तथा विभिन्न व्यक्तियों में प्रकाशित विभिन्न चरित्र के वैशिष्ट्यों को एक में पिरोकर संतोष करना पड़ेगा। धार्मिक लोगों के भीतर हम ,तीव्र चिन्ताशील (ज्ञानयोगी), लोकहित के लिए प्रबल कर्मानुष्ठानकारी (कर्मयोगी), साहस के साथ आत्मसाक्षात्कार के लिए अग्रसर होनेवाले (राजयोगी) तथा शान्त एवं विनयी (भक्तियोगी), इन चार प्रकारों के साधकों को देखते हैं।"

उपर्युक्त विचार स्वामीजी ने अपने परमगुरु रामकृष्ण और पवहारी बाबा का तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद विचार व्यक्त किया है। लगातार पाँच-छः दिनों तक वे पवहारी बाबा से योग-शिक्षा ग्रहण के लिए गये, पर अन्त में विचार छोड़ दिया। लेकिन पवहारी बाबा के उपदेशों का उन पर व्यापक प्रभाव पड़ा था। फलस्वरूप उन्हें पवहारी बाबा के बारे में अपना संस्मरण लिखना पड़ा।

यहाँ तक कि यहाँ से मित्रों के नाम पत्र भेजते हुए उन्होंने एक पत्र में लिखा—"बड़े भाग्य से पवहारी बाबा से साक्षात्कार हुआ। वास्तव में वे एक महापुरुष हैं। इस नास्तिकता के युग में भक्ति एवं योग की आश्चर्यजनक क्षमता के वे अद्‌भुत प्रतीक हैं। मैं उनकी शरण में गया और उन्होंने मुझे आश्वासन दिया है, जो हर एक के भाग्य में नहीं है।......ऐसे महापुरुषों का साक्षात्कार बिना शास्त्रों पर पूर्ण विश्वास के नहीं होता।"

यह पत्र ४ फरवरी १८९० को लिखा गया था और इसे लिखने के ठीक तीन दिन बाद ७ फरवरी को अपने एक मित्र के पत्र में वे लिखते हैं—"पवहारी बाबा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखने में वैष्णव प्रतीत होते हैं। उन्हें योग, भक्ति एवं विनय की प्रतिमा कहना चाहिए। उनकी कुटी के चारों ओर दीवारें हैं। दरवाजे बहुत थोड़े हैं। परकोटे के भीतर एक सुरंग है जहाँ वे समाधिस्थ पड़े रहते हैं। सुरंग से बाहर आने पर ही वे दूसरों से बातें करते हैं। किसीको यह नहीं मालूम कि वे क्या खाते-पीते हैं। ईसीलिए लोग उन्हें 'पवहारी बाबा' कहते हैं। एक बार वे पाँच साल तक सुरंग से बाहर नहीं निकले तब लोगों ने सोचा कि उन्होंने शरीर त्याग दिया है। किन्तु वे जीवित बाहर निकले।.......'

× × ×

जिला जौनपुर का प्रेमापुर गाँव जहाँ कुछ सरयूपारी ब्राह्मणों का निवास है। इसी गाँव में तिवारीजी रहते थे। आपके दो पुत्र हुए—सर्वश्री लक्ष्मीनारायण और अयोध्याप्रसाद। जवानी के समय बड़े भाई लक्ष्मीनारायण एकाएक घर से गायब हो गये। चारों ओर इष्ट-मित्रों के यहाँ खोज की गयी; कहीं पता नहीं चला। जब उनके बारे में पता चला तब तक उनके माता-पिता का देहान्त हो चुका था और अयोध्याप्रसाद दो बच्चों के पिता बन चुके थे।

लक्ष्मीनारायणजी घर से पलायित होकर कई स्थानों का चक्कर काटने के बाद गाजीपुर जिले के कुर्त्ता गाँव स्थित एक संन्यासी के आश्रम में ठहर गये। यहाँ उनका मन रम गया। इस आश्रम के किनारे गंगा नदी, शान्त वातावरण, गाँव के सरल प्रकृति के लोगों ने उनका मन मोह लिया। संन्यासीजी उच्चकोटि के योगी पुरुष थे। उपयुक्त आधार समझकर उन्होंने लक्ष्मीनारायण को शिष्य बना लिया। इस प्रकार लक्ष्मीनारायण-जी रामानुज-सम्प्रदाय के अनुयायी बन गये।

घर से लक्ष्मीनारायण का नाता टूट चुका था, परन्तु बड़े भाई को आदर-सम्मान देने के लिए अयोध्याप्रसाद अक्सर यहाँ आते रहे। कभी-कभी साथ में उनके दोनों लड़के आते थे।

भारत में संन्यासियों के चार सम्प्रदाय हैं—संन्यासी, योगी, बैरागी और पन्थी। जिन्हें संन्यासी कहा जाता है, वे शंकराचार्य द्वारा प्रतिष्ठित अद्वैतवादी हैं। गिरि, पुरी, भारती, आश्रम आदि दस उपाधियाँ हैं। योगी भी अद्वैतवादी हैं, पर इनकी साधना योग के माध्यम से होने के कारण इन्हें स्वतंत्र माना गया है। इस सम्प्रदाय के लोग योग को ही श्रेष्ठ समझते हैं और इसीके माध्यम से सिद्धि प्राप्त करते हैं।

बैरागी रामानुज या श्री सम्प्रदाय के अनुयायी होते हैं। अधिकतर द्वैतवादी होते हैं। इसके प्रवर्तक श्री रामानुजाचार्य थे। मुसलमानों के शासनकाल में जिन धर्मों का उदय हुआ, वे पन्थी कहलाये। इनमें द्वैतवादी और अद्वैतवादी दोनों हैं। पवहारी बाबा इसी सम्प्रदाय के थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दीक्षागुरु के निधन के पश्चात् लक्ष्मीनारायणजी कुर्ता आश्रम के मठाधीश हुए। लगभग चालीस वर्ष तक वे फलाहार पर रहते हुए साधना करते रहे। उनके तप और निष्ठा को देखकर स्थानीय लोग उन्हें तपस्वी वावा कहने लगे। आगे चलकर वे इसी नाम से प्रसिद्ध हुए। इस बीच उन्होंने अनेक शिष्य-भक्त बनाये।

सहसा वे अस्वस्थ हो गये। धीरे-धीरे उनकी हालत खराव हो गयी। स्थानीय भक्तों ने सोचा कि इस घटना की सूचना छोटे भाई को देनी चाहिए। तुरत आदमी भेजा गया। अयोध्याप्रसाद आकर सेवा करने लगे। वातचीत के सिलसिले में एक दिन अयोध्याप्रसाद ने कहा—"आप घर चले चलिये। यहाँ ठीक से देखरेख नहीं हो रही है। गाँव में वैद्यजी हैं। इलाज भी हो जायगा।"

लक्ष्मीनारायण ने कहा—"गृहत्यागी संन्यासी को पुनः गृहस्थी में नहीं जाना चाहिए। रामजी की कृपा से ठीक हो जाऊँगा।"

वात अयोध्याप्रसाद की समझ में आ गयी, अतएव उन्होंने विशेष जोर नहीं दिया। धीरे-धीरे वे स्वस्थ हो गये, पर आँखों की ज्योति कम हो गयी। विना सहारे मल-मूत्र करने में कठिनाई होने लगी। इधर एक अर्से तक भाई की सेवा में लगे रहने के कारण घर देखरेख के अभाव में नष्ट हो रहा था।

आखिर एक दिन चलते समय अयोध्याप्रसाद ने कहा—"आपकी जो हालत है, इसे देखते हुए मेरी राय में आपकी सेवा के लिए एक ऐसे आदमी की जरूरत है जो अपना हो और वरावर देखरेख करे। शिष्य या भक्तों के सहारे आपका काम नहीं चल सकता। मैं सोचता हूँ कि गंगा को यहाँ भेज दूँ। वह इस लायक है कि आपकी सेवा ठीक से करेगा और आपको आराम भी मिलेगा।"

लक्ष्मीनारायणजी ने हँसकर कहा—"गंगा घर का वड़ा लड़का है। तुम्हारा सहायक। अगर तुम किसीको भेजना चाहते हो तो हरभजन को भेज देना। उसे यहाँ पढ़ा-लिखाकर लायक वना दूँगा।"

अयोध्याप्रसाद वड़े भैया की वातें सुनकर चौंक उठे। हरभजन तो अभी वच्चा है, माँ का दुलारा, सभी के आँखों का तारा। रात को अभी तक माँ से लिपटकर सोता है। कहानी सुनाने के लिए जिद करता है। दस वर्ष का वालक इनकी सेवा क्या करेगा? यहाँ आकर वह इतना उपद्रव करेगा कि भैया त्रस्त हो जायेंगे।

अयोध्या को मौन रहते देख लक्ष्मीनारायणजी ने कहा—"अयोध्या, तेरा मन न वैठ रहा हो तो जाने दे। नाहक परेशान मत हो। रामजी की जो इच्छा होगी, वही होगा।"

अयोध्याप्रसाद चुप रहे। कुछ देर वाद लक्ष्मीनारायणजी ने पुनः कहा—"मगर एक वात है। रामजी की कृपा से जब मेरी इच्छा हो गयी है तब हरभजन को यहाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आना ही पड़ेगा। आज न सही, पर एक न एक दिन वह आयेगा। कब तक तुम लोग उसे अपने स्नेह-पाश में बाँधे रखोगे? उसे यहाँ आना है, भले ही मेरी मौत के बाद आये।"

बड़े भैया की बातें सुनकर अयोध्याप्रसाद मन ही मन सिहर उठे। भैया सिद्ध पुरुष हैं। इनका वचन कभी खाली नहीं जाता। स्थानीय भक्तों की जबानी अनेक घटनाओं के बारे में वे सुन चुके थे। लेकिन उन्हें दुःख इस बात का था कि उनका लड़का साधु बनेगा। जब यही होना है तब बाधा देकर भैया के मन को क्लेश पहुँचाने से क्या लाभ? भवितव्य को स्वीकार कर लेना उचित है। बड़े भैया से विदा लेकर अयोध्याप्रसाद गाँव वापस आ गये।

सारी बातें सुनने के बाद पत्नी नाराज हो गयी। कई दिनों तक पति-पत्नी में इस विषय को लेकर मनोमालिन्य रहा। अयोध्याप्रसाद को भय था कि कहीं इससे गृहस्थी का अकल्याण न हो। आखिर पत्नी को झुकना पड़ा।

हरभजन को पाकर तपस्वीजी आनन्द से विभोर हो उठे। माँगी हुई मुराद मिलने पर लगा जैसे उन्हें अपना इष्ट मिल गया है। पास बैठाकर उसके शरीर पर हाथ फेरते हुए बुदबुदाये—"उपयुक्त आधार है। जैसा सोचा था, सब कुछ वही है। अति सुन्दर। रामजी, तुम्हारी महिमा अपरम्पार है।" देर तक वे हरभजन के मस्तक पर हाथ फेरते रहे।

अयोध्याप्रसाद इन बातों का अर्थ नहीं समझ सके। उन्होंने केवल यही अनुमान लगाया कि हरभजन को पाकर भैया प्रसन्न हो गये हैं। कई दिन ठहरने के पश्चात् वे वापस चले गये।

हरभजन को पाकर तपस्वीजी के जीवन में अद्भुत परिवर्तन हुआ। उन्होंने हरभजन की शिक्षा के लिए योग्य विद्वानों से अनुरोध किया और स्वयं सुबह-शाम पढ़ाने लगे। वे यह जान चुके थे कि समय कम है और इस बीच अपने इस भतीजे को इतना योग्य बना दें ताकि वह इस स्थान का भार सँभाल सके।

शुभ दिन देखकर उन्होंने हरभजन के शिखा सूत्र देकर गैरिक वसन पहनाया। अब हरभजन ब्रह्मचारी के रूप में मंदिर की पूजा करने लगा। आश्रम में जितना साहित्य था, उसका ज्ञान दिया जाने लगा।

इन दिनों के बारे में स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है—"इस प्रकार प्राचीनकाल के भारतीय छात्र-जीवन का दैनिक कार्यों के भीतर भावी महात्मा का बाल्य जीवन व्यतीत होता गया। उनका अध्ययन के प्रति अनुराग और भाषा सीखने की दक्षता के अलावा क्रीड़ाशील जीवन रहा। उनकी गंभीरता का पूर्वाभास पहले से ही ज्ञात हो गया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"बचपन में हरभजन बहुत ही विनोदी थे। अपने छात्र-जीवन में कभी-कभी ऐसी खुराफात करते थे जिसे देखकर सहपाठी चकित रह जाते थे। लेकिन उसी तरह वे ग्रंथों का पाठ तेजी से करते रहे। न्याय, व्याकरण, दर्शन और अध्यात्म का ज्ञान उन्हें विद्वानों और ताऊजी से प्राप्त होता रहा।

"ठीक इसी समय हरभजन के जीवन में एक ऐसी घटना हुई जिससे अध्ययनशील युवक ने संभवतः अपने जीवन के गंभीर मर्म को पहली बार अनुभव किया। अब तक इनका ध्यान पुस्तकों तथा दैनिक ब्रह्मचर्य-जीवन की ओर लगा था, अब वहाँ से हटाकर उसे अपने मनोजगत् की ओर लगाकर पर्यवेक्षण करने लगे। पुस्तकीय ज्ञान के अलावा संसार में और कुछ है या नहीं, इस सत्य को जानने के लिए उनका हृदय व्याकुल हो उठा। ठीक इन्हीं दिनों उनके ताऊजी अर्थात् तपस्वी बाबा का निधन हो गया। अब तक वे जिनकी छत्रछाया में जीवन-धारण करते आये हैं, जिनके ऊपर युवक-हृदय का संपूर्ण प्यार निबद्ध था, आज वे चले गये। फलस्वरूप युवक-हृदय का अन्तःस्तल शोकाहत होकर रिक्त हो गया। उस शून्यता को पूर्ण करने के लिए वे ऐसी वस्तु का अन्वेषण करने लगे जो अपरिवर्तनीय हो।

"तपस्वी बाबा की अलौकिक घटनाओं की ख्याति चारों ओर फैली थी। शिष्यों के अलावा असंख्य भक्त थे। उनके तिरोधान का समाचार पाकर दल के दल लोग आने लगे। सभी लोगों ने उनके सत्कार-कार्य में भाग लिया। भण्डारा हुआ और उसके बाद एक दिन हरभजन का कुर्त्ता आश्रम की गद्दी पर अभिषेक किया गया।

"सभी भक्तों को ज्ञात था कि आज से छह वर्ष पूर्व तपस्वी बाबा इस ब्रह्मचारी को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर चुके थे। इन्हें महन्त बनाने की सारी प्रक्रिया बताते रहे। अब अपने गुरु ताऊजी के निर्देशानुसार वे आश्रम का सारा कार्य करने लगे।

"कुछ दिनों बाद उनका मन कुर्त्ता आश्रम से उचाट हो गया। जिस प्रकार भगवान् बुद्ध, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, तैलंग स्वामी आदि सन्त योग्य गुरु की तलाश में तीर्थाटन करने निकले थे, ठीक उसी प्रकार हरभजन अपनी पिपासा शान्त करने के लिए एक दिन वहाँ से चल पड़े।"

स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है—"उनकी यात्रा के विवरण प्राप्य नहीं हैं, पर उनके सम्प्रदाय के अधिकांश ग्रंथों में जिस भाषा का प्रयोग हुआ है, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि प्राचीन बंगला भाषा तथा द्रविड ग्रंथों का व्यापक परिचय उन्हें था और वे दक्षिण भारत तथा बंगाल में काफी दिनों तक थे।

"उनके समकालीन मित्र यह जरूर बताते हैं कि जवानी के दिनों बाबा काठियावाड़ स्थित गिरनार पर्वत पर गये थे और वहीं पर्वत के शिखर पर योग-साधना के रहस्यों से प्रथम बार दीक्षित हुए थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"यह पर्वत बौद्धों के निकट अत्यन्त पवित्र स्थान था। इसी पहाड़ के नीचे सम्राट् अशोक का शिलालेख था। वर्तमान समय में बौद्ध धर्म का जो संशोधित संस्करण है, वे भी इस स्थान को अत्यन्त पवित्र समझते हैं।"

गिरनार पर्वत को अत्यन्त पवित्र इसलिए माना जाता है कि वहाँ अवधूत गुरु दत्तात्रेय रहते हैं जो भारत के अनेक सन्तों को दर्शन दे चुके हैं। कहा जाता है कि भाग्यवान् व्यक्ति ही इसके शिखर पर चढ़ पाते हैं। यहाँ आज भी अनेक सिद्ध योगी अलक्ष्य रूप में रहते हैं जिन्हें महान् पुरुष ही देख पाते हैं। कहा जाता है कि हरभजन गिरनार-शिखर पर चढ़ने में सफल हो गये थे। वहाँ उन्होंने दत्तात्रेय की पादुका के दर्शन किये। वहाँ कुछ देर तक ध्यानस्थ रहने पर उनकी अतीन्द्रिय शक्ति ने सूचित किया कि पास ही कोई योगी पुरुष रहते हैं। उनकी खोज में चक्कर काटते हुए, प्रभु की प्रेरणा से एक गुफा के मुहाने के समीप आये। भीतर प्रवेश करते ही देखा कि एक योगी पद्मासन लगाये समाधिस्थ हैं। उनके शरीर से अपूर्व ज्योति प्रस्फुटित हो रही है।

हरभजन ने सोचा—ऐसे ही योगी पुरुष की उन्हें तलाश थी। मन ही मन इन्हें गुरुरूप में स्वीकार करके वहीं बैठ गये। काफी देर बाद योगिराज की समाधि भंग हुई। हरभजन ने साष्टांग प्रणाम किया। योगी को जब यह ज्ञात हुआ कि बालक शिष्य बनना चाहता है तब उन्होंने कहा—"मैं किसीको शिष्य नहीं बनाता। कोई भी गुरु किसीको शिष्य नहीं बनाता। प्रत्येक शिष्य के लिए उसका निश्चित गुरु होता है। वही दीक्षा देने का अधिकारी होता है। हर कोई ऐसा नहीं कर सकता।"

हरभजन ने बड़े विनम्र भाव से आग्रह किया, पर वे राजी नहीं हुए। उन्होंने योग की कुछ क्रियाएँ बताकर हरभजन को विदा दे दी।

हरभजनजी अब साधना, भजन-पूजन करते रहे, पर इन महात्मा से योग की शिक्षा पाकर उन्होंने नयी शक्ति प्राप्त की। इस शक्ति को प्राप्त करते ही उन्होंने अपना अधिकांश समय योगाभ्यास की ओर लगाया।

उन्होंने अन्न का त्याग कर दिया। केवल कुछ बेल की पत्तियाँ या नीम की पत्तियाँ खाकर दिन गुजारने लगे। आश्रम में सर्वदा शिष्य या भक्त रहते थे। यहाँ असुविधा देखकर रात के समय वे तैरकर गंगा उस पार जाकर एकान्त में योग की साधना करने लगे। इस प्रकार क्रमशः उन्नत होते गये।

हरभजन के सहपाठियों ने अनुभव किया कि इनके आचरण तथा स्वभाव में व्यापक परिवर्तन हो रहा है। यह देखकर उन्हें भय और विस्मय भी हुआ। लेकिन इन लोगों के मन में यह भावना उत्पन्न नहीं हुई कि हम लोग भी इनकी तरह बन जायें। स्वाभाविक है कि जीवन में अपने-आप उन्नत होनेवाले के प्रति लोगों की श्रद्धा बढ़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाती है। अपने सभी सहपाठियों को पीछे छोड़कर हरभजनजी साधना के पथ पर द्रुतगति से आगे बढ़ते गये।

कुछ दिनों बाद वे काशी आये। यहाँ गंगा-तट पर अचानक एक योगी से मुलाकात हो गयी। इस योगी को देखते ही हरभजनजी के हृदय में आकुलता उत्पन्न हुई और उनसे दीक्षा देने की प्रार्थना की। योगी महाराज ने उन्हें अपने पीछे-पीछे आने का इशारा किया। गंगा किनारे एक गुफा में आकर योगिराज ने कहा—"आज ही वह मुहूर्त है जब मुझे तुम्हें दीक्षा देनी है। जाओ, गंगा-स्नान कर आओ।"

हरभजनजी स्नान करके आये। उन्हें एक आसन पर बैठाकर योगिराज ने सविधि दीक्षा दी। उनकी भौंहों के मध्य ज्योंही उन्होंने अँगुलियाँ रखीं त्योंही तड़ित गति से सारे शरीर में बिजली की तरह न जाने क्या दौड़ गया। इसके बाद मंत्र देकर उन्होंने आशीर्वाद दिया।

वाराणसी से वापस कुर्ता आश्रम आने पर हरभजनजी ने निश्चय किया कि वे भी अपने गुरुदेव की तरह गुफा में साधना करेंगे। इच्छा प्रकट करते ही आश्रम के एक ओर गुफा का निर्माण भक्तों ने कर दिया। गुरुदेव ने कहा था—"योगाभ्यास के लिए गुफा से बढ़कर कोई उत्तम स्थान नहीं होता। हमारे यहाँ के अधिकांश योगी पहाड़ की कन्दराओं और गुफाओं में ही साधना करते आये हैं। यहाँ किसी प्रकार का शब्द मन को विचलित नहीं करता।"

गुरुदेव ने उन्हें योग की प्रक्रिया बताने के बाद अद्वैतवाद की शिक्षा दी थी। दिनभर वे अपने आराध्यदेव श्रीराम की पूजा-अर्चना करते, भण्डारे के लिए भोजन स्वयं बनाते और प्रसाद के रूप में भक्तों और शिष्यों में बाँट देते थे। इन सब बातों के कारण सामान्य लोगों में उनकी ख्याति बढ़ती गयी। दूर-दूर से लोग हरभजन बाबा का दर्शन करने आने लगे। रोगी अपना रोग दूर करने, मुसीबतजादा अपनी मुसीबत दूर करने के लिए आशीर्वाद माँगने लगे।

इस उपद्रव से परेशान होकर अब बाबा हरभजनजी गुफा में अधिक समय तक रहने लगे। यहाँ तक कि महीनों गुफा से बाहर नहीं निकलते थे। यह देखकर लोगों को आश्चर्य होता कि आखिर बाबा खाते क्या हैं?

किसी शिष्य ने कहा—"योगी पुरुष हैं, केवल हवा यानी पवन-सेवन करते हैं।"

इसी दिन से भक्तों में 'पवनहारी बाबा' के नाम से हरभजनजी प्रसिद्ध हो गये। न तो वे कुछ खाते हैं, न प्रातःक्रिया करने जाते हैं और न किसीसे कुछ बोलते हैं।

एक अर्से तक गुफा में रहने के बाद एक बार बाहर निकले और गुफा के पास बने एक घर में रहने लगे। उनका उद्देश्य था कि एक बड़ा भण्डारा किया जाय। जब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वे बाहर आकर कुटिया में रहते तब मिलनेवालों से मिलते, आशीर्वाद देते, प्रसाद देते और राम-राम जपने का आदेश देते थे।

इन दिनों के बारे में स्वामी विवेकानन्दजी ने लिखा है—"भारत के अन्य अनेक महात्माओं की तरह उनमें कर्ममुखरता नहीं थी। वाक्य के द्वारा नहीं, जीवन के द्वारा लोगों को शिक्षा देनी चाहिए। जो लोग सत्य को धारण करने के उपयुक्त हैं, उन्हींके जीवन में सत्य प्रतिफलित होता है। इस महापुरुष का जीवन भारतीय आदर्श का अन्यतम उदाहरण है। इस तरह के व्यक्ति जो कुछ जानते हैं, उसका प्रचार करना उन्हें पसन्द नहीं। साधना के द्वारा सत्य को पाया जा सकता है। धर्म सामाजिक कर्तव्य है, शक्ति नहीं है।"

स्वामी विवेकानन्द जब इनसे मिलने आये थे तब पवहारी बाबा से पूछा था—"जगत् के कल्याण के लिए आप गुफा से बाहर क्यों नहीं आ जाते ?"

उन्होंने विनोदी भाव से कहा—"एक बदमाश आदमी एक बार गलत कार्य करते हुए पकड़ा गया। ठीक इसी समय उसे एक व्यक्ति ने पकड़ा और दण्डस्वरूप उसके नाक को काट दिया। अब वह आदमी सोचने लगा कि कटे हुए नाक को लेकर मैं लोकालय में कैसे जाऊँ ? शर्म से परेशान होकर वह जंगल की ओर भाग गया। वहाँ एक बाघ की खाल का आसन बिछाकर बैठ गया। जब लोगों को इधर-उधर से आने की आहट पाता तब आँखें बन्द कर ध्यानस्थ हो जाता। उसे इस तरह ध्यान लगाकर बैठा देखने पर लोग रुक जाते। धीरे-धीरे लोग उसकी सेवा-पूजा करने लगे। उसने सोचा—यह नाटक उत्तम है। कम-से-कम भोजन की चिन्ता से मुक्त हो गया। इसी तरह कई साल गुजर गये। अब लोग इस मौनी बाबा से उपदेश सुनने के लिए व्याकुल होने लगे। यहाँ तक कि एक युवक उनसे दीक्षा लेने के लिए उत्सुक हो उठा आखिर एक दिन उसने अपना मौन भंग करके कहा—"कल एक तेज चाकू लेकर आना।" युवक ने सोचा कि कल मेरी आशा पूर्ण होगी। इसी आशा से वह चाकू लेकर सवेरे जल्दी चला आया। नकटा साधु उस युवक को जंगल के सुनसान इलाके में ले गया। इसके बाद एक ही झटके में उसकी नाक को काटने के बाद कहा—"हे युवक, इस तरह मैं अपने आश्रम में दीक्षित हुआ हूँ। अब तुम भी मौका देखकर इसी प्रकार अन्य लोगों को दीक्षा देते रहना।" उस युवक ने मारे शर्म के इस दुर्घटना के बारे में किसीको कुछ नहीं बताया। साध्यानुसार वह नकटा साधु सम्प्रदाय की संख्या बढ़ाने लगा। इस प्रकार नकटा-साधु सम्प्रदाय सारे भारत में फैल गया। क्या तुम भी मुझसे ऐसा काम कराना चाहते हो ?"

इसके बाद गंभीर होकर उन्होंने कहा—"तुम क्या सोचते हो कि स्थूल शरीर से ही दूसरों का उपकार हो सकेगा ? क्या देह के क्रियाशील हुए बिना केवल मन ही मन दूसरे के मन की सहायता की जा सकती है, क्या यह संभव नहीं है ?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामीजी ने पूछा—"आप इतने बड़े योगी हैं, फिर शिष्यों को पहले-पहल श्री रघुनाथजी की मूर्ति-पूजा, होमादि करने का उपदेश क्यों देते हैं ?"

पवहारी बाबा ने कहा—"तुम यही क्यों समझ लेते हो कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कल्याण के लिए कर्म करता है। क्या मनुष्य दूसरों के लिए कर्म नहीं कर सकता ?"

पवहारी बाबा के जीवन में अलौकिक घटनाएँ बहुत कम हुई हैं। कारण वे मौन रहते हुए अपने जीवन का अधिकांश भाग गुफा में व्यतीत करते रहे। उनका दर्शन करने के लिए बड़े-बड़े धनी, सन्त, महात्मा आदि आते रहे।

एक बार एक चोर ने सोचा कि जब बावा के पास इतने बड़े-बड़े लोग आते हैं और चढ़ावा देते हैं तब इनके पास काफी रकम होगी। उस मूर्ख को यह नहीं मालूम कि बावा सारी रकम भण्डारा में खर्च कर देते हैं। जो व्यक्ति बेलपत्तियों पर जीवित हैं, उन्हें संचय की क्या जरूरत ?

चोरी करते हुए वह उस ओर आया जिधर बावा ध्यानस्थ बैठे थे। उन्हें देखते ही वह हड़बड़ाकर भागने लगा। आहट पाते ही बावा का ध्यान भंग हुआ। वे चोर की गठरी लेकर उसके पीछे-पीछे दौड़े। चोर ने समझा कि बावा पकड़ने आ रहे हैं। इधर उससे भी तेज गति से दौड़कर बावा ने उसे पकड़ लिया। इसके बाद बोले—"बेटा, यह तुम्हारा सामान है। कृपया इसे ग्रहण करो। इसके लिए मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूँगा। मैं अपनी खुशी से तुम्हें दे रहा हूँ।"

चोर पर बावा की इन बातों का व्यापक प्रभाव पड़ा। तुरत उनके पैरों पर गिरकर बोला—"महाराज, मुझे क्षमा कीजिए। अब आज से यह काम नहीं करूँगा।"

कहा जाता है कि उक्त चोर आगे चलकर बावा का भक्त बन गया और चोरी करना छोड़ दिया। इसी प्रकार एक बार एक पागल आकर आश्रम में उपद्रव करने लगा। बात बावा के पास पहुँची। वे गुफा के बाहर निकलकर उसकी ओर एकटक देखने लगे। धीरे-धीरे उसका उपद्रव शान्त होने लगा। कुछ देर बाद उसका सारा पागलपन दूर हो गया।

एक बार बावा को एक विषधर सर्प ने काट लिया, इससे भक्त और शिष्य शोकाकुल होकर रोने लगे। उन्हें समझते देर नहीं लगी कि अब बावा समाधि से कभी नहीं उठेंगे। ठीक पाँच घण्टे बाद बावा ने आँखें खोलीं। व्याकुल भक्तों से कहा—"घबराने की बात नहीं। सर्प देवता तो मेरे भगवान् के पाहन थे।"

जीवन के अंतिम दिनों में वे किसीसे मिलते-जुलते नहीं थे। जब गुफा से बाहर आते तब लोगों से बातें जरूर करते थे। शेष समय गुफा में रहते थे। गुफा के भीतर से जब धुआँ बाहर आता तब लोग समझ लेते थे कि बावा होम कर रहे हैं। स्वामी विवेकानन्द से उन्होंने कहा था—"हे राजा, भगवान् अकिंचनों के धन हैं। जो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यक्ति किसी भी वस्तु को, यहाँ तक कि अपनी आत्मा को भी 'मेरा है' समझना छोड़ चुका है, वे उसीके हैं।" बाबा में यही भाव था।

वे एक चक्षु के थे। वास्तविक उम्र से कम लगते थे। उनका स्वर बहुत ही मीठा था। प्रत्यक्ष रूप से वे उपदेश नहीं देते थे। उनका विचार था कि ऐसा करने पर स्वयं को आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित करना पड़ेगा और ऊँचे आसन पर बैठना पड़ेगा। अगर हृदय का प्रस्रवण खुल जाय तो ज्ञानवारि स्वतः प्रकट होने लगता है।

जब वे गुफा के भीतर रहते तब लोग अक्सर गुफा के मुहाने पर आलू और मक्खन रख देते थे। अगर वे समाधि में नहीं रहते तो उसे ग्रहण कर लेते थे, वरना उसी प्रकार पड़ा रह जाता था।

एक दिन गुफा के द्वार से काफी धुआँ बाहर निकलने लगा। आम तौर पर सुगंधित धुआँ निकलता था, पर इस धुएँ में मांस जलने का दुर्गन्ध पाकर लोग घबरा उठे। अन्त में गुफा का दरवाजा तोड़ डाला गया। भीतर जाकर लोगों ने देखा बाबा होमाग्नि में अपने को आहुति दे रहे हैं। देखते-ही-देखते सब कुछ राख हो गया।

इस प्रकार पूर्वी उत्तर प्रदेश का ही नहीं, बल्कि भारत का एक संत सदा के लिए चला गया जिन्होंने परमहंस रामकृष्ण के पट्टशिष्य स्वामी विवेकानन्दजी को ज्ञान देकर प्रभावित किया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरिहर बाबा

वाराणसी के गंगा-तट पर स्थित असीघाट पर आज अनेक नागरिकों की भीड़ एकत्रित हुई थी। यहाँ मृत्युंजय-होम हो रहा था। पास ही बाबा विश्वनाथ के प्रतीक परम श्रद्धेय हरिहर बाबा विराजमान थे। नगर के प्रसिद्ध याज्ञिक होमकुण्ड में आहुति दे रहे थे। उनके स्वाहा-स्वाहा स्वर से वातावरण मुखरित हो रहा था।

अचानक ठीक बारह बजे आसमान पर बादल मँड़राने लगे। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगे। लोगों को समझते देर नहीं लगी कि यज्ञ का सारा आयोजन विफल होगा। लोग रह-रहकर आकाश की ओर देखने लगे। भीड़ में हलचल होते देख एक ब्राह्मण ने कहा—"आप लोग शान्ति से बैठे रहिये। पानी नहीं बरसेगा। जब यहाँ साक्षात् भोलेनाथ बैठे हैं तब कोई संकट नहीं आयेगा।"

ठीक उसी समय हरिहर बाबा ने होमकुण्ड के चारों ओर परिक्रमा करते हुए पण्डितों से कहा—"जब आप लोगों को ही याज्ञिक-क्रिया पर विश्वास नहीं है तब क्यों ऐसे कार्यों में भाग लेते हैं ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पण्डितों ने अपना मस्तक झुका लिया। कुछ देर बाद जोरों से बारिश शुरू हो गयी। लोगों ने आश्चर्य के साथ देखा—नदी, घाट चारों ओर बारिश हो रही है, पर यज्ञस्थल में एक बूँद पानी नहीं गिर रहा है। चार बजे होम-कार्य समाप्त हुआ। इसके बाद होताओं और कार्यकर्ताओं को बजरे में भोजन करने के लिए बैठाया गया। इसके बाद चार घण्टे तक लगातार वर्षा होती रही। पण्डित तथा होतागण बजरे से बाहर नहीं निकल सके।

दशहरे के दिन हरिहर बाबा अपने भक्तों से घिरे बैठे थे। उनके सामने कुछ लोग भजन गा रहे थे। धीरे-धीरे शाम हो गयी।

बाबा से कुछ कहने की हिम्मत किसीको नहीं हो रही थी। वहीं बाबा के पट्टशिष्य विश्वनाथजी भी मौजूद थे। भक्तों ने उनसे कहा—"महाराज, आज दशहरा का त्योहार है। दशाश्वमेध घाट पर मूर्ति-विसर्जन हो रहा है। इधर बाबा का सत्संग। यहाँ से उठने की भी इच्छा नहीं हो रही है। दूसरी ओर सालभर का पर्वोत्सव देखने की लालसा हो रही है। अगर आप बाबा से अनुरोध करें तो हमें छुट्टी मिल जायेगी।"

विश्वनाथजी भक्तों की इच्छा भलीभाँति समझ गये। उन्होंने हरिहर बाबा से निवेदन किया—"प्रभो, आपके इस कीर्तन के कारण लोग दशहरा-उत्सव देखने से वंचित रह गये। आपके रहते कोई सत्संग भला कैसे छोड़ सकता है?"

हरिहर बाबा ने हँसकर कहा—"तो यह बात है। उतनी दूर जाने की क्या जरूरत? वहाँ का सारा दृश्य यहाँ बैठे-बैठे भी देखा जा सकता है। सभी लोगों को कह दो।"

कुछ ही पलों में बजरे पर बैठे सभी लोगों ने देखा कि उनका बजरा दशाश्वमेध घाट पर है। वहाँ का सारा दृश्य दिखाई दे रहा है। घाट पर मौजूद सभी लोगों ने बाबा को देखा, किन्तु आसपास अन्य जितनी नौकाएँ थीं, उन पर सवार दर्शकों ने बाबा को नहीं देखा। यह दृश्य देखकर सभी भक्त आनन्द से विभोर हो उठे।

विश्वनाथजी ने कहा—"भगवन्, आपकी महिमा अपरम्पार है। आज मैं तथा आपके सभी भक्त धन्य हो गये।"

ठीक इसी समय बाबा के एक भक्त राधे असीघाट पर आया तो देखा—बाबा बैठे हैं। नाव पर अन्य लोग हैं। घर वापस आने पर राधे के भाइयों ने कहा—"असी जाना तेरा बेकार हुआ। बाबा तो दशाश्वमेध घाट पर दशहरा-उत्सव देख रहे थे।"

राधे को इस पर विश्वास नहीं हुआ। भाइयों ने कहा—"घाट पर चलो। वहाँ जिन लोगों ने बाबा को देखा था, उनसे गवाही दिला दूँगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर भी राघे को विश्वास नहीं हुआ। दशाश्वमेध घाट पर आकर उसने लोगों से इस घटना के बारे में पूछा। जिन लोगों ने बाबा को देखा था, उन लोगों ने इस बात को स्वीकार किया। सारी बातें सुनकर राघे चकित रह गया।

× × ×

बिहार का छपरा जिला बहुत ही महत्त्वपूर्ण जिला है जिसने माधव पागला, लादू महाराज और हरिहर बाबा जैसे संतों को अपने यहाँ जन्म दिया।

इसी जिले के जफरापुर गाँव में सरयूपारी ब्राह्मण, तिवारी उपाधिधारी एक पण्डितजी रहते थे। सन् १८२१ ई०, माघी पूर्णिमा के दिन तिवारीजी के यहाँ एक बालक ने जन्म लिया। तिवारीजी ने बालक का नाम रखा—सेनापति। आगे चलकर मेरा लड़का फौज में सेनापति बनेगा।

सेनापति जब सात वर्ष का हुआ तब तिवारीजी के यहाँ दूसरे पुत्र ने जन्म लिया। उन दिनों हरिहर-क्षेत्र का मेला लगा था। उसकी स्मृति में बालक का नाम रखा गया—हरिहर।

हरिहर के जन्म लेने के बाद से तिवारीजी की पत्नी अस्वस्थ रहने लगीं। गृहिणी की बीमारी, दोनों बच्चों की देखभाल और गृहस्थी का झमेला—तिवारीजी परेशान हो गये। कुछ दिनों बाद पत्नी चल बसी। बच्चे मातृहीन हो गये।

अब तिवारीजी पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। उनके कष्टों को देखकर पड़ोसी मित्रों ने उन्हें पुनर्विवाह करने की सलाह दी, पर वे राजी नहीं हुए। उन्होंने कहा—"आप मेरी मुसीबतें देखकर ऐसी सलाह दे रहे हैं, पर यह भी सोचिये कि सौतेली माँ आकर इन्हें अपना स्नेह न दे सकी तो दिवंगत पत्नी के साथ मेरा कितना पाप बढ़ेगा। नयी पत्नी की उपेक्षा से कलह के सिवा और कुछ हाथ नहीं लगेगा।"

यह सन् १८३० ई० की घटना है। इस घटना के ठीक पाँच वर्ष बाद सन् १८३५ ई० को तिवारीजी भी दोनों बच्चों को अनाथ बनाकर चल दिये। उन दिनों सेनापति की उम्र १४ वर्ष और हरिहर की ७ वर्ष थी।

पिता का श्राद्ध करने के बाद सेनापति ने देखा कि यहाँ सहारा देनेवाला कोई नहीं है। खेत था नहीं, सगा भी कोई नहीं था। पिताजी अक्सर सोनपुर के एक जमींदार की चर्चा बराबर करते थे जो कि उनके मित्र और सहपाठी थे। छोटे भाई को लेकर सेनापति उनकी शरण में आया।

सारी कहानी सुनने के पश्चात् जमींदार ने कहा—"कोई बात नहीं, बेटा। यहाँ आराम से रहो। खाओ, पिओ और स्कूल में पढ़ने जाओ।"

सेनापति को ज्ञात था कि पिताजी उसे कितना प्यार करते थे। ठीक उसी तरह वह अपने छोटे भाई हरिहर की देखरेख करता था। स्कूल से वापस आने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के बाद दोनों बाहर नहीं जाते थे। एक साथ खाते और एक ही बिस्तर पर सो जाते थे।

यहाँ आये तीन वर्ष व्यतीत हो गये थे। अचानक एक दिन स्कूल से वापस आते ही हरिहर को तेज बुखार आ गया। इलाज होने लगा, पर उसे बचाया नहीं जा सका। तीसरे दिन वह भी अपने माता-पिता के पास चला गया।

यह एक ऐसा मार्मिक आघात था जिसे सेनापति सहन नहीं कर पा रहा था। उसके कपड़े, पुस्तकें, खेल के सामान आदि रह-रहकर उसकी स्मृतियों को कचोटने लगे। एक दिन वह चुपचाप भागलपुर चला आया। यहाँ भी मन को शान्ति नहीं मिली, बल्कि अनाहार और उपेक्षा का शिकार होना पड़ा। लाचारी में पुनः सोनपुर वापस आकर पढ़ने-लिखने में मन लगाया।

लेकिन हरिहर की याद बराबर मन को अशान्त बनाती रही। हृदय से जब किसीको प्यार किया जाता है तब उसका अभाव बुरी तरह खलने लगता है। सेनापति को लगा जैसे कोई अपना नहीं है। सभी अपने-अपने स्वार्थ के लिए मोह उत्पन्न करते हैं। इन्हीं सब चिन्ताओं से उसका मन उचाट हो गया और एक दिन अपने आश्रयदाता को बिना कोई सूचना दिये चल पड़ा।

कई शहरों का चक्कर काटते हुए जब वह अयोध्या पहुँचा तब वहाँ के वातावरण ने उसका मन मोह लिया। उसने निश्चय किया कि फक्कड़ साधुओं की तरह यहीं अपना जीवन व्यतीत करेगा। शायद कभी प्रभु राम की कृपा हो जाय। नगर से कुछ दूर सरयू के किनारे उसने डेरा जमाया। पास ही जंगल से लकड़ी और पत्ते लाकर एक छोटी-सी कुटिया बनाकर राम-भजन में मगन हो गया।

शाम के पहले नदी में स्नान करने के पश्चात् जो कुछ मिलता, उसे खा लेते। इधर से गुजरनेवाले यात्री और दर्शनार्थी साधु समझकर खाद्य पदार्थ और पैसे दे जाते। खाद्य पदार्थों को वे खा खाते थे। जिस दिन खाद्य पदार्थ न मिलता, उस दिन सतुआ का घोल बनाकर पी जाया करते थे। अधिकतर समय ध्यान में लगाते थे।

कहा जाता है कि यहीं उन्हें एक संन्यासी से बीज मंत्र प्राप्त हुआ था। इस मंत्र के जाप से उन्हें तितिक्षा प्राप्त हो गयी और वे कठोर साधना में निमग्न हो गये। दाढ़ी और जटा बढ़ने लगी, मन की व्याकुलता समाप्त हो गयी। अब अपना अधिकांश समय कुटिया के बाहर एक शिला पर बैठे गुजारने लगे।

ठीक इन्हीं दिनों एक घटना हो गयी। गाँव के कुछ लोग अयोध्या-दर्शन करने आये थे। इन लोगों में से कुछ लोगों ने सेनापति को पहचान लिया। आश्चर्य के साथ किसीने कहा—"तिवारीजी का बेटा साधु बन गया है।"

दूसरे ने कहा—"कहिये हरिहर के भइया, यह चोला कैसे अपना लिया ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोग सेनापति का नाम भूल चुके थे। अधिकांश लोगों को हरिहर का नाम याद था। फलतः हर कोई सम्बोधन करते समय 'हरिहर के भइया' कहते रहे। गाँव के लोगों ने समझाया कि यह उम्र साधु बनने की नहीं है। लोग जवानी के बाद साधु बनते हैं। चलो, घर लौट चलो।

सेनापति ने इन लोगों के अनुरोध को स्वीकार नहीं किया। अब उसे मंत्र-जाप में जो आनन्द मिल रहा था, उसे छोड़कर जाने की इच्छा नहीं हुई।

स्थानीय लोग इस महात्मा को कठोर-साधना करते देखते रहे। कुछ पूछने पर कोई जवाब नहीं मिलता था। दिनभर कड़ी धूप में, मूसलधार वर्षा में और कड़कड़ाती सर्दी में इसी तरह दिनभर नंगे बदन ध्यान लगाये बैठे रहते थे। न किसीसे कुछ माँगते थे और न किसीसे कोई बात करते थे। गाँव के लोगों के सम्बोधन को सुनकर स्थानीय लोग भी 'हरिहर के भइया' स्थान पर हरिहर भाई—हरिहर बाबा कहने लगे। सेनापति ने सोचा—चलो, यह भी ठीक ही हुआ। जिस भाई की स्मृतियों ने संन्यास दिलाया और उसीके नाम को ग्रहण कर लिया जाय। इस घटना के बाद से वे हरिहर बाबा के नाम से प्रसिद्ध हुए।

दो वर्ष कठोर-साधना करने के बाद उन्हें वाक्-सिद्धि प्राप्त हो गयी। अब वे अधिकतर पानी में रहने लगे। उनके चेहरे से अपूर्व तेज प्रस्फुटित होने लगा। कहा जाता है कि १२ वर्ष तक यहाँ तप करने के बाद एक दिन उन्हें प्रभु राम, सीता और हनुमानजी के दर्शन हुए।

हनुमानजी ने इनसे कहा—"अगर तुम इष्ट प्राप्त करना चाहते हो तो काशी जाकर बाबा विश्वनाथ की कृपा ग्रहण करो। वहीं तुम्हें इष्ट की प्राप्ति होगी। बाबा की कृपा प्राप्त होते ही तुम्हें तुम्हारा इष्ट प्राप्त हो जायगा।"

यह आदेश पाते ही उसी दिन हरिहर बाबा काशी की ओर पैदल रवाना हो गये। मार्ग में आपकी मुलाकात परम सिद्ध योगी तैलंग स्वामी से हुई। दोनों ही मौन भाषा में बातें करते हुए विश्वनाथ मंदिर में आये। दो घंटे बाद मंदिर से निकलकर हरिहर बाबा तैरते हुए नगर के दक्षिणी भाग नगवा क्षेत्र में आ गये। यहाँ एक सुनसान स्थान पर रखे पत्थर पर चुपचाप बैठकर ध्यानस्थ हो गये।

उच्चस्तर के साधक जिन्हें दिव्य दृष्टि, वाक्-सिद्धि प्राप्त हो जाती है, वे अपनी अतीन्द्रिय-शक्ति से अन्य साधकों को पहचान लेते हैं। हरिहर बाबा को देखते ही तैलंग स्वामी ने समझ लिया था कि यह साधक योग-सिद्ध है। इसके पूर्व योगिराज तैलंग स्वामीजी स्वामी भास्करानन्द, रामकृष्ण परमहंस और पंडित श्यामाचरण लाहिड़ी जैसे योगियों से मिल चुके थे। उन्हें यह समझते देर नहीं लगी कि इस साधक की शक्ति अद्भुत है। उन्होंने इस बात की सूचना अपने भक्तों को देते हुए कहा—"तुम लोगों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को चाहिए कि उनका दर्शन करो और सर्वदा ध्यान रखो। इन दिनों वे नगवा में विराजमान हैं।"

उपस्थित भक्तों में से किसीने कहा—"बाबा, सुना है कि वे किसीके हाथ की कोई सामग्री ग्रहण नहीं करते, फिर हम उन्हें कैसे दें ?"

तैलंग स्वामी ने कहा—"तुम्हारा कहना ठीक है, पर जब तुम लोग जो कुछ फल-मिष्टान्न दोगे तब उसे वे ग्रहण करेंगे। मैंने उनसे कह दिया है। मेरे बाद मेरा स्थान वही ग्रहण करेंगे।"

सन् १८८७ ई० में योगिराज तैलंग स्वामी का शरीरान्त हो गया। स्वामीजी की भक्त-मण्डली शोक से पागल हो गयी। सभी संतप्त भक्तों को हरिहर बाबा के निकट शान्ति प्राप्त हुई।

हरिहर बाबा के समकालीन महात्माओं में तैलंग स्वामी, भास्करानन्द, श्यामाचरण लाहिड़ी थे। लाहिड़ी महाशय गृहस्थ योगी थे, इसलिए अन्य योगी उनके यहाँ नहीं जाते थे। लेकिन हरिहर बाबा, तैलंग स्वामी और स्वामी भास्करानन्द परस्पर एक-दूसरे के यहाँ बराबर जाते थे।

तैलंग स्वामी की तरह भास्करानन्दजी भी हरिहर बाबा की चर्चा चलने पर कहा करते थे—"बाबा असाधारण योगी पुरुष हैं। उनके तप की तुलना नहीं की जा सकती।"

× × ×

नगवा घाट के समीप ही स्वामी योगत्रयानन्दजी रहते थे। वे असाधारण विद्वान् थे जिनकी चर्चा महामहोपाध्याय पण्डित गोपीनाथ कविराज अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'साधु-प्रसंग' में कर चुके हैं। योगत्रयानन्दजी के पूर्वाश्रम का नाम था—शिवशंकर सान्याल। आप वास्तव में स्वामी नहीं थे। गृहस्थ संन्यासी थे।

आपके शिष्य श्री कालीपद मुखर्जी जो कि सबजज थे, ने नगवा में एक भवन बनवाया था, जहाँ आप रहते थे। एक दिन आपने देखा कि एक साधु को कुछ वाचाल लड़के गालियाँ देते हुए उन पर ढेले फेंक रहे हैं। यह दृश्य देखकर तुरत उन्होंने एक अन्य शिष्य रामशरण से कहा—"बाहर जाकर तुरत इन बदमाश लड़कों को डाँट-कर भगा दो और महात्माजी को सादर भीतर ले आओ।"

रामशरण जरा असमंजस में पड़ गया। महात्माजी पागल की तरह दिखाई दे रहे थे। कहीं कोई हरकत कर बैठें तो क्या होगा। उसने कहा—"स्वामीजी, क्या मेरे कहने पर वे भीतर आना स्वीकार करेंगे ?"

स्वामीजी ने कहा—"अवश्य करेंगे। मैं जो कह रहा हूँ। विलम्ब मत करो, जाओ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डरते हुए रामशरण ने जाकर लड़कों को भगाया और महात्माजी से निवेदन किया। वे तुरत उसके साथ चले आये। शिवशंकरजी ने उन्हें उचित आसन देकर प्रणाम किया। इसके बाद आपस में उच्चस्तरीय वार्ता होने लगी।

हरिहर बाबा के चले जाने के बाद स्वामी योगत्रयानन्दजी ने कहा—"यह तो महान् योगी है। तैलंग बाबा के बाद ऐसा महात्मा दूसरा नहीं देखा। मेरा अनुरोध है कि तुम लोग इनकी बराबर सेवा करते रहना। ऐसे महात्माओं का आविर्भाव कभी-कभी होता है।"

इस मुलाकात के बाद अक्सर स्वामी योगत्रयानन्द हरिहर बाबा के पास आते रहे। जब उन्हें आने में कोई अड़चन होती तब अपने शिष्यों से समाचार प्राप्त करते थे। जब तक स्वामीजी का शरीरान्त नहीं हो गया तब तक वे अपनी ओर से फल-फूल, मिष्टान्न आदि बाबा के पास बराबर भिजवाते रहे।

निधन के पहले उन्होंने रामशरण से कहा—"यह बात याद रखना कि मेरे बाद भी बाबा का ख्याल रखना। इससे तेरा भला होगा। वे क्या हैं, इसे तू अपनी सामान्य दृष्टि से नहीं देख सकता। उनकी सेवा से तेरा परलोक सुधर जायगा।"

इसी प्रकार विजयकृष्ण गोस्वामी जब कभी काशी आते तब हरिहर बाबा से जरूर मिलते थे। कभी-कभी दोनों व्यक्ति सूक्ष्म शरीर में मिलते थे।

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व दशाश्वमेध घाट के पहले डेढ़सी के पुल के समीप एक चौतरे पर खिचड़ी बाबा रहते थे। सिर पर बड़े-बड़े बाल, घनी दाढ़ी, हृष्ट-पुष्ट शरीर, पास ही धूनी और त्रिशूल। आप नित्य दरिद्रनारायण यानी कंगलों को खिचड़ी खिलाया करते थे। कहा जाता है कि खिचड़ी तैयार हो जाने के बाद आप उस कड़ाही को स्पर्श करते थे। इसके बाद अगणित लोगों को खिचड़ी दी जाती थी, पर कभी कमी नहीं हुई। इसी विशेषता के कारण पूरे बनारस में आपकी प्रसिद्धि थी। हरिहर बाबा अक्सर खिचड़ी-वितरण के समय पहुँच जाते और बाबा से बातें करते थे।

नगवा के समीप एक और बाबा रहते थे जिनका नाम था—वीतरागानन्द सरस्वती। जब हरिहर बाबा और सरस्वतीजी आपस में मिलते थे तब एक-दूसरे को 'गुरुदेव' कहकर सम्बोधित करते थे। इसका अर्थ था—दोनों संत एक-दूसरे को अपनी अपेक्षा ज्ञानी और तपस्वी समझते थे, परन्तु इन दोनों साधुओं के भक्त यह समझ बैठे कि हरिहर बाबा के गुरु वीतरागानन्दजी हैं और वीतरागानन्दजी के गुरु हरिहर बाबा हैं। जबकि यह धारणा गलत थी। वास्तव में दोनों गुरुभाई थे। इनके गुरुदेव मानसरोवर पर तपस्या कर रहे थे। हरिहर बाबा के असली गुरु का नाम केवल दो-चार शिष्य ही जानते थे। बाबा ने गुरुदेव का नाम प्रकट करने के लिए उन सभी को मना कर रखा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक दिन स्वामी वीतरागानन्दजी के साथ हरिहर बाबा घूमने निकले तो भड़-भाड़ के झंखाड़ में गिर पड़े। तमाम बदन में छोटे-छोटे काँटे चुभ गये। तुरत कई लोग बाबा को उठाने के लिए दौड़े।

तभी एक भक्त ने कहा—"एक दिन स्वामीजी भी इन्हीं झंखाड़ों में गिर पड़े थे। इन झंखाड़ों को नष्ट कर देना ठीक होगा।"

यह बात सुनते ही हरिहर बाबा ने कहा—"इन काँटों से जैसा मुझे कष्ट हुआ, वैसा ही सरस्वती स्वामी को भी हुआ होगा?"

भक्तों ने कहा—"हाँ, महाराज। तमाम बदन से काँटे निकालने में काफी परेशानी हुई थी।"

कुछ देर बाद हरिहर बाबा ने कहा—"कल से इन्हें कष्ट देने का अवसर नहीं मिलेगा।"

दूसरे दिन स्थानीय लोगों ने देखा—दूर-दूर तक जितने भड़भाड़ के पौधे थे, सब मुरझा गये हैं। लगता था, जैसे रात को दैत्यों ने आकर इन्हें जड़ से उखाड़कर रख दिया है। आसपास के अन्य पेड़ मौजूद थे, पर भड़भाड़ का एक पेड़ भी जीवित नहीं था।

इसी प्रकार की एक और घटना हुई थी जिसकी चर्चा बनारस ही नहीं, बल्कि भारत के विभिन्न प्रान्तों में फैल गयी थी।

महाराजकुमार विजयानगरम् काशी के सर्वजन आदृत पुरुष थे। ब्रिटिश शासनकाल में जितने गवर्नर काशी आते, वे इनके यहाँ ठहरते थे। सामान्य लोगों में विजयानगरम् का महल 'ईजा नगर की कोठी' के नाम से प्रसिद्ध है। शिक्षित जनता क्रिकेट के कुशल खिलाड़ी होने के कारण इन्हें 'वीजी' कहती थी।

महाराजकुमार संतान-हीन थे। कभी-कभी हरिहर बाबा का दर्शन करने आते थे। एक बार शायद उन्होंने अपना दर्द प्रकट किया। बाबा ने कहा—"भण्डारा करो। रामजी की कृपा अवश्य होगी।"

यह आदेश पाकर महाराजकुमार ने दो दिन मालपुए का और दो दिन रसगुल्ले का भण्डारा किया। इसके बाद रानी साहिबा ने महल में भण्डारे का प्रबंध किया जिसमें बाबा से आने का अनुरोध किया गया। बाबा पालकी पर सवार होकर रवाना हुए। आपके साथ भक्तों का काफिला था। असी नाले के पास नागफनी का जंगल था। फलस्वरूप पालकी ढोनेवालों से लेकर अनेक भक्तों के पैरों में नागफनी के काँटे धँस गये। सभी त्रस्त हो उठे।

यह घटना देखकर तुरत बाबा के मुँह से निकल पड़ा—"कल से नागफनी का नाश हो जायगा। इसके बाद किसीको इस पौधे से कष्ट नहीं होगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डरते हुए रामशरण ने जाकर लड़कों को भगाया और महात्माजी से निवेदन किया। वे तुरत उसके साथ चले आये। शिवशंकरजी ने उन्हें उचित आसन देकर प्रणाम किया। इसके बाद आपस में उच्चस्तरीय वार्ता होने लगी।

हरिहर बाबा के चले जाने के बाद स्वामी योगत्रयानन्दजी ने कहा—"यह तो महान् योगी है। तैलंग बाबा के बाद ऐसा महात्मा दूसरा नहीं देखा। मेरा अनुरोध है कि तुम लोग इनकी बराबर सेवा करते रहना। ऐसे महात्माओं का आविर्भाव कभी-कभी होता है।"

इस मुलाकात के बाद अक्सर स्वामी योगत्रयानन्द हरिहर बाबा के पास आते रहे। जब उन्हें आने में कोई अड़चन होती तब अपने शिष्यों से समाचार प्राप्त करते थे। जब तक स्वामीजी का शरीरान्त नहीं हो गया तब तक वे अपनी ओर से फल-फूल, मिष्टान्न आदि बाबा के पास बराबर भिजवाते रहे।

निधन के पहले उन्होंने रामशरण से कहा—"यह बात याद रखना कि मेरे बाद भी बाबा का ख्याल रखना। इससे तेरा भला होगा। वे क्या हैं, इसे तू अपनी सामान्य दृष्टि से नहीं देख सकता। उनकी सेवा से तेरा परलोक सुधर जायगा।"

इसी प्रकार विजयकृष्ण गोस्वामी जब कभी काशी आते तब हरिहर बाबा से जरूर मिलते थे। कभी-कभी दोनों व्यक्ति सूक्ष्म शरीर में मिलते थे।

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व दशाश्वमेध घाट के पहले डेढ़सी के पुल के समीप एक चौतरे पर खिचड़ी बाबा रहते थे। सिर पर बड़े-बड़े बाल, घनी दाढ़ी, हृष्ट-पुष्ट शरीर, पास ही धूनी और त्रिशूल। आप नित्य दरिद्रनारायण यानी कंगलों को खिचड़ी खिलाया करते थे। कहा जाता है कि खिचड़ी तैयार हो जाने के बाद आप उस कड़ाही को स्पर्श करते थे। इसके बाद अगणित लोगों को खिचड़ी दी जाती थी, पर कभी कमी नहीं हुई। इसी विशेषता के कारण पूरे बनारस में आपकी प्रसिद्धि थी। हरिहर बाबा अक्सर खिचड़ी-वितरण के समय पहुँच जाते और बाबा से बातें करते थे।

नगवा के समीप एक और बाबा रहते थे जिनका नाम था—वीतरागानन्द सरस्वती। जब हरिहर बाबा और सरस्वतीजी आपस में मिलते थे तब एक-दूसरे को 'गुरुदेव' कहकर सम्बोधित करते थे। इसका अर्थ था—दोनों संत एक-दूसरे को अपनी अपेक्षा ज्ञानी और तपस्वी समझते थे, परन्तु इन दोनों साधुओं के भक्त यह समझ बैठे कि हरिहर बाबा के गुरु वीतरागानन्दजी हैं और वीतरागानन्दजी के गुरु हरिहर बाबा हैं। जबकि यह धारणा गलत थी। वास्तव में दोनों गुरुभाई थे। इनके गुरुदेव मानसरोवर पर तपस्या कर रहे थे। हरिहर बाबा के असली गुरु का नाम केवल दो-चार शिष्य ही जानते थे। बाबा ने गुरुदेव का नाम प्रकट करने के लिए उन सभी को मना कर रखा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक दिन स्वामी वीतरागानन्दजी के साथ हरिहर बाबा घूमने निकले तो भड़भाड़ के झंखाड़ में गिर पड़े। तमाम बदन में छोटे-छोटे काँटे चुभ गये। तुरत कई लोग बाबा को उठाने के लिए दौड़े।

तभी एक भक्त ने कहा—"एक दिन स्वामीजी भी इन्हीं झंखाड़ों में गिर पड़े थे। इन झंखाड़ों को नष्ट कर देना ठीक होगा।"

यह बात सुनते ही हरिहर बाबा ने कहा—"इन काँटों से जैसा मुझे कष्ट हुआ, वैसा ही सरस्वती स्वामी को भी हुआ होगा ?"

भक्तों ने कहा—"हाँ, महाराज। तमाम बदन से काँटे निकालने में काफी परेशानी हुई थी।"

कुछ देर बाद हरिहर बाबा ने कहा—"कल से इन्हें कष्ट देने का अवसर नहीं मिलेगा।"

दूसरे दिन स्थानीय लोगों ने देखा--दूर-दूर तक जितने भड़भाड़ के पौधे थे, सब मुरझा गये हैं। लगता था, जैसे रात को दैत्यों ने आकर इन्हें जड़ से उखाड़कर रख दिया है। आसपास के अन्य पेड़ मौजूद थे, पर भड़भाड़ का एक पेड़ भी जीवित नहीं था।

इसी प्रकार की एक और घटना हुई थी जिसकी चर्चा बनारस ही नहीं, बल्कि भारत के विभिन्न प्रान्तों में फैल गयी थी।

महाराजकुमार विजयानगरम् काशी के सर्वजन आदृत पुरुष थे। ब्रिटिश शासनकाल में जितने गवर्नर काशी आते, वे इनके यहाँ ठहरते थे। सामान्य लोगों में विजयानगरम् का महल 'ईजा नगर की कोठी' के नाम से प्रसिद्ध है। शिक्षित जनता क्रिकेट के कुशल खिलाड़ी होने के कारण इन्हें 'वीजी' कहती थी।

महाराजकुमार संतान-हीन थे। कभी-कभी हरिहर बाबा का दर्शन करने आते थे। एक बार शायद उन्होंने अपना दर्द प्रकट किया। बाबा ने कहा—"भण्डारा करो। रामजी की कृपा अवश्य होगी।"

यह आदेश पाकर महाराजकुमार ने दो दिन मालपुए का और दो दिन रसगुल्ले का भण्डारा किया। इसके बाद रानी साहिबा ने महल में भण्डारे का प्रबंध किया जिसमें बाबा से आने का अनुरोध किया गया। बाबा पालकी पर सवार होकर रवाना हुए। आपके साथ भक्तों का काफिला था। असी नाले के पास नागफनी का जंगल था। फलस्वरूप पालकी ढोनेवालों से लेकर अनेक भक्तों के पैरों में नागफनी के काँटे धँस गये। सभी त्रस्त हो उठे।

यह घटना देखकर तुरत बाबा के मुँह से निकल पड़ा—"कल से नागफनी का नाश हो जायगा। इसके बाद किसीको इस पौधे से कष्ट नहीं होगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भड़भाड़ का नाश होते जो लोग देख चुके थे, उन लोगों को विश्वास हो गया कि अब नागफनी का सत्यानाश हो जायगा। दूसरे दिन कौतूहलवश काफी लोग यह दृश्य देखने गये। पता नहीं, रातभर में सारी नागफनी कहाँ गायब हो गयी थी। बिजली की तरह यह समाचार पूरे नगर में फैल गया।

अब एक अर्से बाद लोग घरों में कैक्टस के नाम पर गमलों में लगा रहे हैं।

महाराजकुमार विजयानगरम् के यहाँ नगर के अधिकांश संन्यासी, ब्राह्मण और अब्राह्मणों ने उस दिन भोजन किया। हरिहर बाबा ने रानी साहिबा को आशीर्वाद दिया। दस माह बाद वे संतान की जननी बनीं।

× × ×

मुक्तागाछा के जमींदार काशी-यात्रा करने आये। इनके साथ श्रीश नामक मित्र थे। जमींदार साहब काशी में दो माह रहने के बाद चले गये, पर श्रीश को यहाँ का वातावरण इतना अच्छा लगा कि वह यहीं रह गये। अक्सर हरिहर बाबा का दर्शन करने चले आते थे। अचानक एक दिन बाबा उस पर बिगड़ उठे—"अरे बेवकूफ, तू अभी चला जा यहाँ से।"

वह हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। बाबा ने कहा—"शादीशुदा होकर अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाता। अपनी पत्नी और बच्चों को गाँव में छोड़कर यहाँ तीरथ करने आया है? अब अगर आना तो बाल-बच्चों को लेकर आना, वरना मत आना।"

उसने गिड़गिड़ाकर कहा—"कैसे ले आऊँ बाबा। यहाँ कौन-सा रोजगार करूँगा? उनका पेट कैसे भरूँगा?"

बाबा ने कहा—"यहाँ मिठाई की दुकान खोल ले। रुपये यहाँ से ले जाना।"

बाबा की आज्ञा मानकर वह गाँव चला गया और वापस आकर सोनारपुरा मुहल्ले में मिठाई की दुकान खोली। वह रसगुल्ला इतना बढ़िया बनाता था कि लोग उसे 'रसगुल्ला बाबू' कहने लगे। यह सन् १९४२ ई० की घटना है।

श्रीश बाबू का एक ही लड़का था। अचानक वह हैजे का शिकार हो गया। डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। यह सुनते ही वह पागलों की तरह बाबा के पास आकर रोने लगा। बाबा ने कहा—"तेरा लड़का मरा नहीं है। यहाँ से चरणामृत ले जा और राम-राम जपते हुए उसके मुँह में डाल देना।"

बाबा के आज्ञानुसार उसने तुरत घर आकर बच्चे के मुँह में चरणामृत डाला। उसे विश्वास था कि चरणामृत डालते ही चमत्कार होगा। बाबा के आज्ञानुसार एक नहीं, दो-दो डॉक्टरों को बुलाया गया था। दोनों ने ही कहा कि लड़का मर गया है। इसके बाद बाबा के एक भक्त डॉक्टर श्रीराम बाबू आये। उन्होंने गौर से देखा, वे भी चिन्तित हो उठे। सारी बातें सुनने के बाद दवा दी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीन दिन लड़का उसी हालत में पड़ा रहा। चौथे दिन उसकी नाड़ी क्षीण गति से चलने लगी। श्रीराम बाबू ने कहा—"अब डरने की जरूरत नहीं है। जाओ, बाबा को प्रणाम कर आओ।"

काशी में राधे नवलगढ़िया नामक एक व्यवसायी रहते थे। उनकी पत्नी को तपेदिक हो गया था। डॉक्टरों ने कहा—"अब यह ठीक होनेवाला नहीं है। रोगी को मनचाही चीजें खाने-पीने दें और आराम से रखें।"

डॉक्टरों की इस राय को सुनकर नवलगढ़िया निराश हो गये। अकेले में अक्सर रोते-कलपते थे। बात पत्नी के पास पहुँची। उसने कहा—"एक बार मुझे हरिहर बाबा का दर्शन करा दो। उनके दर्शन से मुझे मुक्ति मिल जायगी।"

पत्नी के अनुरोध पर नवलगढ़िया उसे नाव से बाबा के पास ले आये। नवलगढ़िया को देखते ही बाबा उखड़ गये—"तुम लोगों ने आखिर मुझे समझ क्या रखा है? क्या मैं वैद्य-डॉक्टर हूँ? भगवान् हूँ? हटाओ, यह सब बखेड़ा।"

हरिहर बाबा के शिष्य विश्वनाथ बाबा ने कहा—"प्रभो, यह आपकी ही सन्तान हैं। अपना सुख-दुःख पिता से न कहेंगे तो किससे कहेंगे? अगर आप हम सब पर कृपा नहीं करेंगे तो फिर कौन करेगा?"

कुछ देर बाद मन शान्त होने पर हरिहर बाबा ने कहा—"ले आ, उसे। सामने लेटा दे।"

आज्ञा पाते ही रोगिणी को लोग बाबा की नाव पर ले आये और बाबा के सामने लेटा दिया गया। सहसा हरिहर बाबा की शान्त आँखें बड़ी-बड़ी हो गयीं। रोगिणी के सिर से पैर तक निरीक्षण करने के बाद उन्होंने कहा—"जा बेटी, तेरा सारा रोग दूर हो गया। चिन्ता की बात नहीं। आगे सुविधानुसार भण्डारा दे देना। इससे तेरा मंगल होगा।"

काशी-निवासी शंकरप्रसाद पटना के किसी कॉलेज में अध्यापक थे। उनका मस्तिष्क विकृत हो गया। माता-पिता ने काफी इलाज कराया, ओझाई करायी, पर कोई लाभ नहीं हुआ।

माता सरलादेवी ने हरिहर बाबा के एक शिष्य रामशरणजी से अपनी मुसीबतों की चर्चा की। रामशरणजी ने कहा—"आप अपने लड़के को लेकर हरिहर बाबा के पास जले जाइये। वें साक्षात् बाबा भोलेनाथ हैं। उनकी कृपा होने पर आपका संकट दूर हो जायगा।"

सरलादेवी सीधे हरिहर बाबा के पास आयी। अपने संकट का वर्णन विस्तार से करने के बाद आकुल स्वर में कृपा माँगने लगी। बाबा मौन रहे। उन्होंने इस प्रार्थना पर आँख उठाकर देखा तक नहीं। सरला दुःखी होकर वापस लौट आयी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारी बातें सुनने के बाद रामशरणजी ने कहा—"आप एक बार और बाबा के पास जाइये। उनसे कहियेगा कि मुझे रामशरण ने भेजा है, जो आपको उस पार से इस पार ले आये हैं।"

सरलादेवी दूसरे दिन पुनः हरिहर बाबा के पास आयी और रामशरणजी का उल्लेख करते हुए अपनी सारी व्यथा सुनाई।

हरिहर बाबा कुछ देर मौन रहने के बाद बोले—"नित्य शाम को महावीर का भजन और राम का नाम जपना। इससे तुम्हारा कल्याण होगा।"

सरलादेवी घर आकर बाबा के निर्देशानुसार कार्य करने लगी। पति को उत्सुकता हुई कि आखिर इस बालक के भाग्य में क्या है। एक ज्योतिषी ने बताया कि आपके बालक पर महावीरजी कुपित हैं। कहीं राम-नाम होता था जिसे आपके पुत्र ने बन्द करवा दिया। फलतः महावीरजी नाराज हो गये और उसका मस्तिष्क विकृत हो गया।

सारी बातें सुनने के बाद पति ने नित्य अपने घर रामायण का पाठ प्रारंभ कराया। धीरे-धीरे बालक स्वस्थ होकर पुनः काम करने लगा।

× × ×

सरजू नामक एक व्यक्ति किसी मुकदमे के सिलसिले में काशी आया। कचहरी का काम समाप्त करने के बाद वह हरिहर बाबा का दर्शन करने चल पड़ा। बहुत दिनों से उनकी ख्याति सुनता आया था। बाबा के पास आते ही उसके मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया। फिर घर वापस नहीं गया। एक कौपीन, कमण्डल और लाठी उसके जीवन का सहारा बन गया।

बाबा ने उसे शिष्य के रूप में अपना लिया। केवल इन्हीं सामग्रियों को लेकर वह तीर्थयात्रा पर चला गया। सरजू के बाद कितने लोग आये और चले गये। कुछ दिनों बाद एक दिन बाबा बेचैन होकर बोल उठे—"आज मेरा विश्वनाथ आ रहा है।"

बाबा के पास बैठे लोग इस बात का मतलब नहीं समझ सके। कई घण्टे बाद एक युवक बाबा के पास आया। उसे देखते ही बाबा बोले—"तू आ गया? कब से मैं तेरा इन्तजार कर रहा था।"

कहने के साथ ही उन्होंने उसे अपनी गोद में बैठाया। धीरे-धीरे उसके मस्तक पर हाथ फेरने लगे। थोड़ी देर में उसका वाह्य ज्ञान लुप्त हो गया। तीन घण्टे बाद वह स्वाभाविक स्थिति में आया।

यह दृश्य देखकर पास बैठे भक्तों ने पूछा—"महाराज, यह बालक कौन है?"

बाबा ने प्रसन्न भाव से कहा—"काशी का विश्वनाथ। विश्वनाथ के आने पर ही बाबा सचल होते हैं वरना पत्थर की तरह अचल बने रहते हैं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वनाथ के आने से अनेक भक्तों का उपकार हुआ। लोगों को समझते देर नहीं लगी कि बाबा का यही प्रमुख शिष्य बनेगा। बाबा कभी विश्वनाथ की बात टालते नहीं थे। कुछ ही दिनों में मल्लाहों से नाव खेना सीखकर वह नाव खेने लगा। हरिहर बाबा काशी की भूमि को अत्यन्त पवित्र समझते थे, इसलिए इधर मल-मूत्र-त्याग नहीं करते थे। नित्य विश्वनाथ भोर के समय उस पार बाबा को ले जाते और ले आते थे। धीरे-धीरे बाबा की सारी जिम्मेदारी उसने ले ली।

कुछ दिनों बाद विश्वनाथ के माता-पिता उसे खोजते हुए आये और बाबा से अनुरोध करने लगे कि उनके पुत्र को मुक्ति दे दी जाय।

बाबा ने कहा कि अगर तेरा बेटा है तो मेरे पास क्यों आया? वह अगर बेटा है तो कहीं नहीं जायेगा। चाहे तो कोशिश करके देख ले। विश्वनाथ के माता-पिता अपने लड़के को कई दिनों तक समझाते रहे, पर वह वापस जाने को राजी नहीं हुआ।

बाबा उसे धर्मग्रन्थ पढ़ाने लगे। वह पढ़ता और बाबा सुनते। इसी तरह बाबा विश्वनाथ का निर्माण करते रहे।

× × ×

बाबा पहले बजरे पर नहीं रहते थे। भोर के समय प्रातःक्रिया करने नदी तैरकर आते-जाते थे। एक बार मझौली की रानी बजरे पर सवार होकर गंगा पार कर रही थीं। उन्होंने देखा—उफनते हुए नदी की धार में एक आदमी तैरता हुआ दूसरी ओर जा रहा है। यह देखकर उन्होंने मल्लाहों से कहा—"यह आदमी पागल है क्या? इतनी तेज धार में तैर रहा है। नाव से जाना चाहिए।"

मल्लाहों ने कहा—"महारानीजी, यह काशी के महान् सन्त हैं। नित्य मल-मूत्र त्यागने के लिए उस पार इसी तरह जाते हैं और वापस लौटते हैं। नगवा में जाड़ा, गर्मी, बरसात में नंगे बदन बैठे रहते हैं। ऐसा महात्मा शहर में दूसरा कोई नहीं है। बड़े सिद्ध हैं।"

रानी ने कहा—"तुम बजरा नगवा घाट पर लगाओ। मैं इन महात्मा का दर्शन करूँगी।"

नगवा घाट आकर पैदल ही रानीजी बाबा के समीप आयीं। इन्हें देखते ही बाबा ने पूछा—"माताजी, आपने यहाँ आने का कष्ट क्यों किया?"

रानी माता ने प्रणाम करते हुए कहा—"आपसे मैं एक नम्र निवेदन करना चाहती हूँ; क्या आप स्वीकार करने की कृपा करेंगे? अगर आप अनुमति दें तो मैं इन श्रीचरणों में निवेदन करूँ?"

बाबा ने कहा—"माताजी, आप निर्भय होकर अपनी इच्छा प्रकट करें। मैं आपकी इच्छा की पूर्ति अवश्य करूँगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रानीजी ने हँसकर कहा—"मैं जानती हूँ कि आप गंगा के पवित्र जल को छोड़कर कहीं नहीं रह सकते। आपके निवास के लिए एक नाव अर्पित करना चाहती हूँ ताकि आप आराम से निवास कर सकें।"

बाबा की इच्छा नहीं थी, पर इस अनुरोध को उन्होंने अस्वीकार नहीं किया। आशीर्वाद देते हुए कहा—"तथास्तु, जैसी माताजी की इच्छा।"

इस आज्ञा को पाकर रानीजी ने एक बजरा बनवाकर उस पर बाबा को बैठाया। उस दिन इस उपलक्ष्य में विशाल भण्डारा हुआ। इस घटना के बाद से नित्य भोग के लिए रानीजी सामग्री भेज देती थीं। नियमित रूप से आकर बाबा के निकट श्रद्धा ज्ञापन करती थीं।

एक दिन एक दुशाला लाकर बाबा के शरीर पर डाल दिया। एकाएक बाबा थर-थर काँपने लगे। यह दृश्य देखकर रानी अवाक् रह गयीं—यह क्या? यहाँ तो सब उल्टा हो रहा है। आखिर बात क्या है?

तभी वहाँ एक संन्यासी आकर बैठा। वह सर्दी से बुरी तरह काँप रहा था। तुरत बाबा ने उस शाल को उसे ओढ़ा दिया। संन्यासी का काँपना बन्द हुआ। इधर बाबा का काँपना भी अपने-आप गायब हो गया। अक्सर बाबा इस तरह का चमत्कार दिखाया करते थे।

× × ×

सन् १९२५ ई० की घटना है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुछ उद्दण्ड छात्रों ने उपद्रव मचाया। वे जूता पहनकर बाबा के बजरे पर चढ़ आये। मल्लाहों ने उन्हें डाँटा। फलस्वरूप बात बढ़ती गयी और मारपीट होने लगी। इसके बाद लड़के ईंट-पत्थर फेंकने लगे। बजरे पर बैठे कई लोगों को चोट लगी।

बाबा ने क्षुब्ध होकर कहा—"बजरा खोल दो। अब मैं यहाँ नहीं रहूँगा।"

आदेशानुसार बजरा खोल दिया गया। कुछ दूर असीघाट पर आते ही बाबा ने कहा—"यहीं रोक दो।"

बाबा के साथ हुई दुर्घटना का समाचार चारों ओर फैल गया। लड़कों की उद्दण्डता पर सारा शहर उफनने लगा। मालवीयजी के पास समाचार पहुँचा। वे तुरत आये और लड़कों की ओर से क्षमा माँगने लगे।

बाबा ने अप्रसन्न होकर कहा—"आप इन लड़कों को अच्छी शिक्षा दे रहे हैं। क्या यही देश का कल्याण करेंगे?"

मालवीयजी इस शिकायत का क्या जवाब देते? उन्होंने कहा—"मैं लड़कों के इस अपराध के लिए आपसे क्षमा माँगने आया हूँ। वे आपही की संतान हैं। बच्चों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की उद्दण्डता को माता-पिता क्षमा करते हैं वरना वे पाप-मुक्त कैसे होंगे ? अगर यही ज्ञान उन्हें रहता तो वे ऐसा गलत कार्य क्यों करते ?"

वावा ने कहा—"रामजी ने उन्हें क्षमा कर दिया है, इसलिए मैं कुछ नहीं कहना चाहता। मेरा कहना यही है कि अगर लड़कों को योग्य, सभ्य और सुसंस्कृत न वना सको तो क्यों व्यर्थ में अर्थ और समय वरवाद कर रहे हो ?"

इस वातचीत के वाद मालवीयजी क्षुब्ध भाव से वापस चले आये। इस घटना के तीन दिन वाद ब्रिटिश सरकार की ओर से मालवीयजी को इस आशय की एक नोटिस प्राप्त हुई—जिस जमीन पर आप विश्वविद्यालय बनाने जा रहे हैं, उसे दो महीने के भीतर खाली कर दीजिए। भारत सरकार वहाँ सैनिकों के लिए छावनी वनाने का निश्चय कर चुकी है।

इस नोटिस को पाते ही मालवीयजी के होश उड़ गये। तत्कालीन सभी नेताओं को उन्होंने बुलाकर आवश्यक मीटिंग की। काफी देर तक विचार-विमर्श करने के वाद भी समस्या का हल नहीं निकला।

सदस्यों में एक प्रोफेसर थे जो वावा के भक्त थे। उन्हें सारी घटना मालूम हो गयी थी। उनके मन में शंका उत्पन्न हुई कि कहीं वावा के कोप के कारण यह वात तो नहीं हुई है ? उन्होंने सुझाव दिया कि हम सव चलकर हरिहर वावा से प्रार्थना करें। वे महान् योगी और सिद्ध महात्मा हैं, शायद उनके कारण यह संकट दूर हो जाय। संतों के आशीर्वाद से चमत्कार होते हैं। उस दिन छात्रों ने गलत काम किया था, शायद उसीका यह परिणाम है।

सारी वातें सुनने के वाद वावा ने कहा—"आप लोग इस नोटिस का कोई जवाव न दें। रामजी चाहेंगे तो कल्याण होगा।"

पुनः एक सप्ताह वाद सरकार की ओर से यह सूचना आयी कि पहले भेजी गयी नोटिस रद की जा रही है।

जव यह पत्र मिला तव लोगों को वड़ा आश्चर्य हुआ। पुनः लोग वावा के पास कृतज्ञता प्रकट करने आये और कहा कि हम यहीं घाट पर आपके लिए एक कुटिया बना देना चाहते हैं।

वावा ने कहा—"मुझे कुटिया की जरूरत नहीं है। अगर आप लोग कुछ देना चाहते हैं तो हमारे रामजी के परमभक्त तुलसीदास के नाम पर बने घाट का जीर्णोद्धार करा दें।"

मालवीयजी के प्रयत्न से श्री घनश्यामदास विरला ने उक्त घाट का जीर्णोद्धार कराया था।

वावा के अनन्य शिष्य विश्वनाथ ब्रह्मचारीजी अचानक बुखार से पीड़ित हो गये, साथ ही पेट में असह्य पीड़ा शुरू हो गयी। यह देखकर वावा ने कहा—"शिवाले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाकर रामनगरिया (डॉ० गोपालदास गुप्त, जो कि रामनगर स्थित काशीराज अस्पताल के डॉक्टर थे।) को दिखाओ। अगर वह कोई दवा दें तो उसे लेकर यहाँ चले आना।"

विश्वनाथ ब्रह्मचारी रिक्शे से सोनारपुरा स्थित डॉक्टर दासगुप्ता के दवाखाने में आये। उन्होंने दवा दी जिसे लेकर वे बाबा के निकट आये।

बाबा ने कहा—"रामनगरिया ने जो दवा दी है, उसे गंगा में फेंक दे। डुबकी लगाकर गंगा से थोड़ी मिट्टी निकालकर खा ले और रामजी का नाम लेकर थोडा-सा गंगा-जल पी ले।"

विश्वनाथ ब्रह्मचारी ने निर्देशानुसार वही किया। थोड़ी देर बाद जाड़ा देकर तेज बुखार आया। बाबा ने कहा—"उसे कम्बल ओढ़ा दो और दो आदमी कसकर पकड़े रहो। जब उसका काँपना बन्द हो जाय तब उसे मेरे पास लाना। वह उठकर बैठने न पाये, इसका ख्याल रखना।"

एक घण्टे बाद कंपन बन्द हुआ तब विश्वनाथ ब्रह्मचारी बाबा के पास आये और कहा—"बुखार और जाड़ा दोनों गायब हो गया।"

दूसरे दिन डॉक्टर दासगुप्ता अपने मरीज को देखने आये तो पता चला कि विश्वनाथ ब्रह्मचारी नहाने गये हैं। डॉक्टर ने कहा– "यह क्यों ? यह बुखार तो एक दिन में अच्छा होनेवाला नहीं है। कैसे अच्छा हो गया ?" फिर क्षणभर बाद बोले—"शायद बाबा की कृपा से यह संभव हुआ है।"

बाद में उन्हें सारी कहानी बतायी गयी तब उन्होंने कहा—"मेरा अनुमान सही निकला।"

× × ×

रामतरण के भाई अपनी नौकरी के लिए परेशान थे। इंटरव्यू दे चुके थे, पर अभी तक कोई सूचना नहीं आयी। व्याकुल होकर बाबा के पास आकर बोले—"प्रभो! मेरी नौकरी कब तक लगेगी ? बड़ा चिन्तित हूँ।"

हरिहर बाबा ने कहा—"चिन्ता करने की जरूरत नहीं। आज और शीघ्र इसकी सूचना तुम्हें मिलेगी।"

बाबा के दरबार से घर आते ही देखा कि पोस्टमैन मिलिटरी आफिस से पत्र को लेकर खड़ा है। पत्र में लिखा था—एक सप्ताह के भीतर अपनी छावनी पर आ जायें।

पत्र पाते ही परेशचन्द्र मजुमदार तुरत बाबा के पास आये और चरण-रज मस्तक से लगाते हुए कहा—"आपकी असीम कृपा मुझ पर है। अब मुझे लड़ाई पर जाने की अनुमति दें।"

बाबा ने कहा—"ठीक है बेटा। जाओ, हमारी मुलाकात फिर होगी।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी प्रकार की एक घटना श्री राम बाबू की पत्नी के साथ हुई। एक दिन वे आकर बोलीं—"बाबा, मेरा लड़का दफ्तर की परीक्षा में फेल हो गया है। फलस्वरूप उसे तरक्की नहीं दी गयी।"

बाबा ने पूछा—"क्या अब पुनः परीक्षा नहीं होगी ?"

"अब तो छः महीने बाद होगी।"

बाबा ने कहा—"घबड़ाने की बात नहीं है। परीक्षा के कुछ दिन पहले मुझे आकर बता देना। सब रामजी की कृपा से ठीक हो जायगा।"

परीक्षा के पूर्व श्री राम की पत्नी ने बाबा को पत्र लिखा। परीक्षा के बाद लड़के को प्रमोशन मिल गया।

× × ×

सन् १९४८ ई० में भयंकर बाढ़ आयी थी। नगर में नाव द्वारा आवागमन हो रहा था। सरकारी आदेश जारी हुआ कि कोई भी नाव उस पार नहीं जायगी। यात्रियों से भरी कई नौकाएँ डूब गयी थीं। चारों ओर जल-पुलिस का पहरा लग गया। तुलसीघाट पर कैम्प लग गया। पुलिस के बड़े-बड़े अफसर चारों ओर देखरेख कर रहे थे।

रात के तीन बजे बाबा की नाव उस भयंकर बाढ़ में उस पार रवाना हुई। बाबा निवटने जा रहे थे। विश्वनाथ ब्रह्मचारीजी नाव चला रहे थे।

"कौन जा रहा है ?" सिपाही गरजा।

नाव से कोई जवाब नहीं आया। अफसर ने गोली चलाने का आदेश दिया। तभी एक पुलिस अफसर सलाम करते हुए बोला—"हरिहर बाबा की नाव है। वे नित्य उस पार निवटने जाते हैं। ऐसे महात्मा पर गोली न चलायें।"

उस पार निवटने के बाद बाबा वापस आने लगे। बीच गंगा में आकर विश्वनाथ ब्रह्मचारी ने कहा—"अब डाँड़ चल नहीं रहा है। कैसे खेऊँ ? नाव उस पार लगाना कठिन हो रहा है।"

हरिहर बाबा ने कहा—"अब तुझे खेने की जरूरत नहीं। मेरी बगल में आकर बैठ जा। यहाँ बैठकर राम-राम जप।"

विश्वनाथ ब्रह्मचारी बाबा के आज्ञानुसार डाँड़ छोड़कर राम-राम जपने लगे। नाव धीरे-धीरे बहती हुई असीघाट की ओर बढ़ गयी।

बीच गंगा के भँवर में जब नाव चक्कर काट रही थी और विश्वनाथ ब्रह्मचारी नाव खेने में लाचार हो गये तब इस पार खड़ी पुलिस ने कहा—"आज बाबा की जल-समाधि होगी।" थोड़ी देर बाद उन लोगों ने देखा कि डाँड़ खेनेवाला कोई नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थोड़ी देर बाद जब नाव किनारे लगी तब जिलाधीश क्लेयर तथा डे साहब नाव पर आये और बाबा के चरणों पर अपनी टोपी रख दी।

× × ×

पौष मास। रात के दो बजे एक माताजी आयीं। लाल किनारे की साड़ी पहने थीं। आप प्रत्येक चतुर्दशी के दिन आती हैं और हरिहर बाबा के सिर पर पानी डालती हैं।

उस दिन विश्वनाथ ब्रह्मचारी नाराज हो गये। फटकारते हुए बोले—"इस कड़ाके की सर्दी में आप बाबा के सिर पर पानी डाल रही हैं?"

तुरत हरिहर बाबा विगड़ते हुए बोल उठे—"तुझसे क्या मतलब है कि कौन क्या करता है? जब तेरे सिर पर कोई पानी डाले तब विगड़ना।" कुछ देर बाद पुनः बोले—"जानता है, कौन आया था?"

विश्वनाथ ब्रह्मचारी ने चौंककर उस ओर देखा—माताजी अंतर्धान हो चुकी थीं।

श्री गोविन्दप्रसाद मुखोपाध्याय बाबा के एक पुराने भक्त थे। बाबा के अनेक चमत्कार वे देख चुके हैं। अपने शरीरान्त के दो माह पूर्व बाबा गंगाजल के अलावा कुछ नहीं खाते-पीते थे। इधर बाबा के तिरोधान के ठीक चार दिन पूर्व गोविन्दप्रसाद की इच्छा हुई कि बाबा को भोग दें। वे पूरी, तरकारी, मिठाई आदि लेकर आये।

विश्वनाथ ब्रह्मचारी ने कहा—"यह सब आप क्यों लाये हैं? आप तो जानते ही हैं कि आजकल बाबा कुछ नहीं खाते।"

अपनी गलती समझकर गोविन्दप्रसाद चुप रह गये। बाबा के पास आकर बैठे। इसके बाद जब गोविन्द गीत गाने लगे तब बाबा उठकर बैठ गये और विश्वनाथ ब्रह्मचारी से कहा—"गोविन्द मेरे लिए भोग लाया है, लाओ यहाँ।"

अपना भोग बाबा को खाते गोविन्द की आँखों से अविरल अश्रुपात होने लगा।

× × ×

बाबा किसीको मंत्र नहीं देते थे। आगे चलकर उन्होंने यह भार विश्वनाथ ब्रह्मचारी को सौंप दिया। दिन पर दिन विश्वनाथ ब्रह्मचारी का महत्त्व बढ़ते देख कुछ शिष्य मन ही मन जलने लगे। बाबा को यह रहस्य समझते देर नहीं लगी। एक दिन उन्होंने अपना चमत्कार दिखाया।

नित्य नाव पर बाहर से भोजन की सामग्री आती थी जिसे सभी संन्यासी खाते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि कोई भक्त भोग-सामग्री लेकर नहीं आया। शाम के समय बाबा ने स्नान करने के पश्चात् राम का नाम लेकर गंगाजल पान किया। विश्वनाथ ब्रह्मचारी ने भी वैसा ही किया। इस तरह दो दिन उपवास में बीत गये।

संन्यासी शिष्यों ने कहा—"गुरुदेव उपवास कर रहे हैं, यह ठीक नहीं है। हम सब मधुकरी के लिए चलें।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबा ने कहा—"मेरे लिए किसीको चिन्ता करने की जरूरत नहीं। तुम लोगों को जहाँ आराम मिले, वहाँ जा सकते हो।"

विश्वनाथ और सरजू को छोड़कर सभी चले गये। पाँचवें दिन सरजू ने कहा—"प्रभो, मैं कभी विश्वनाथ महाराज पर नाराज नहीं हुआ।"

बाबा ने कहा—"यह बात मैं जानता हूँ। तू एक काम कर। नाव से उतरकर घाट पर बैठ जा। तुझे भीख माँगने के लिए कहीं जाना नहीं पड़ेगा। पास ही बैठ जायेगा तो खाने लायक रकम-भोजन मिल ही जायगा।"

बाबा के आज्ञानुसार सरजू स्वामीघाट पर बैठ गये। थोड़ी देर बाद एक महिला आयी और उन्हें पूरी और तरकारी दे गयी। बाद में बाबा ने सभी को बुलाकर कहा कि अब तुम लोग विश्वनाथ को पहचान गये होगे।

बाबा ने हमें शिक्षा देने के लिए यह खेल किया था, इस बात को समझते ही सभी लोगों ने बाबा के श्रीचरणों में सिर रखते हुए क्षमा-प्रार्थना की।

× × ×

पण्डित गोपीनाथ कविराजजी ने हरिहर बाबा के बारे में लिखा है—"इस दिगम्बर महापुरुष का दर्शन करने के लिए मेरे गुरुदेव श्री श्री विशुद्धानन्द परमहंस जाया करते थे। उन दिनों मैं उनके साथ जाया करता था। योगत्रयानन्द (शिवराम किंकर) भी बाबा से श्रद्धा करते थे। हरिहर बाबा सर्वदा 'शिव-शिव', 'राम-राम' कहा करते थे। काशी और गंगा के प्रति उनकी निष्ठा अटल थी। नित्य शौचादि के लिए वे प्रातःकाल तथा सायंकाल नियमित रूप से गंगा पार कर रामनगर जाया करते थे। जीवन के अन्तिम काल तक इस नियम का पालन करते रहे।"

हरिहर बाबा का योगेश्वर प्रभाव मनुष्येतर प्राणियों पर भी था, उसका एक मनोज्ञ उदाहरण दे रहा हूँ—

एक दिन नगवा में शोरगुल मच गया कि काशी-नरेश का एक वृद्ध हाथी पागल होकर रामनगर-क्षेत्र में बड़ा उपद्रव कर रहा है। लोग चिंतित हो उठे। इसके बाद वह हाथी चिंघाड़ता हुआ नदी में कूद पड़ा। वहाँ से तैरता हुआ वह सीधे तुलसीघाट पर आया जहाँ हरिहर बाबा इष्ट-ध्यान में निमग्न थे। बाबाजी निश्चल और बाह्यज्ञानरहित थे। लोग भय से दूर भाग गये और भयभीत नेत्रों से देखने लगे। सभी लोगों ने भयभीत दृष्टि से देखा कि वह पागल हाथी हरिहर बाबा के पास जाते ही इन्द्रजाल की तरह क्षणभर में शान्त हो गया और आज्ञाकारी नौकर की तरह खड़ा हो गया। लगा, जैसे हरिहर बाबा की प्रेम-महिमा में बन्दी हो गया है, हाथी का पशुत्व दूर हो गया है, वह अपनी सत्ता खो चुका है। इस घटना की कहानी काशी की जनता बहुत दिनों तक कहती रही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिस प्रकार पहले तैलंग स्वामी काशीवास करते हुए जनता की दृष्टि में महापुरुष के रूप में गण्य हुए थे, ठीक उसी प्रकार हरिहर बाबा भी लोगों का चित्ताकर्षण करते रहे। यहाँ तक कि तैलंग स्वामी के स्थान की पूर्ति इस शताब्दी में वे ही करते रहे।

कीर्त्तन-पाठ (योगवासिष्ठ और रामायण) उनके सामने नियमित होता रहा। कठोर तपश्चर्या और कृच्छ्र-साधना के कारण हरिहर बाबा का शरीर खराब हो गया। कभी-कभी भक्तों को शरीर छोड़ देने की बात कहा करते थे।

उस समय आपके भक्त कहते थे—"बाबा, आप इच्छामय हैं, स्वतंत्र ईश्वर स्वरूप। अगर हम सभी के लिए शुभ और कल्याण चाहेंगे तो अभी काफी दिनों तक रहेंगे।"

इसके उत्तर में वे कहते—"मैंने अपनी सारी इच्छाओं को रामजी के चरणों में समर्पित कर दिया है।" फिर कोमल शब्दों में कहते—"जो निवेदन किया है, क्या उसे वापस लिया जा सकता है ?"

भक्तों ने कहा—"आपके आश्रय में हम अत्यन्त निर्भरता के साथ शान्तिपूर्वक विश्राम कर रहे हैं। आप हमें छोड़कर कभी न जायँ।"

उन्होंने उत्तर दिया—"तुम सब जीवभाव छोड़कर रामजी के परम स्वरूप उस परमात्मा की याद को स्मरण करते रहो जो रामजी सभी सृष्टि में ओतप्रोत रूप में विराजमान हैं। सभी के भीतर, सब कुछ के भीतर रामजी का सान्निध्य प्रत्यक्ष करने का प्रयत्न करो। परमधाम का चिन्तन करो। वहाँ तुम्हारे साथ, मेरे साथ तुम लोगों का कभी किसी समय विच्छेद नहीं रहेगा।"

अन्तरंग सेवकों को एकान्त में बुलाकर उन्होंने कहा—"वृक्ष काफी जीर्ण-शीर्ण हो गया है अर्थात् पुराना हो गया है। इसे अधिक दिनों तक रखा नहीं जा सकता।"

इस बातचीत के साथ उनका उस पार जाकर शौच करना बन्द हो गया। फलतः उनके सामने कसोरा रख दिया जाता था जिसमें वे मल-मूत्र त्याग करते थे। सारी सामग्री विश्वनाथ ब्रह्मचारी बाबा के आज्ञानुसार उस पार ले जाकर फेंक आते थे।

एक दिन रात को बाबा ने विश्वनाथ को जगाकर कहा—"तुझें जो कुछ पूछना या जानना है, मुझसे पूछ ले। मेरा समय हो गया है।"

यह बात सुनते ही विश्वनाथ ब्रह्मचारी फफक-फफककर रोने लगे। बाबा ने कहा—"बेटा, यह शरीर त्याग देने पर भी मैं तेरे शरीर में रहूँगा। इसके लिए अफसोस मत कर।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरे दिन ब्रह्मचारीजी ने सभी लोगों को समाचार दिया। अधिकांश शिष्य और भक्त आ गये। इस प्रकार एक सप्ताह बीत जाने पर बाबा ने रानी सोवेल तथा महाराज सरगुजा और विशिष्ट लोगों के सामने विश्वनाथ ब्रह्मचारी को अपनी गद्दी पर बैठाया।

माला-चन्दन से विश्वनाथ ब्रह्मचारीजी का अभिषेक किया गया। बाबा ने कहा—"संसार की भलाई के लिए मैं आज अपनी सम्पूर्ण शक्ति विश्वनाथ को दे रहा हूँ। इसके अलावा और किसे देता? विश्वनाथ के अलावा यह बोझ अन्य कोई सँभाल नहीं सकता।"

इतना कहने के बाद काँपते हाथ को उठाकर बाबा विश्वनाथजी के मस्तक पर हाथ रखते हुए बोले—"मेरा विश्वनाथ, तू राजा विश्वनाथ, तू स्वयं काशी विश्वनाथ है। तू नाना प्रकार के कष्टों को सहते हुए एक साल तक धैर्य धरे रहना। इसके बाद विश्व-शान्ति के लिए काम करना।"

बाद में उसी दिन बाबा ने कहा—"आज रात को यह शरीर छोड़ दूँगा। किसीको कुछ पूछना हो तो पूछ ले।"

१ जुलाई, १९४९ ई० के दिन बाबा ने शरीर त्याग दिया। हरिहर बाबा की तरह अन्य कोई सर्वमान्य महात्मा काशी में नहीं हुआ। ●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साईं बाबा

नानासाहब चांदोरकर जामनेर में तहसीलदार पद पर कार्य कर रहे थे। एक दिन उनके यहाँ उनकी लाड़ली बेटी मैनाताई आयी। उसके आने की सूचना पहले से ही मिल गयी थी। असल में वह अपने पिता के यहाँ प्रसव के लिए आयी थी। खानदेश में जामनेर एक छोटा-सा गाँव है जहाँ नगरीय सुविधाओं का बड़ा अभाव था। एक अर्से के बाद बेटी के आगमन से जहाँ लोगों में प्रसन्नता थी, वहीं इस बात की चिन्ता थी कि लड़की पराये घर की बहू है, उसकी देखरेख में कोई असुविधा न हो।

धीरे-धीरे प्रसव के दिन करीब आ गये। दर्द बढ़ता गया। प्रसव होने के लक्षण दिखाई नहीं दे रहे थे। अवस्था गंभीर होने लगी। नानासाहब की चिन्ता बढ़ी, घर के लोग परेशान हो उठे। उन्हें भय हुआ कि कहीं लड़की से हाथ धोना न पड़े।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नानासाहब शिरड़ी के साईं बाबा के भक्त थे। दोनों इस संकट से मुक्ति पाने के लिए एकाग्र चित्त से उनका स्मरण करने लगे।

शिरड़ी में बैठे साईं बाबा को तुरत ज्ञात हो गया कि उनका कोई भक्त संकट में है और व्याकुल स्वर में उन्हें स्मरण कर रहा है। अपनी अतीन्द्रिय-शक्ति से उन्होंने सब कुछ जान लिया।

ठीक उसी समय एक साधु खानदेश जाने के लिए तैयारी कर रहा था। उसे बुलाकर साईं बाबा ने कहा—"रामगिरि बुवा, आप खानदेश की ओर जा रहे हैं। एक काम करें। मार्ग में जामनेर में कुछ देर के लिए ठहर जाइयेगा। वहाँ नानासाहब चांदोरकर नामक एक सज्जन हैं। आपको खोजने में परेशानी नहीं होगी। वे वहाँ के तहसीलदार हैं। उन्हें यह भभूत और आरती दे दीजिएगा।"

रामगिरि बुवा ने विनय के साथ निवेदन किया—"बाबा, मेरे पास इस वक्त केवल दो ही रुपये बचे हैं जो रेल-किराये में समाप्त हो जायँगे।"

बाबा उनकी कठिनाई को समझते हुए हँसकर बोले—"आगे की चिन्ता तुम्हें करने की जरूरत नहीं है। अपने-आप सारी समस्या हल हो जायगी, पर यह भभूत नानासाहब तक पहुँचना जरूरी है।"

रामगिरि बुवा बाबा की अलौकिक शक्ति से अच्छी तरह परिचित थे, इसलिए बिना कोई तर्क किये, दोनों वस्तुओं को लेकर वे स्टेशन की ओर रवाना हो गये। अपने गन्तव्य स्टेशन जलगाँव पर जब उतरे, उस समय रात के दो बज चुके थे। अब इस वक्त आगे पैदल जाना या सवारी की तलाश करना व्यर्थ समझकर वे प्लेटफार्म पर आराम करने लगे।

एकाएक उन्हें लगा जैसे कोई उन्हें पुकार रहा है। गौर से सुनने पर उन्होंने सुना—"शिरड़ी का रामगिरि बुवा कौन है—शिरड़ी का रामगिरि बुवा कौन है ?"

रामगिरि को आश्चर्य हुआ कि इस अपरिचित स्थान में और आधी रात को पुकारनेवाला कौन है ? उन्होंने आवाज लगानेवाले व्यक्ति से अपना परिचय देते हुए कहा—"मगर आप कौन हैं ? मेरा नाम कैसे जानते हैं ?"

इस प्रश्न को सुनकर आगन्तुक व्यक्ति ने कहा—"मुझे नानासाहब ने भेजा है। उन्होंने कहा है कि शिरड़ी से रामगिरि बुवा आ रहे हैं। रात के वक्त उन्हें यहाँ तक आने में परेशानी होगी। सो तुम ताँगा लेकर चले जाओ। उनका यहाँ जल्द आना आवश्यक है। गाड़ी आने पर आवाज लगाओगे तो तुम्हें मिल जायँगे।"

चूँकि नानासाहब ने उनके लिए ताँगा भेजा है अतएव रामगिरि तुरत रवाना हो गये। सवेरे के समय ताँगा रोककर ताँगेवाले ने कहा—"बाबाजी, थोड़ा जलपान कर लीजिए।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तांगेवाले की शक्ल, दाढ़ी, मूँछें देखकर रामगिरि को संदेह हुआ कि यह मुसलमान है। भला इसके हाथ का जलपान कैसे कर सकता हूँ। शायद वह व्यक्ति रामगिरि के मन के ऊहापोह को समझ गया। बोला—"महाराज, मैं गढ़वाली क्षत्री हूँ, मुसलमान नहीं। यह देखिये, यज्ञोपवीत।"

रामगिरि उसकी बात पर लज्जित हो उठे और फिर बिना संकोच जलपान करने बैठ गये। जलपान करने के बाद पुनः ताँगा जामनेर की ओर चल पड़ा। गाँव की सीमा के समीप आकर रामगिरि को लघुशंका महसूस हुई। वे नीचे उतरकर कुछ दूर आड़ में चले गये। लौटकर जब आये तो देखा—ताँगे के साथ-साथ ताँगेवाला भी गायब है। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। गनीमत यह रही कि साथ में कोई सामान नहीं था वरना मुसीबत आ जाती।

राह चलते लोगों से पता पूछकर तहसील में आये और वहाँ से नानासाहब के घर आये। उन्होंने बताया कि मैं शिरड़ी से आ रहा हूँ। साईं बाबा ने आपके लिए भभूत और यह आरती भेजी है।

उस समय घर में मैंनाताई की हालत काफी नाजुक थी। नानासाहब के मन में आया कि शायद मेरी बेटी के लिए यह सामग्री बाबा ने भेजी है। तुरत उन्होंने भभूत को पानी में घोलकर मैंनाताई को पिलाया। इसके बाद आरतीवाला कागज लेकर पाठ करने लगे। थोड़ी देर में सूचना आयी कि प्रसव हो गया। जच्चा-बच्चा सकुशल हैं।

घबड़ाहट और मानसिक परेशानी के कारण अब तक नानासाहब का ध्यान शिरड़ी से आये रामगिरि की ओर नहीं गया था। एक बहुत बड़ी मुसीबत के हल हो जाने के बाद जब उनका तनाव कम हुआ तब उन्होंने रामगिरि से पूछताछ की।

रामगिरि ने शिकायत के लहजे में कहा—"आपने बड़ी कृपा की जो आधी रात को स्टेशन पर ताँगा भेजा। वरना मैं यहाँ शायद दोपहर के पहले न आ पाता, मगर आपका ताँगेवाला विचित्र निकला। गाँव के पास आकर न जाने कहाँ गायब हो गया।

नानासाहब ने कहा—"ठहरिये, ठहरिये। यह आप क्या कह रहे हैं? मुझे क्या मालूम कि बाबा ने आपको भेजा है। मैंने किसी ताँगेवाले को नहीं भेजा था। मैं तो अपनी बेटी को लेकर परेशान था। लगता है, यह भी बाबा का चमत्कार था।"

बाद में उस ताँगेवाले की काफी खोज की गयी, पर वह जामनेर के इलाके में कहीं दिखाई नहीं दिया।

इसी प्रकार बम्बई में रामलाल नामक एक व्यक्ति रहता था। उसने न कभी साईं बाबा को देखा था और न उनका नाम सुना था। संभवतः साईं बाबा को उसकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जरूरत थी। एक दिन उसने स्वप्न में देखा कि एक फकीर उसे अपने निकट बुला रहा है। उसकी समझ में नहीं आया कि यह कौन है, क्यों बुला रहा है ? कहाँ रहता है ? इसे कभी देखा भी नहीं। बाद में सपना समझकर वह अपने काम में लग गया।

एक दिन एक दुकान में सामान खरीदने गया तो देखा—वहाँ वही चित्र टँगा है जिसे वह स्वप्न में देख चुका है। कुछ देर एकटक चित्र देखने के बाद उसने दुकानदार से पूछा—"यह किसका चित्र है ?"

दुकानदार ने कहा—"साईं बाबा का।"

रामलाल ने पूछा—"यह बाबा कहाँ रहते हैं ? क्या अभी जीवित हैं ?"

दुकानदार ने विस्मय से कहा—"तुमने अभी तक साईं बाबा का नाम नहीं सुना है ? अरे, यह बड़े सिद्ध महात्मा हैं। शिरडी में रहते हैं। नासिक के आगे मनमाड़ स्टेशन है न ? उसी लाइन में कोपरगाँव स्टेशन है। वहाँ उतरकर किसीसे पूछ लोगे तो शिरड़ी गाँव का पता बता देगा। बस, चले जाओ। मैं तो कई बार गया हूँ।"

रामलाल ने सोचा—शायद साईं बाबा सिंधी सन्त हैं। उसी तरह की वेश-भूषा है और नाम भी है—साईं बाबा। सिंधियों में लोग एक-दूसरे को साईं कहते हैं। कई दिनों बाद रामलाल शिरड़ी आया और बाबा का भक्त बन गया।

× × ×

उच्चकोटि के साधक अपनी अतीन्द्रिय-शक्ति के माध्यम से योग्य शिष्यों को इस तरह बुला लेते हैं। सर्वश्री श्यामाचरण लाहिड़ी, विजयकृष्ण गोस्वामी तथा लोकनाथ ब्रह्मचारी जैसे योगियों ने अपने शिष्यों के साथ ऐसा ही चमत्कार किया था। हठयोग-क्रिया से किसी भी व्यक्ति के मन को चंचल करके बुलाया जा सकता है। जो कार्य यांत्रिक शक्ति नहीं कर पाती, उसे अतीन्द्रिय-शक्ति कर दिखाती है। परमहंस रामकृष्ण इच्छित व्यक्ति को चुम्बक की तरह आकर्षित कर लेते थे। यहाँ तक कि सही आधार के पीछे वे स्वयं व्याकुल हो उठते थे।

शिरड़ी के साईं बाबा के बारे में पूर्ण जानकारी कोई प्राप्त नहीं कर सका, जिस प्रकार बाबा रणछोड़दास के बारे में यह पता लगाना कठिन था कि कब, कहाँ उन्होंने जन्म ग्रहण किया था ? आखिर चार-पाँच सौ वर्ष तक कैसे जीवित रहे ? ठीक उसी प्रकार शिरड़ी के साईं बाबा के बारे में यह जानकारी प्राप्त नहीं हुई कि वे हिन्दू थे या मुसलमान। वे अक्सर कहा करते थे—अल्लाह रक्षा करेगा। भगवान् तेरा भला करेगा। श्री प्र० सुं० आगासकर ने इस बारे में लिखा है—"साईं महाराज हिन्दू थे या मुसलमान, यह एक पहेली बनी रही। जिन लोगों का ख्याल था कि बाबा मुसलमान हैं, उन लोगों ने बाबा को हिन्दू-ब्राह्मण जैसा आचरण करते देखा है और जो लोग हिन्दू समझते रहे, उन्होंने यवनों जैसा आचरण करते देखा है। किसीको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी उनके जन्मकाल या धर्म का पता नहीं लग सका है। उन्होंने अपने हिन्दू भक्तों को रामनवमी मनाने की आज्ञा दी तो मुसलमानों को उर्स। जन्माष्टमी के अवसर पर स्वयं खड़े होकर मल्ल-युद्ध, नृत्य आदि का आयोजन करते थे। ईद पर मुसलमान आकर उनके निवास-स्थान पर नमाज पढ़ते थे। हिन्दुओं की प्रथा के अनुसार उनका कर्ण-छेदन हुआ था। जिस मस्जिद में वे रहते थे, उसका नाम द्वारका-माई रखा था। वहाँ घंटा टँगवाया, धूनी सुलगायी और अग्नि-पूजा प्रारंभ की। चक्की पर आटा पीसना, शंख, घंटा-घड़ियाल बजाना, भजन, पूजन, जप करना, शास्त्रीय विधि से देवी-देवताओं की पूजा करवाना आदि तो हिन्दू-धर्म के चिह्न हैं। दूसरी ओर उनकी मुसलमानों जैसी वेश-भूषा और भाषा भक्तों में संदेह उत्पन्न करती थीं।

इस बारे में साईं बाबा के जीवितकाल में कई लोगों ने प्रश्न पूछे थे, परन्तु साईं बाबा ने इस रहस्य को कभी प्रकट नहीं किया। यहाँ तक कि उनके निधन के पश्चात् इस गूढ़ रहस्य को प्रामाणिक ढंग से खोजने का प्रयास किया गया, पर किसीको सफलता नहीं मिली। संत कबीर और नामदेव महाराज की भाँति वे भी हिन्दू तथा मुसलमानों को समान रूप से प्यार करते थे।

साईं बाबा को कुछ लोग साईंनाथ कहते थे, इस दृष्टि से उन्हें महाराष्ट्र के नाथ-सम्प्रदाय का समझा जाता था। शिरड़ी के समीप नासिक में नाथ-सम्प्रदाय के महान् संत गहिनीनाथ रहते थे जिन्होंने संत ज्ञानेश्वर के बड़े भाई निवृत्तिनाथ को बीज-मंत्र दिया था। निवृत्तिनाथ के शिष्य संत ज्ञानेश्वर महाराज थे जिनकी समाधि पूना स्थित आलन्दी में है।

× × ×

सुश्री काशीबाई कानिटकर का विश्वास था कि बाबा तांत्रिक हैं और जब काशीबाई बाबा के पास गयीं तो उन्होंने कहा—"आँखें खोलकर देखो, मैं असली ब्राह्मण हूँ। सच्चा ब्राह्मण कभी जादू-टोना नहीं करता। इस ब्राह्मण की पवित्र द्वारकामाई में बुरे कर्म करनेवाले प्रवेश नहीं कर सकते।"

बाबा के एक प्रिय भक्त थे—म्हालसापति। इन्होंने भी यही प्रश्न किया था, तब बाबा ने कहा—"मैं ब्राह्मण-कुल में उत्पन्न हुआ हूँ। मैं आरंभ में 'पाथरी' में रहता था। उसके पश्चात् मेरी माँ ने मुझे एक फकीर को सौंप दिया।"

साईं बाबा के एक भक्त नानासाहब थे जिनका जिक्र प्रारंभ में किया गया है। उन्होंने लिखा है कि बाबा जन्म से हिन्दू थे, परन्तु उनके गुरु फकीर थे।

एक बार पाथरी-निवासी एक सज्जन बाबा का दर्शन करने आये थे। उस समय बाबा पाथरी के बारे में उत्सुकता के साथ तरह-तरह के सवाल कर रहे थे। इससे स्पष्ट था कि बचपन में या अन्य समय वे पाथरी में अवश्य रहते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनके गुरु फकीर थे, इसे बाबा ने कभी स्वीकार नहीं किया, बल्कि यह कहा है कि मेरी माँ ने फकीर को सौंप दिया था जैसे कबीर साहब को नीरू जुलाहे ने पाला-पोसा था। ठीक इसी प्रकार साईं बाबा का पालन-पोषण किसी फकीर के यहाँ हुआ होगा।

अपने गुरु के बारे में बाबा ने एक अद्भुत घटना का जिक्र किया है—"हम चारों सहपाठी जब धर्मग्रंथों का अध्ययन कर रहे थे तब एक दिन ब्रह्मज्ञान की खोज में एक घने भयंकर जंगल की ओर चल पड़े। मार्ग में एक वनवासी मिला। उसने हम लोगों से कहा—"इस जंगल में आप लोग अपने साथ एक पथ-प्रदर्शक रख लें तभी अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर सकेंगे।"

उसने विनम्रतापूर्वक निवेदन करते हुए हमारा यथोचित सत्कार किया। लेकिन हम उसकी उपेक्षा कर जंगल के भीतर चले गये। काफी देर इधर-उधर भटकने के बाद हम पुनः वहीं आये जहाँ हमने उस वनवासी को खड़ा पाया।

उसने पुनः अपनी बातों को कहा—"आप लोग हठ न करें। पथ-प्रदर्शक के बिना इस बियाबान जंगल में आपको सही मार्ग नहीं मिलेगा। भूखा रहने पर कोई भी कार्य पूर्ण नहीं होता। परमात्मा की प्रेरणा से ही हम मिलते हैं। सामने परोसी थाली को ठुकराना नहीं चाहिए। परोसी हुई थाली अगर सामने आती है तो उसे अपना सौभाग्य समझना चाहिए। अब आप लोग मेरे साथ मेरी कुटिया में चलें और भोजन करके मुझे कृतार्थ करें। इसके बाद अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गन्तव्य मार्ग पर चले जायें।"

मेरे तीनों मित्रों ने उसके इस आमंत्रण की परवाह नहीं की और आगे बढ़ गये। मैं भूख और प्यास से व्याकुल हो गया था। मैंने इस बात पर तनिक भी विचार नहीं किया कि मेजबान जंगली छोटी जाति का आदमी है। उसके द्वारा परोसी गयी रोटी, दाल, तरकारी भरपेट भोजन किया। उसी क्षण मुझे ऐसा आभास हुआ, मानो मेरा अंतर्मन दिव्य ज्ञान से दैदीप्यमान हो उठा है। मेरे गुरुदेव भी अकस्मात् मेरे सामने आकर खड़े हो गये हैं। सारी बातें सुनने के बाद उन्होंने कहा—"मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें मार्ग दिखाता हूँ। लेकिन मुझ पर पूर्ण विश्वास करते हुए मेरी सभी आज्ञाओं का पालन करना पड़ेगा।"

इस शर्त को सहर्ष स्वीकार करते हुए मैं उनके पीछे-पीछे चल पड़ा। आगे घनघोर भयंकर जंगल मिला। एक गहरे कुएँ के पास आकर गुरुदेव ने मेरे पैर कसकर बाँध दिये और मुझे उस कुएँ में उल्टा टाँग दिया। चार-पाँच घंटे के बाद गुरुजी कहीं से वापस आये और मुझे बंधन-मुक्त करने के पश्चात् पूछा—"क्यों, अब कैसे हो ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैंने नम्रतापूर्वक कहा—"बहुत अच्छा हूँ। मैं तो आनन्द-सागर में विहार कर रहा था।"

मेरे इस उत्तर से गुरुदेव को प्रसन्नता हुई। उसी समय से मैं ब्रह्मानन्द की समाधि में बैठने लग गया। इस ज्ञान को प्राप्त करने के अन्य मार्ग भी हैं, पर वे सभी नितान्त झूठे एवं मूर्खतापूर्ण है। इन मार्गों को बतलानेवाले शिक्षक भी स्वार्थी और छली होते हैं। मेरे गुरु ने मुझे अल्पकाल में ही सरल, सुगम भाषा में आध्यात्मिक ज्ञान का प्रथम पाठ दिया—अन्नमयं ब्रह्म:। परमेश्वर से एकरूप होने के लिए समाधि-स्थिति का मार्ग भी मुझे दिखा दिया। एक सद्गुरु ही हमें मोक्ष का मार्ग दिखा सकता है।

अगर साईं बाबा का यह कथन सही है तो यह स्पष्ट है कि उनके गुरु फकीर नहीं, कोई उच्चकोटि के साधक थे। ब्रह्मानन्द-समाधि केवल भारतीय साधक ही प्राप्त कर पाता है।

श्री आगासकर का कहना है—"श्री साईं बाबा न केवल योगाभ्यास के आदी थे, बल्कि विद्या में निष्णात सिद्ध पुरुष थे। शिरड़ी गाँव से थोड़ी दूर एक वट वृक्ष के नीचे जो कुआँ है, वहाँ वे हर तीसरे दिन स्नानार्थ जाया करते थे। ऐसे ही एक अवसर पर योग-विद्या का एक चमत्कार प्रत्यक्ष देखने में आया। स्नान के समय अपना उदर साफ करते हुए उन्होंने अपने पेट की अँतड़ियाँ बाहर निकालीं और उन्हें अन्दर-बाहर साफ करने के पश्चात् पास के जामुन वृक्ष की एक शाखा पर सुखाने के लिए लटका दिया। योग-विद्या का यह चमत्कार शिरड़ी गाँव के अनेक लोगों ने प्रत्यक्ष रूप से देखा है और उसकी सत्यता के प्रमाण दिये हैं। इस योग-विद्या में 'खण्डयोग' नामक एक अन्य प्रकार है। बाबा इसका प्रयोग भी यदाकदा करते थे। एक बार एक सज्जन बाबा से मिलने आये तो वहाँ का दृश्य देखकर वे घबड़ा गये। बाबा के शरीर के कई अंग खण्डित अवस्था में चारों ओर बिखरे हुए थे। इस दृश्य को देखकर वे बौखलाये हुए पड़ोस में स्थित मुखिया के घर की ओर दौड़े, पर कुछ दूर जाकर वे रुक गये। उन्होंने सोचा कि अगर इस घटना का वर्णन करूँगा तो लोग मुझे पागल समझेंगे। दूसरे दिन जब वे बाबा के निकट आये तो उन्हें स्वाभाविक रूप में पाया। कहा जाता है कि योग-विद्या का ज्ञान तथा आसनों के प्रयोग की दीक्षा बाबा को श्री व्यंकुशा (गोपालस्वामी) नामक गुरु से प्राप्त हुई थी।"

एक भक्त महिला से बातचीत करते हुए बाबा ने अपने गुरु के बारे में कहा था—"मेरे गुरु अत्यन्त दयालु प्रकृति के महापुरुष थे। मैंने उनकी सेवा अनेक वर्षों तक की है। लेकिन उन्होंने मेरे कान में कोई मंत्र नहीं दिया। मेरी यह इच्छा सदा बनी रही कि जीवन के अंतिमकाल तक उनकी सेवा करता रहूँ, किन्तु उनका मार्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निराला था। वे मुझे अपने पुत्र की तरह प्यार करते थे। किसीको ऐसा गुरु मिलना सौभाग्य की बात है। जब वे समाधिस्थ होकर बैठते थे तब मैं उनके सामने बैठ जाता था। उनके नेत्रों से निकलनेवाली ज्योति से मेरा अन्तःकरण भर जाता। इस प्रकार मुझे ज्ञात हुआ कि गुरु के प्रति निष्ठा कैसे रखी जा सकती है।"

× × ×

गाजा, वाजा, वरातियों को लेकर एक वरात कई बैलगाड़ियों में लदकर शिरड़ी गाँव में आयी। वरातियों के ठहरने का इंतजाम गाँव की सीमा के पास स्थित मंदिर में किया गया था। गर्मी का मौसम था। गाड़ियों में जुते बैलों को खोलकर पेड़ के नीचे वाँध दिया गया। लोग आराम करने की गरज से मंदिर के प्रांगण में जाने लगे।

सहसा पुजारी की नजर एक नौजवान की वेश-भूषा पर पड़ी। उसने कड़कती आवाज में कहा—"ए छोकरे, यह हिन्दुओं का मंदिर है। मुसलमानों का यहाँ प्रवेश वर्जित है।"

सिर पर कफनी बाँधे, चोंगा जैसा ढीला-ढाला विना बाँहवाला कुर्ता, कंधे पर रंगीन चादर, कमर में लुंगी तथा हाथ में एक छड़ी लिये एक नवयुवक के पैर मंदिर की ओर जाते-जाते रुक गये। पुजारी की झिड़की सुनकर उसके चेहरे पर शिकन तक नहीं आयी। उल्टे पाँव लौटकर वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया। अपने झोले से चिलम निकालकर सुलफा पीने लगा।

मुख्य सड़क के किनारे शिरड़ी गाँव वसा हुआ है, इसलिए मंदिर के आसपास चहल-पहल रहती है। कुछ देर वाद गाँव की ओर से म्हालसापति नामक एक सज्जन मंदिर की ओर आ रहे थे। एक किशोर युवक को फकीर जैसी वेशभूषा में देखकर वे आकर्षित हुए। कुछ लोगों की आदत वन जाती है जो समदर्शी होते हैं। म्हालसापति ऐसे लोगों में अन्यतम थे जो गाँव में आनेवाले संत, फकीरों का स्वागत करते थे। संतों की सेवा निरन्तर करने के कारण उन्हें पर्याप्त अनुभव हो गया था। इस युवक के नेत्र और आकृति से निकलनेवाले तेज को देखकर वे चकित रह गये। अपने अन्तःकरण की प्रेरणा से वे उक्त युवक के पास आये और कहा—"आओ, साईं।"

म्हालसापति द्वारा संवोधित यही नाम आगे चलकर विख्यात हो गया। साईं-नाथ, साईं महाराज, शिरड़ी के साईं बाबा आदि नामों से उन्हें स्मरण किया जाता है।

इस आह्वान की उपेक्षा साईं बाबा नहीं कर सके। उनके साथ चले आये और एक नीम-वृक्ष[1] के नीचे अपना आसन जमाया। नीम के वृक्ष के नीचे ही उन्होंने क्यों आसन लगाया, इसकी जानकारी बहुत वाद में लोगों को ज्ञात हुई।

---

१. आजकल इस स्थान को 'गुरु-पादुका स्थान' कहा जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक बार किसी भक्त ने अपनी उत्सुकता को मिटाने के लिए यही प्रश्न किया था। प्रत्युत्तर में बाबा ने कहा—"यहाँ मेरे गुरु की समाधि है।"

बहुत दिनों बाद उस स्थान की खुदाई होने पर देखा गया कि नीचे एक सुरंग बनी हुई है? भीतर एक समाधि है जिस पर ताजे फूल चढ़े हुए हैं और चारों ओर दीपक की रोशनी है। आगे चलकर यहीं 'गुरु-पादुका' की प्रतिष्ठा की गयी।

गाँव में जर्जर स्थितिवाली एक मस्जिद थी। कुछ दिनों बाद साईं बाबा उसमें जाकर रहने लगे। केवल मिट्टी की दीवारें और खपरैल का छाजन था। नीम के पेड़ के नीचे बहुत कम लोग आते थे, पर जब से बाबा यहाँ रहने लगे तब से भक्तों की संख्या में वृद्धि होने लगी। इस स्थान का नाम उन्होंने रखा—'द्वारकामाई।' यहाँ एक घंटा लगाया गया। राम-नाम का जयघोष किया गया। इसके बाद एक धूनी जलाकर अग्निदेव का विधिवत् पूजन किया गया।

जवानी के दिनों साईं बाबा पहलवान जैसे मालूम पड़ते थे। शिरड़ी में एक मुसलमान पहलवान रहता था। उसे अपनी ताकत पर घमंड था। अकारण लोगों से भिड़ जाता था। एक बार साईं बाबा से उसकी कुश्ती हो गयी। बाबा को उसने उठाकर पटक दिया। इस पराजय का साईं बाबा पर व्यापक प्रभाव पड़ा। अब वे सिर पर कपड़ा बाँधने लगे ताकि उनके घुंघराले बाल छिप जायँ। तहमद की तरह लुंगी पहनने लगे। सोने के लिए टाट का प्रयोग करने लगे। यहाँ तक कि अब लोगों से कम मिलने-जुलने लगे। बाबा दिन में गाँव में जाकर मधुकरी माँग लेते और उसे पकाकर खाते रहे। सामानों में कफनी, लुंगी, चिलम और तंबाकू के अलावा टीन का एक लोटा रखते थे। सब कुछ मिलाकर वे एक प्रकार से अवधूत-प्रकृति के थे और उसी तरह जीवन व्यतीत करते रहे।

भक्तों को उपदेश देने के अलावा कभी-कभी कहते थे—"मेरे प्रिय भक्तो, आप कहीं भी हों, कुछ भी करते रहें, पर एक बात का ध्यान अवश्य रखें कि मैं आपकी सभी भली-बुरी घटनाओं पर नजर रखता हूँ। मुझसे कुछ छिपता नहीं। विश्व की रंगभूमि पर परदा खींचनेवाला मैं एक निमित्तमात्र सामान्य मनुष्य हूँ। मेरे हाथों में यह मायापटल दूर करने की ईश्वरदत्त शक्ति है।"

साईं बाबा के इस कथन का प्रमाण उनके भक्तों को यदाकदा मिल जाता था। शिरड़ी के बाबा की चमत्कारी कहानियाँ सुनकर एक डॉक्टर तमाशा देखने के लिए अपने एक मित्र के साथ आये। डॉक्टर साहब राम के कट्टर भक्त थे, साथ ही छुआ-छूत का विचार उनमें था। यहाँ आते समय वे यह निश्चय करके आये थे कि उनकी मस्जिद के भीतर नहीं जायँगे और न उनके दिये प्रसाद को ग्रहण करेंगे। सैर करके वापस चले आयेंगे। उनके इस विचार को सुनकर मित्र महोदय ने कहा—"जैसी आपकी इच्छा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मित्र महोदय डॉक्टर को लेकर द्वारकामाई आये। मित्र तो बाबा के भक्त थे। उन्होंने बाबा को साष्टांग प्रणाम किया। प्रणाम करने के बाद जब वे उठे तो देखा कि डॉक्टर साहब भी साष्टांग प्रणाम कर रहे हैं। यह दृश्य देखकर वे दंग रह गये।

बाद में उन्होंने डॉक्टर से पूछा कि "कहिये, आप तो मस्जिद में जानेवाले नहीं थे और प्रणाम का नाटक क्यों किया?" डॉक्टर ने कहा—"मस्जिद के दरवाजे के पास खड़े होकर जब मैंने बाबा को देखा तब उनके स्थान पर मैंने अपने प्रभु राम को देखा। ऐसी हालत में बिना प्रणाम किये कैसे रहता? धन्य हो, साईंनाथ बाबा। मुझे क्षमा कर दो। आज मेरे मन का अहंकार दूर हो गया।"

कई साल बाद प्रयाग में कुंभ लगने का अवसर आया। शिरड़ी के लोगों ने सोचा कि इस वर्ष प्रयाग चलकर त्रिवेणी में स्नान किया जाय। इसी उद्देश्य से दासगणू महाराज ने द्वारकामाई में आकर बाबा से अनुमति माँगी।

साईं बाबा ने कहा—"बेकार उतनी दूर जाने से क्या फायदा? 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' कहावत तुम लोगों ने सुनी होगी। अपना प्रयाग तो यहीं है। बस, मन में विश्वास कर लो तो त्रिवेणी-स्नान का पुण्य यहीं प्राप्त हो जायगा।"

साईं बाबा के कथन का प्रभाव पड़ा। दासगणू महाराज ने सिर झुकाकर बाबा के चरणों पर माथा नवाया और तभी चमत्कार हुआ। बाबा के दोनों पैरों के अँगूठों से गंगा-यमुना की धारा प्रवाहित होने लगी। यह दृश्य देखकर उपस्थित सभी लोग चमत्कृत रह गये। उन्हें समझते देर नहीं लगी कि आज भक्तों पर बाबा की असीम कृपा हुई है।

साईं बाबा के कारण शिरड़ी जैसा नगण्य गाँव तीर्थ का रूप ग्रहण कर चुका था। नित्य कई सौ यात्री शिरड़ी में बाबा का दर्शन करने तथा आशीर्वाद प्राप्त करने आते थे। वास्तव में आज का मानव तनाव में रहता है। मानसिक शान्ति, पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए वह मंदिरों-मस्जिदों में जाता है, संत-फकीरों के यहाँ जाता है। इन सबका उद्देश्य यही रहता है कि उसे कष्टों से मुक्ति मिले। अगर किसी संत-फकीर या देवता के दर्शन-पूजन से व्यक्ति लाभान्वित होता है तो उनके प्रति आस्था उत्पन्न होती है, विश्वास होता है और लोग उसके भक्त बन जाते हैं। भारत में ऐसे संतों की कमी नहीं रही। अनादिकाल से आज तक ऐसे संतों का आविर्भाव समय-समय पर हुआ है।

साईं बाबा एक प्रकार से संत कबीरदास की भूमिका निबाहते रहे। वास्तविक संत वही है जो मानव में भेदभाव न रखे। संत कबीर ने कहा है—

पूरब दिशा हरि को बासा,
पश्चिम अलह मुकामा।
कबीर पोगंड़ा अलह राम का,
सो गुरु पीर हमारा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साईं बाबा का भी सिद्धान्त यही रहा। कोपरगाँव में गोपालराव नामक एक इंस्पेक्टर थे। बाबा की कृपा से उन्हें संतान की प्राप्ति हुई। इस खुशी में उन्होंने 'उर्स' मनाने का निश्चय किया। बाबा से अनुमति माँगने पर उन्होंने अपनी स्वीकृति दे दी। इसके लिए जिला कलेक्टर के पास पत्र भेजा गया। कलक्टरी में कुलकर्णी नामक एक कर्मचारी ने इसका घोर विरोध किया, पर बाबा की अलौकिक शक्ति से यह बाधा दूर हो गयी। लेकिन बाबा ने एक अनोखा निर्णय दिया—"रामनवमी के दिन यह उत्सव मनाया जाय।"

एक प्रकार से यह एक विचित्र निर्णय था। राम के जन्म-दिन पर 'उर्स' का मनाना दूध में गोबर डालने जैसा था। लेकिन सभी बाबा के कट्टर भक्त थे। बाबा के निर्णय का विरोध करने को कौन कहे, किसीने अपनी शंका तक प्रकट नहीं की। शिरड़ी गाँव के सभी लोगों ने सन् १८९७ ई० को यह अद्भुत उत्सव मनाया।

बाबा की आज्ञा से हिन्दू उर्स मना रहे हैं, यह बात सुनकर काफी तादाद में मुसलमान भी इस उत्सव में सम्मिलित हुए। भजन और जयघोष के साथ, बाबा को पालकी पर बैठाकर जुलूस निकाला गया। बाबा के परम भक्त शक्कर दलाल ने दूसरे दिन हाथों में चन्दन की थालियाँ लेकर 'संदल' का भव्य जुलूस निकाला। इस प्रकार प्रतिवर्ष 'उर्स' का उत्सव होने लगा।

आगे चलकर सन् १९१२ ई० में इस उत्सव ने एक नया रूप धारण किया। एक बार कृष्णराव भीष्म शिरड़ी आये। उनके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि बाबा ने रामनवमी के दिन उर्स मनाने की परम्परा क्यों चालू की ? रामजन्म के दिन राम का उत्सव मनाना चाहिए, ताकि लोग इस दिन का महत्त्व समझ सकें। उन्होंने अपना यह विचार बाबा के भक्तों के सामने रखा जिसे सभी लोगों ने पसन्द किया।

अब लोग बाबा से आज्ञा लेने के लिए आये। सारी बातें सुनते ही बाबा ने अनुमति दे दी। स्थान-स्थान पर बन्दनवार लगाये गये। कृष्णराव भीष्म ने स्वरचित 'श्री रामजन्मोपाख्यान' पाठ करने का निश्चय किया। धूमधाम से राम-जन्म हुआ। चारों ओर गुलाल उड़ाया गया।

साईं बाबा की इन अद्भुत परम्पराओं को देखकर यह मानना पड़ता है कि संतों का कोई खास धर्म नहीं होता। वे सभी धर्मों को समान रूप में देखते हैं। साईं बाबा के आविर्भाव के बहुत पहले संत दादू से कहा गया था कि अगर तुम मानव की सेवा करना चाहते हो तो किसी सम्प्रदाय को अपना लो। उस सम्प्रदाय के लोग तुम्हें मदद देंगे तभी तुम्हें सफलता मिलेगी। इस पर दादू ने कहा था—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दादू ये सब किसके पन्थ में, धरती अरु असमान,
पानी-पवन दिन-रात का, चन्द-सूर रहिमान।
ब्रह्मा-विश्न-महेस को, कौन पन्थ गुरुदेव,
साईं सिरजनहार तूं, कहिये अलख अभेव।
महमद किसके दीन में, जबराइल किस राह,
इनके मुर्सद पीर को कहिये एक अलाह।
दादू ये सब किसके ह्वं रहे यहु मेरे मन माँही,
अलख इलाही जगद्गुरु दूजा कोई नाँहि।

केवल संत दादू ने ही नहीं, बल्कि अधिकांश समदर्शी संतों ने इसी प्रकार के विचारों को व्यक्त किया है। अधिक दूर क्यों, साईं बाबा के समकालीन बंगाल के बाउल संतों ने कहा है—

तोमार पथ ढाकाइयाछे मन्दिरे-मस्जेदे।
तोमार डाक शुनि साईं, चलते ना पाइ;
रुकाइया दांडाय गुरुते मुर्शेदे।
डूबाइया याते अंग जुड़ाय, तातेइ यदि जगत पुडाय
बलतो गुरु कोथाय दांड़ाय
तोमार अभेद साधन मरलो भेदे
तोर दुबारेइ नानान ताला, पुरान कोरान तसबी माला
भेख पखइ त प्रधान ज्वाला
कांदेइ मदन मरे खेदे।
तोमार पथ ढाकाइयाछे मन्दिरे-मस्जेदे

अर्थात् मन्दिरों और मस्जिदों ने तुम्हारा रास्ता ढँक लिया है। हे स्वामी, तुम्हारी पुकार पर मैं चल नहीं पाता, गुरु और मुर्शिद रोककर खड़े हो जाते हैं। जिसमें डूबने से शरीर जुड़ा जाना चाहिए, तर हो जाना चाहिए, उसीसे अगर संसार जलने लगे, तो हे गुरु, हम खड़े कहाँ हों? हाय, तुम्हारी 'अभेद-साधना' भेद से मारी गयी! तुम्हारे ही द्वार पर ये नाना ताले—पुराण, कुरान, तसबीह, माला इत्यादि लगे हैं। भेख और पक्ष ही तो प्रधान ज्वाला हैं। मदन तो खेद के कारण रो-रोकर मर रहा है।

साईं बाबा के समन्वयवाद का शिरड़ी पर व्यापक प्रभाव रहा। भारत में सर्वत्र दंगे हुए। महाराष्ट्र भी अछूता नहीं रहा। पड़ोसी जिला नासिक भी कर्फ्यू के आतंक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से त्रस्त रहा। दंगों के कारण भारत का बँटवारा हुआ, पर उस दौरान में शिरड़ी शान्त रहा। दोनों ही सम्प्रदाय के लोगों की श्रद्धा साईं बाबा के प्रति थी।

× × ×

संत या योगी की प्रसिद्धि तभी होती है जब वह अपनी अतीन्द्रिय-शक्ति से कुछ चमत्कार दिखाता है। भक्तों के कष्टों को दूर करता है और अपने उपदेशों से त्रस्त मानव को सान्त्वना देता है। साईं बाबा ने समय-समय पर अपनी अतीन्द्रिय-शक्ति का प्रदर्शन किया है जैसे अन्य अनेक योगियों ने किया था।

एक दिन उनके भक्तों ने रात को उनकी आरती की। दूसरे दिन जब वही लोग बाबा का दर्शन करने गये तब उन्होंने आगत भक्तों से कहा—"कल मैं दक्षिण दिशा में घूमने गया था।"

बाबा की बातें कोई नहीं समझ सका। सभी लोग देखते रहे कि बाबा दिनभर तो उनके साथ रहे। फिर घूमने कब गये ? शायद विनोद कर रहे हैं। यह सोचकर किसीने कोई प्रश्न नहीं किया।

बाबा सामने बैठे लोगों से बातें कर रहे थे। थोड़ी देर बाद दक्षिण दिशा में रहनेवाला एक व्यक्ति आया और उसने प्रसंगवश कहा—"बाबा कल हमारे गाँव गये थे। आज मैं यहाँ दर्शन करने आया हूँ।"

यह बात सुनकर उपस्थित लोग चकित रह गये। योगीगण कभी-कभी द्विशरीरी रूप धारण कर लेते हैं।

× × ×

एक बार बाबा भक्तों से घिरे बैठे थे। द्वारकामाई-भवन में एक दीवार पर एक छिपकली आवाज करने लगी। सहसा एक भक्त के मन में यह शंका उत्पन्न हुई। जिस प्रकार कुत्ते, बिल्ली, सियार के रोने से मुसीबतें आती हैं उसी प्रकार छिपकली का चिल्लाना अपशकुन है। उसने अपने मन की शंका प्रकट न कर बाबा से प्रश्न किया—"बाबा, यह छिपकली क्या कह रही है ?"

बाबा ने कहा—"अरे भाई, इसकी बहन औरंगाबाद से यहाँ इससे मिलने के लिए आ रही है, इसीलिए यह आनन्द से विभोर होकर खुशी मना रही है।"

इस उत्तर को सुनकर बेचारा भक्त चुप हो गया। भला छिपकली को कैसे मालूम हो गया कि उसकी बहन औरंगाबाद से यहाँ आ रही है। औरंगाबाद क्या पास में है ? इस तरह के प्रश्न उसके मन में उठते रहे। बाद में सोचा—शायद बाबा ने परिहास किया है।

थोड़ी देर बाद ताँगे पर सवार एक भक्त बाबा का दर्शन करने औरंगाबाद से आया। अपने थके हुए घोड़े को चारा खिलाने के लिए ताँगेवाले ने चने का बोरा जमीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर उड़ेलकर झटका । उसमें से एक छिपकली निकली और तेजी से सामने की दीवार पर चढ़ गयी । इसके बाद दोनों छिपकलियाँ खुशी से दौड़-धूप करने लगीं । यह दृश्य देखकर प्रश्नकर्ता भक्त ही नहीं, सभी लोग आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता प्रकट करने लगे । हमारे साईं बाबा कितने दूरदर्शी हैं, यह समझते उन्हें देर नहीं लगी ।

मानव-स्वभाव बड़ा विचित्र है । कोई अर्थ के पीछे परेशान रहता है तो कोई रोग-शोक के पीछे । ऐसी ही परेशानी में कभी-कभी लोगों के मन में वैराग्य की भावना उत्पन्न हो जाती है और वह निरुद्देश्य घर से निकल पड़ता है । ऐसी घटनाएँ अनेक लोगों के जीवन में होती हैं । ऐसे लोगों में योग्य व्यक्ति को संत अपनी ओर आकर्षित करते हैं ।

बालाराम मानकर की मानसिक स्थिति खराब हो गयी थी । उन्हें अपनी पत्नी से बेहद प्यार था । सहसा उसके निधन से वे इतने उद्विग्न हो उठे कि सब कुछ छोड़कर शिरड़ी में बाबा के पास आ गये । बाबा अन्तर्यामी थे । उन्हें रहस्य समझते देर नहीं लगी ।

एक दिन बाबा ने बालाराम को बारह रुपये देते हुए कहा—"तुम मच्छिन्दर-गढ़ चले जाओ ।"

बालाराम बाबा का सान्निध्य छोड़कर जाना नहीं चाहते थे । बाबा ने देर तक उसे काफी समझाया । उनके प्रबोध-वचन का प्रभाव पड़ा । साथ ही उसे यह बताया कि वहाँ जाकर योग की साधना करो । योग की साधना कैसे करनी चाहिए, इसकी जानकारी दी, ताकि वे इस दिशा में सफलता प्राप्त कर सकें ।

अन्त में बाबा के आज्ञानुसार वे मच्छिन्दरगढ़ आकर बाबा की बतायी प्रक्रिया के अनुसार साधना करने लगे । ऐसे भक्तों को गुरु सूक्ष्म रूप में प्रकट होकर अन्य क्रियाएँ बताते हैं । बाबा प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित होकर कभी-कभी निर्देश देते रहे ।

अन्त में एक दिन बालाराम ने पूछा—"जब आप नित्य दर्शन देते हैं तब मुझे यहाँ क्यों भेजा ? मैं आपके चरणों के पास रहकर सारी जानकारी प्राप्त कर लेता । आपको इस तरह कष्ट नहीं करना पड़ता ।"

बाबा ने कहा—"शिरड़ी में भक्तों के कोलाहल में तुम अपने मन को एकाग्र न कर पाते । साधना के लिए शान्त परिवेश की आवश्यकता होती है । यही वजह है कि मैंने यहाँ तुम्हें भेजा, ताकि तुम्हारी उद्विग्नता दूर हो जाय । केवल यह सोचना कि मैं शिरड़ी में ही सशरीर रहता हूँ, यह मन का भ्रम है । अब तुम स्वयं देख रहे हो कि मैं यहाँ उपस्थित हूँ । जब भी तुम्हें कोई कठिनाई होगी तब मैं स्वयं उपस्थित होकर तुम्हारी परेशानी दूर कर दूँगा । मेरी बतायी प्रक्रिया का निरन्तर अभ्यास करो ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतना कहकर साईं बाबा अदृश्य हो गये। यहाँ भी वे द्विशरीरी रूप में प्रकट हुए थे। मच्छिन्दरगढ़ में एक असें तक साधना करने के बाद बाबा के आज्ञानुसार बालाराम घर की ओर रवाना हुए। पूना स्टेशन पर अपार भीड़ थी। फलस्वरूप उन्हें लाईन में खड़े होकर प्रतीक्षा करनी पड़ी। इतने में एक आदमी उनके पास आया और बोला—"शायद आप दादर जा रहे हैं। मेरे पास दादर तक का टिकट है। मैं इसी गाड़ी से जानेवाला था, पर एक आवश्यक कार्य आ जाने के कारण मैं जा नहीं पाऊँगा। आपको जरूरत हो तो टिकट ले लीजिए।"

बालाराम ने टिकट लेकर देखा, फिर जेब से मनीबेग निकालकर किराया देने के लिए हाथ बढ़ाया तो वह व्यक्ति न जाने कहाँ गायब हो गया था। चारों ओर नजर दौड़ाने पर भी वह नहीं मिला। इस घटना को बाबा की कृपा मानकर उन्होंने बाबा का स्मरण करते हुए प्रणाम किया।

बाबा के एक भक्त मेघा थे। एक दिन उन्हें झक सवार हुई कि मकर-संक्रांति के दिन बाबा को गोदावरी नदी में स्नान कराया जाय। इस प्रस्ताव को सुनकर बाबा ने उपेक्षा दिखाई। लेकिन मेघाजी कम जिद्दी नहीं थे। जब सनक सवार हुई है तब कार्य होना चाहिए। चारों ओर से दबाव पड़ने पर बाबा को स्वीकृति देनी पड़ी। मेघाजी स्नान-संध्या करने के बाद घड़ा लेकर गोदावरी से पानी लेने चल पड़े। आना-जाना मिलाकर बत्तीस मील का सफर था। मेघाजी कर्मठ थे। पानी लेकर लौटे। बाबा को एक छोटी चौकी पर बैठाया गया।

एकाएक बाबा ने मेघा का हाथ पकड़ते हुए कहा—"मेघा, मेरे शरीर में सिर ही मुख्य है। केवल मेरा सिर भीगे, बाकी बदन सूखा रहे।"

मेघाजी ने सोचा—ऐसा कैसे हो सकता है? लेकिन वे अपने मूड में थे। बोले—"ठीक है, बाबा। ऐसा ही होगा।"

इतना कहने के पश्चात् मेघाजी ने घड़े का सारा पानी बाबा के सिर पर उड़ेलते हुए कहा—"हर हर महादेव शंभो।"

घड़े को जमीन पर रखने के बाद मेघाजी ने जब बाबा की ओर देखा तो चौंककर देखता ही रह गया। बाबा का केवल सिर भीगा था। शेष अंगों पर पानी की एक बूँद भी नहीं थी। उसे विस्मित देखकर बाबा मुस्कराने लगे। भक्त की इच्छा पूरी हुई और बाबा ने कौतुक भी दिखाया।

विनायकराव बाबा के पुराने भक्त थे। नौकरी के सिलसिले में बीकानेर गये तो वहीं व्यस्त हो गये। सहसा एक दिन स्वप्न में बाबा ने दर्शन दिया। उलाहना देते हुए बोले—"क्या मुझे भूल गया?"

विनायकराव ने बाबा के चरणों पर सिर नवाते हुए कहा—"भला कोई बालक अपनी माँ को भूल सकता है?" इतना कहकर वे अपने बगीचे में गये और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वहाँ से 'वालपापड़ी' की सेम तोड़कर लाये। ज्योंही बाबा के चरणों में उसे अर्पित किया त्योंही उनकी नींद खुल गयी।

विनायकराव समझ गये कि बाबा मुझे भूले नहीं। जरूर याद की होगी। व्यक्तिगत कार्यवश वे ग्वालियर गये हुए थे। वहीं एक ऐसे सज्जन मिले जो बाबा का दर्शन करने के लिए शिरड़ी जा रहे थे। उन्हें बारह रुपये देते हुए कहा कि दो रुपये में वालपापड़ी की सेम तथा सीधा-सामग्री खरीद लीजिएगा। शेष दस रुपये बाबा को दक्षिणा के रूप में दे दीजिएगा।

वह व्यक्ति शिरड़ी पहुँचा और सारा सामान खरीदने के बाद वालपापड़ी सेम की तलाश करने लगा, पर कहीं दिखाई नहीं दी। कोपरगाँव आने पर देखा—एक महिला की सब्जी की टोकरी में वालपापड़ी की सेम है। उसने तुरत खरीद ली। शिरड़ी पहुँचकर निमोणकरजी को सारी सामग्री दे दी। निमोणकरजी ने भोजन तैयार कर विनायकराव का नैवेद्य बाबा को अर्पित किया। विनायकराव के मित्र तथा अन्य लोगों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उस दिन बाबा ने केवल सेम की तरकारी ग्रहण की, अन्य सामग्रियों को स्पर्श तक नहीं किया।

बाबा के एक भक्त थे—दामूअण्णा। यह वही व्यक्ति हैं जिन्होंने रामनवमी का उत्सव प्रारंभ किया था। इन्होंने एक बार बाबा को पत्र लिखा कि मैं रूई का सट्टा खेलना चाहता हूँ। आप कृपया आज्ञा दें। बाबा ने लिखवाया—"जुए का मार्ग पतन का मार्ग है। परमेश्वर की दी हुई आधी रोटी में संतोष करो।"

दामूअण्णा ने सोचा कि बाबा से पत्र-व्यवहार करने की अपेक्षा प्रत्यक्ष रूप से बातचीत करना उचित होगा। दामूअण्णा की इच्छा थी कि वह लखपति बन जाय। यहाँ आने पर सहसा बात छेड़ने का साहस नहीं हुआ। बातचीत के सिलसिले में दामूअण्णा ने कहा—"रूई के बदले मैं अनाज का व्यापार करना चाहता हूँ।"

बाबा ने इस प्रश्न का विचित्र उत्तर दिया—"एक रुपये का पाँच सेर खरीदकर सात सेर के भाव से बेचोगे क्या?"

दामूअण्णा को समझते देर नहीं लगी कि अनाज के रोजगार में घाटा होनेवाला है, इसीलिए बाबा ऐसा कह रहे हैं।

कुछ ही दिनों बाद दामूअण्णा ने देखा कि उसके सभी व्यापारी मित्र रोना रो रहे हैं। वर्षा अच्छी होने की वजह से अनाज का भाव गिर गया था। सभी को घाटा लगा। यहाँ तक कि रूई के सट्टे में सटोरियों का दिवाला निकल गया।

कभी-कभी सामान्य व्यक्ति अपने अहं का प्रदर्शन करने संतों के पास आ जाते हैं। बेचेंगे धनिया, जीरा और बातें करेंगे—ब्रह्मज्ञान की। संतों के समीप आकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी सौदेबाजी करते हैं। इस प्रकार एक व्यापारी सज्जन बाबा के पास आये और उन्होंने कहा कि मैं प्रत्यक्ष ब्रह्म देखना चाहता हूँ।

बाबा मन ही मन मुस्कराये। बोलें—"ठीक है, बैठो।" कुछ देर तक इधर उधर की बातें करने के बाद उन्होंने एक बालक से कहा कि जाओ, अमुक मारवाड़ी से पाँच रुपये उधार माँग लाओ।

बालक ने वहाँ से वापस आकर कहा—"मारवाड़ी घर पर नहीं है।"

बाबा ने एक दूसरे व्यापारी के पास भेजा। वहाँ से खाली हाथ आया। इस प्रकार तीन-चार जगहों से वह वापस आया। रुपये कहीं नहीं मिले। दरअसल बाबा को रुपयों की जरूरत नहीं थी। वे ब्रह्म दिखाने की भूमिका बना रहे थे। सामने बैठे व्यापारी की जेब में काफी रकम थी। वह चाहता तो दे सकता था, पर उसे अपनी रकम से मोह था।

वह बाबा के नाटक और बातचीत से बोर हो गया था। उसने कहा—"अब आज्ञा दीजिए बाबा। काफी देर हो गयी। मुझे जाना है। आप ब्रह्म दिखा रहे थे, पर मैं देख नहीं पाया।"

बाबा ने कहा—"मैंने तुम्हारे सामने इस बालक को इतना दौड़ाया, फिर भी तुम्हें ब्रह्म दिखाई नहीं दिया? ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने के लिए पाँच वस्तुओं का त्याग करना पड़ता है। पंचप्राण, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि और देहाभिमान। तभी ब्रह्मज्ञान प्राप्त होता है। तुम्हारे जैसा व्यक्ति जब पाँच रुपये का मोह त्याग नहीं सकता तब ब्रह्मज्ञान क्या प्राप्त करेगा? ब्रह्मज्ञान क्या कोई साधारण वस्तु है जो पैसे से खरीद लेगा। मुमुक्षु भक्त जब सब कुछ त्यागकर साधना-तपस्या करता है तब उसे ब्रह्मज्ञान प्राप्त होता है। इतने बड़े व्यापारी होकर जब तुम पाँच रुपये का मोह त्याग नहीं सके तब ब्रह्मज्ञान क्या प्राप्त करोगे?"

× × ×

'ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती' के अनुसार गोदावरी नदी कोपरगाँव के निकट बहती है। इस नदी से नौ मील दूर शिरड़ी गाँव है। साईं बाबा के कारण यह नगण्य गाँव संपूर्ण भारत में प्रसिद्ध हो गया। नित्य कई सौ यात्री, भक्त बाबा की समाधि दर्शन करने आते हैं। यहाँ के स्थानीय वृद्धों का कहना है कि जवानी के आलम में बाबा अत्यन्त सुन्दर तथा तेजस्वी थे। उनका स्वभाव बड़ा उग्र था। बड़े व्यक्तियों की तनिक भी परवाह नहीं करते थे। गरीबों के लिए वे बड़े कृपालु थे। कथा-कीर्तन के बड़े प्रेमी थे। द्वारकामाई में जब वे धूनी के सामने ध्यान लगाकर बैठते थे तब पूर्ण-ब्रह्म-अवस्था में रहते थे। उनकी आँखों से निरन्तर ज्योति निकलती थी। किसीके मन की बात वे तुरत समझ जाते थे। पीड़ितों की सेवा करने में हमेशा तत्पर रहते थे। उन्हें दीप जलाकर प्रकाश करने का विचित्र शौक था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक बार मजेदार घटना हुई थी। बाबा नित्य दुकानदारों से तेल मँगवाते और द्वारकामाई में मिट्टी के अनेक दीपक जलाते थे। कुछ दिनों बाद दुकानदारों ने निश्चय किया कि अब बाबा को तेल नहीं देंगे। उस दिन बाबा तेल माँगने निकले तो किसीने नहीं दिया। किसीको बिना कुछ कहे वे वापस चले आये। कुछ देर तक चुपचाप बैठे रहने के बाद एकाएक उठे और सभी दीपकों में रूई की वर्त्तिकाएँ बनाकर रख दीं। कनस्तर में जितना तेल था, उसमें पानी मिलाकर पी गये। फिर उसी कनस्तर में पानी डाल दिया। उस पानी को लेकर तमाम दीपकों में डालने लगे। सभी दीपक पानी से जलने लगे।

तेल के स्थान पर पानी से बत्ती जलते देख दुकानदारों के होश उड़ गये। लोगों को अपने व्यवहार पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ। इस घटना के बाद से सभी दुकानदार पुनः बाबा को तेल देने लगे।

बाबा की आज्ञा लेकर नागपुर के एक धनाढ्य ने शिरड़ी में एक मंदिर बनवाया। उसकी इच्छा थी कि इस मंदिर में श्रीकृष्ण की मूर्ति स्थापित की जाय। लेकिन उसकी यह इच्छा पूर्ण नहीं हो सकी। बाबा ने कहा कि इस भवन में मैं रहूँगा। चूँकि इस मंदिर का निर्माण बूटी साहब ने किया था, इसलिए इसे बूटी का मंदिर कहा जाता है।

काल की घटना विचित्र होती है। राम, कृष्ण, बुद्ध आदि भी काल के हाथों मुक्ति नहीं पा सके, फिर संत-महात्मा कैसे पाते ? सन् १९१७ की विजयदशमी से लगभग पन्द्रह दिन पूर्व एक दुर्घटना हो गयी। द्वारकामाई में झाड़ू लगानेवाले एक बालक से वह ईंट गिरकर टूट गयी जिस पर सिर रखकर बाबा सोते थे। उस समय जितने लोग मौजूद थे, उन लोगों ने इसे महत्त्व नहीं दिया। बाबा जब बाहर से घूमकर आये तब वे बड़े दुःखी हो गये। उन्होंने कहा—"केवल ईंट नहीं टूटी है। वह मेरी जीवन-संगिनी थी। उसीको लेकर वर्षों तक मैं आत्मज्ञान के प्रयोग तथा ध्यान करता रहा। वह ईंट मुझे प्राणों से अधिक प्यारी थी।"

साईं महाराज समझ गये कि अब उनका अंतिम समय आ गया है। उन्होंने वझे नामक भक्त को 'राम-विजय' नामक ग्रंथ पाठ करने का आदेश दिया। एक बार समाप्त होने पर पुनः पाठ करने को कहा। इस प्रकार चार बार पाठ हुआ। अपने निधन के तीन-चार दिन पूर्व उन्होंने अपना घूमना-फिरना बन्द रखा था। एक दिन उन्होंने कहा—"आज मेरा जी घबरा रहा है। मुझे जल्द बूटी की हवेली ले चलो।"

तुरत आज्ञा का पालन किया गया। बयाजी की गोद में सिर रखकर वे लेट गये। नानासाहब ने उनके मुख में गंगा-जल छोड़ा।

साईं बाबा के निधन का समाचार आग की तरह चारों ओर फैल गया। अगणित भक्त आने लगे। चारों ओर आँसुओं की बाढ़ आ गयी। जिस व्यक्ति के कारण शिरड़ी को गर्व था, आज वह अनाथ हो गया था। ●

.RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

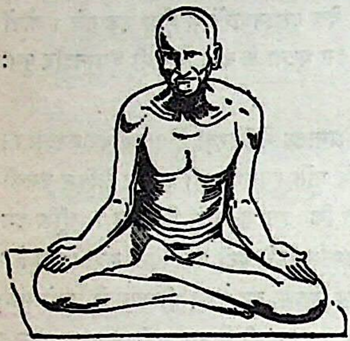

रणछोड़दास महाराज

भारत संतों का देश है। यहाँ न जाने कितने दीर्घायुवाले संत हो गये हैं, उनके बारे में सामान्य लोगों को बहुत कम जानकारी है। स्वामी विशुद्धानन्द के गुरुदेव की उम्र १२०० वर्ष से अधिक है। वे आज भी हिमालय के ज्ञानगंज में हैं। योगी वरदाचरण ने काशी में रहनेवाले एक संत का उल्लेख किया है जो दाराशिकोह के गुरु रहे। अब उनका यशःशरीर है या नहीं, पता नहीं। सिद्धयोगी तैलंग स्वामी का जन्म सन् १६०७ ई० में हुआ और वे परलोकवासी हुए सन् १८८७ ई० में। लगभग २८० वर्ष तक वे जीवित रहे।

इसी प्रकार बाबा रणछोड़दासजी दीर्घायुप्राप्त संत रहे हैं। यद्यपि वे अपनी उम्र तथा साधना के बारे में पूछने पर भी विशेष बातें नहीं बताते थे, तथापि उनके कथन से यह स्पष्ट हो जाता था कि उनका जन्म शाहंशाह अकबर के शासन के पूर्व हुआ था।

अपने सम्प्रदाय के बारे में आपका कहना है—"हमारा श्री-सम्प्रदाय है। हमारे इष्ट श्री रामचन्द्र महाराज हैं। श्रीनाथ मुनिजी महाराज के शिष्य पुण्डरीकाक्षजी थे। इनके शिष्य राम मिश्रजी हुए। इनके शिष्य यामुनाचार्यजी थे (रामानुजाचार्य के गुरु)। ये श्रीनाथ मुनि महाराज के पौत्र थे। इनके शिष्य पूर्णाचार्य परांकुशजी हुए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इनके शिष्य रामानुजाचार्य थे। रामानुजाचार्य की १२वीं पीढ़ी में राघवानन्दाचार्यजी हुए। इनके शिष्य रामानन्दाचार्य हुए। इसी बीच एक घटना के कारण श्री-सम्प्रदाय में दो सम्प्रदाय हुए—श्री रामानन्द-सम्प्रदाय और श्री रामानुज-सम्प्रदाय। रामानन्दी सम्प्रदाय को वैरागी-सम्प्रदाय भी कहा जाता है। इनका सिद्धान्त है—

जाति-पाँति पूछे नहिं कोई।
हरि को भजै सो हरि का होई॥

उन दिनों हिन्दुओं में ऊँच-नीच का भाव उग्र रूप में था। इस प्रथा को समाप्त करने के लिए रामानन्दी सम्प्रदाय ने कमर कस ली थी। उन्हें यह देखकर दुःख हुआ कि उच्चवर्ग की उपेक्षा के कारण निम्नवर्ग के लोग तेजी से मुसलमान बनते जा रहे हैं। अपने सम्प्रदाय में बिना भेदभाव के सभी लोगों को रामानन्दी सम्प्रदाय ने स्थान दिया।

रामानन्दजी के १३ प्रमुख शिष्य थे। इनमें श्री अनन्तानन्दजी प्रधान थे। अनन्तानन्दजी के १२ शिष्य थे जिनमें श्री पतितपावन भगवान् तथा नरहरिदास की ख्याति अधिक हुई। नरहरिदासजी के शिष्य संत तुलसीदास थे। ज्ञातव्य रहे कि अनन्तानन्दजी का निधन वि० सं० १५३० में हुआ था। अनन्तानन्दजी महाराज रणछोड़दास के दादागुरु थे और गुरु थे—श्री पतितपावनजी।"

अपने गुरु की आज्ञा से रणछोड़दासजी अपने काका गुरु नरहरिदास के साथ गलता (जयपुर) से जगन्नाथजी (पुरी) यात्रा करने गये थे। इस दृष्टि से रणछोड़दासजी १५वीं शताब्दी के संत प्रमाणित होते हैं जो भारत के विभिन्न स्थानों में जनता-जनार्दन की सेवा करते रहे।

वि० सं० १५२० में जब गुजरात में अकाल पड़ा था तब पतितपावन महाराज अपने काका गुरुओं कबीरदास, धनाजी, रैदास, पीपाजी के साथ काम करते रहे।

रणछोड़दासजी के अग्रज गुरुभाई श्री कीलकरणजी का काल १५९० ई० के पूर्व का है। आमेर-नरेश मानसिंह कीलकरणजी के यहाँ सत्संग में भाग लेते रहे।

एक बार रणछोड़दासजी से एक भक्त ने प्रश्न किया कि आपकी कितनी उम्र है? प्रत्युत्तर में उन्होंने कहा—"उम्र के बारे में क्या बतलाऊँ? इससे क्या लाभ होगा? और न बताने पर कौन-सी हानि होगी? तुम्हारे मन में जो आये, उतनी समझ लो।"

भक्त ने अपना अन्दाजा सौ वर्ष बताया तो उन्होंने कहा—"मेरा अनुभव सुनो। १०० वर्ष तो क्या मैंने २५०, ३००, ५००, ७०० वर्ष आयुवाले महात्माओं के दर्शन किये हैं। जिन दिनों मैं काश्मीर में रहता था, उन दिनों पतितपावनजी भगवान् के परम स्नेही सिद्ध संत श्री बनवारीदासजी महाराज इसी कोटि के संत थे। शतकुंभा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर्वत की दो मील की ऊँचाई पर उनकी तपोभूमि थी। महाराजजी के पास हमेशा दो सिंह पालतू बिल्ली की तरह बैठे रहते थे।"

एक भक्त ने पूछा—"आपकी साधना-भूमि कहाँ है ?"

रणछोड़दासजी ने कहा—"सर्वप्रथम गलताजी है। यह स्थान जयपुर नगर से ८-९ मील दूर है। बाद में काश्मीर। पुष्करराज तीर्थ में मैं बहुत दिनों तक था। ध्येय-सिद्धि वहीं हुई है।"

दूसरे भक्त ने पूछा—"आप राजकोट (गुजरात) में कब आये ?"

रणछोड़दासजी—"मेरा ऐसा ख्याल है कि सन् १८५७ के गदर के दिनों पहले-पहल आया था। उन दिनों यह स्थान देहात जैसा था। सिहोर के पास नानासाहब पेशवा गुप्त वेश में रहते थे। मैं उनसे मिला था। सन्-संवत् ठीक से याद नहीं, पर मैं ४०-४५ साल अनसूया में भी था तब विक्टोरिया की ओर से ढिंढोरा पिटवाया गया था कि अब हिन्दुस्तान का कारोबार ब्रिटिश राजसत्ता ने सँभाल लिया है। इन्हीं दिनों स्वामी-नारायण-सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री सहजानन्द स्वामीजी के गुरुदेव श्री रामानन्द स्वामीजी विप्लव के ४०-५० साल पहले तथा उससे २५ साल पहले सहजानन्द स्वामीजी साकेत पधार गये थे। रामसनेही-सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री रामचरणजी महाराज रामानन्द स्वामी से पहले जा चुके थे। रामसनेहीजी राम-राम कहते थे, सीताराम नहीं कहते थे। वे केवल राम के सनेही थे, इसीलिए रामसनेही कहलाये।"

एक भक्त ने पूछा—"काश्मीर में आप किस जगह थे ?"

महाराजजी—"रसायणी गुफा में, जो श्रीनगर से ७०-८० मील दूर है।"

'श्री गुरुदेव की सन्निधि में' नामक ग्रंथ की लेखिका कुमारी कुमुदिनी परमानन्द पजवाणी ने महाराजजी से एक बार उनके जीवन के बारे में प्रश्न किया था। प्रत्युत्तर में उन्होंने कहा—"तुम मेरे बारे में जानना चाहती हो और बार-बार पूछती हो, पर क्या बताऊँ ? पूर्वाश्रम की बातें बताना पूर्वजन्म की बातें जैसी लगती है। यह शरीर महाराष्ट्रीय देशस्थ ब्राह्मणकुलोत्पन्न है। वऱ्हाड़ के अमरावती जिले में बायफल नामक गाँव मेरी जन्मभूमि है। पिता पुलिस के महकमे में थे। मेरे तीन बड़े भाई और एक बहन थी। बचपन में दो पुस्तकें बायफल के स्कूल में पढ़ी थीं। इसके बाद पास के नाचन नामक गाँव के एक स्कूल में एक पुस्तक पढ़ी थी। नाचन गाँव में दो बड़े भाई बुक बाइंडिंग का काम करते थे। पिताजी अपराधियों को कड़ी सजा देते थे। इससे माँ को बहुत कष्ट होता था। एक बार ऐसी घटना के समय माँ सामने आ गयी तब पिताजी के द्वारा माँ का भयानक अपमान हुआ।

"इससे मेरे मन को चोट पहुँची। मैंने घर छोड़ दिया। उन दिनों मेरी उम्र नौ साल, चार महीने थी। माँ धार्मिक थी। परिवार ऋग्वेदी था। जब मैं साढ़े-सात वर्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का था तब यज्ञोपवीत हुआ था। माँ तथा पिताजी नित्य संध्या-पूजन आदि नियम-पूर्वक कराते थे। बराबर पूछते कि संध्या-पूजन किया? जब तक संध्या-पूजन नहीं कर लेता था तब तक भोजन नहीं मिलता था।

"घर से चलकर मैं जयपुर आ गया। मार्ग में नागा-संन्यासियों ने मुझे आश्रय दिया। महन्तजी ने ऊँट, बैल, गाय आदि चराने का काम मुझे सौंपा। इधर मैं महन्तजी से बार-बार दीक्षा देने का आग्रह करता। मेरा मन बचपन से ही योगी बनने का था। आगे चलकर मुझे मालूम हो गया कि महन्तजी को योग का ज्ञान नहीं है, अतएव यहाँ कुछ मिलनेवाला नहीं है। फलतः एक दिन इस जमात से भाग निकला। पर दो-तीन नागा मुझे पकड़ लाये। अब मेरे ऊपर पहरेदारी होने लगी, ताकि पुनः भाग न जाऊँ।

"ठीक इन्हीं दिनों श्री पतितपावन भगवान्जी का दर्शन घौंसा ग्राम में हुआ। आपने मुझे देखते ही कहा—'तुम गलत जगह फँस गये हो। यहाँ रहने पर जीवन का कल्याण नहीं होगा। अच्छा होगा कि घर वापस चले जाओ। अगर यहाँ से छुटकारा पाना चाहते हो तो मेरे पीछे-पीछे चले आओ। बिलकुल निर्भय होकर। नागा लोग तुम्हारा कुछ नहीं कर सकेंगे। एक बार यहाँ से छुटकारा पा जाओ तो ठीक होगा। इसके बाद तुम्हारी जो इच्छा हो करना। मेरे साथ चलना या घर वापस चले जाना।'

"श्री पतितपावनजी की अभय-वाणी सुनकर मैं उनके चरणों पर गिर पड़ा और रोने लगा। मैंने कहा कि मैं आपके साथ चलना चाहता हूँ। आपकी शरण में रहना चाहता हूँ। तब उन्होंने कहा—'यह तो खुशी की बात है। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में था। अब तुम मेरे साथ चले आओ।'

"इतना कहने के बाद वे मेरा हाथ पकड़कर चल पड़े। महन्तजी तथा उनके नागा शिष्य देखते रह गये। कोई कुछ नहीं कर सका। आपके साथ गलता आश्रम में आ गया। आपके प्रथम दर्शन से ही मेरे मन में अपूर्व शीतलता उत्पन्न हो गयी। माँ के समान प्रेम तथा वात्सल्य प्राप्त हुआ। गलता में आपने मेरा पंच-संस्कार किया। तिलक-कंठी धारण करायी। साधन-नियम बताये और बड़ी कृपा करके अपनी सेवा तथा सन्निधि में रख लिया। साधु-संस्कार से मैं यजुर्वेदी हूँ।"

कुमारी कुमुद ने उनके जीवन के बारे में लिखा है—"श्री गुरुदेव पौने-तीन गज की सफेद पापलीन लुंगी पहनते हैं। काफी पहले टाट पहनते थे। बाद में किसी भक्त ने अपने हाथ से बनाकर खद्दर की लुंगी पहनायी थी। वे सिलाई किया हुआ कोई वस्त्र धारण नहीं करते। स्वेटर तक नहीं। बाहर जाते समय शाल ओढ़ लेते हैं। खड़ाऊँ या रबड़ की स्लीपर भी नहीं पहनते। यज्ञोपवीत, तुलसी की कंठी और चश्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जरूर पहनते हैं। ऊनी कम्बल का आसन अधिक पसन्द करते हैं। टाट में नारियल की जटा भरकर गद्दी-तकिये का प्रयोग करते हैं। खान-पान में काँच के नये या तपे बरतन अथवा पत्तलों का प्रयोग करते हैं। भोजन दिन में दो बार करते हैं। सवेरे ८।। से ९ के भीतर तथा शाम को ५ से ५।। के भीतर कर लेते हैं। आहार में सूखी रोटी, उबली सब्जी या मूँग की दाल, गेहूँ की दलिया नमक डालकर स्वयं बनाते हैं। मसाले में सेंधा नमक, जीरा, काली मिर्च और अदरक लेते हैं। दूध, चाय, काफी, फल, मेवा, घी, तेल आदि नहीं लेते। फलों में पपीता जरूर पसन्द करते हैं।

"भोजन के पूर्व दोनों वक्त स्नान करने की आदत है। प्रातःकाल तीन, सवा तीन बजे गरम पानी से स्नान करने के बाद आसन पर बैठते हैं। तीन घंटे पश्चात् साढ़े-छः बजे नियम से उठते है तब लोगों को दर्शन देते हैं। शाम को पौने-पाँच बजे भोजन बनाकर खाते हैं और बाद में नियम पर बैठते हैं। रात को नौ या साढ़े-नौ बजे नियम से उठते हैं तब लोगों को दर्शन देते हैं। दोनों वक्त संध्या-पूजन अवश्य करते हैं। गुरुदेव की ऊँचाई ५ फुट २।। इंच और वजन १२१ पौण्ड है।

"श्री गुरुदेव हिन्दी बोलते हैं। वैसे उर्दू, बंगला, मराठी, संस्कृत, पाली, फारसी, पश्तो, अंग्रेजी, मागधी, व्रजभाषा तथा गुजराती जानते तथा बोलते हैं।"

श्री रणछोड़दासजी के वारे में प्राप्त जानकारी इतनी ही है। अव उनकी योग-विभूति घटनाओं को वताना आवश्यक है। यों महाराजजी का कहना है कि मैं चमत्कार पर विश्वास नहीं करता। मुझे इससे घोर नफरत है। फिर भी संतों के अनजाने में कुछ-न-कुछ घटनाएँ हो जाती हैं। स्वयं रामकृष्ण परमहंस भी योग-विभूतियों को विष्ठा कहा करते थे। केवल कुछ लोग कभी-कभी योग-विभूतियों का प्रदर्शन अवश्य करते रहे।

कुमारी कुमदिनी ने अपने दो अनुभवों का उल्लेख किया है। इस तरह की घटनाएँ योगियों द्वारा संभव हैं।

ज्ञातव्य है कि चित्रकूट स्थित जानकी कुण्ड के सामने महाराज का नेत्र-शिविर कैम्प है। इन पंक्तियों के लेखक ने उस शिविर को देखा है। जब वहाँ आपरेशन का कार्यक्रम होता है तब सड़क पर अनेक दुकानें सजती हैं, सद्गुरु ट्रस्ट की जीपें दौड़ती हैं और कई हजार लोग आपरेशन के लिए आते हैं।

घटना उन दिनों की है जब महाराजजी अपने शिष्यों तथा भक्तों के साथ चित्रकूट के समीप जानकी कुण्ड स्थित अपने पड़ाव पर थे। लोगों की राय हुई कि अनसूया आश्रम का दर्शन किया जाय। महाराज के नेतृत्व में काफिला चल पड़ा। महाराजजी की प्रिय शिष्या कुमदिनी भी साथ थी। उससे उन्होंने कहा कि तेरे लिए पालकी मँगवायी है। तू उसमें बैठ जा। हम लोग तेरे पीछे-पीछे चलेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुमुदिनी राजी नहीं हुई। बोली—"मैं भी आप लोगों के साथ पैदल चलूंगी।"

महाराज ने कहा—"तेरे पैर में गठिया का दर्द है और पाँच दिन की सफर है। तू डोली में बैठ जा।"

"नहीं गुरुदेव। ये लोग जल्दी-जल्दी ले चलेंगे। मैं अकेली दूर चली जाऊँगी। मुझे बहुत डर लग रहा है। मैं पालकी में नहीं जाऊँगी बल्कि पैदल चलूंगी।"

"तुम्हें चाहे कितना ही डर क्यों न लगता हो और कुछ भी हो, पर जाना तुम्हें पालकी पर ही है। तुम घबराओ नहीं। मैं प्रत्येक आधे घण्टे बाद तुमसे मिलता रहूँगा। सभी पालकीवाले मेरे परिचित हैं।"

इस आश्वासन के बाद कुमुदिनी पालकी पर सवार हो गयी। दरअसल वह पालकी ढोनेवालों की शक्ल देखकर डर गयी थी। स्थानीय लोग कोल, भील और निषाद थे जो देखने में भयानक लगते थे।

काफिला चल पड़ा। महाराजजी दिये गये अपने आश्वासन के अनुसार प्रत्येक आधे घण्टे बाद कुमुदिनी की पालकी के पास जाकर उसे ढाढ़स देते रहे। वह प्रसन्न चित्त से यात्रा करती रही। यात्रा-समाप्ति के बाद उसने पैदल चलनेवालों से जब यह कहने लगी कि गुरुदेव मेरी पालकी के पास हर आधे घण्टे बाद बराबर दर्शन देने आते रहे और बराबर दस मिनट तक साथ-साथ चलते हुए बातें करते रहे तब किसीको विश्वास नहीं हुआ।

साथ के लोगों ने कहा—"गुरुदेव तो हमारे साथ बराबर चलते रहे। एक मिनट के लिए भी हमसे अलग नहीं हुए। यह तुम्हारे मन का भ्रम है।"

इस बात पर कुमुदिनी को आश्चर्य हुआ। उसने गुरुदेव से इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा—"तुम्हारी और इनकी दोनों की बातें ठीक हैं। यह सत्य है कि मैंने इन लोगों का साथ नहीं छोड़ा और यह भी सत्य है कि हर आधे घण्टे बाद दस मिनट तक तुमसे मुलाकात करते हुए मैं बातें करता रहा। यह कोई विशेष बात नहीं है। दो शरीर तो मैं यों ही कर लेता हूँ।"

द्विशरीरी की घटनाएँ अनेक योगी करते रहे हैं। इनका जिक्र पिछले खण्डों में किया जा चुका है। यहाँ तक कि परलोकवासी होने के बाद भी उच्चकोटि के संत अपने शिष्यों की सहायता करने चले आते हैं। महाराजजी की दूसरी घटना यों है—

× × ×

१० सितम्बर, सन् १९५१ ई० के दिन महाराजजी डहाणु में भक्तों के मध्य प्रवचन दे रहे थे। सहसा प्रवचन रोककर उन्होंने एक युवक से कहा—"रमेश, मेरी बातचीत तो बराबर जारी रहेगी। तुम्हें जाना है। गाड़ी का समय हो गया है। स्टेशन पहुँचने में भी १५-२० मिनट लग जायेंगे। अब तुम कुमुद-ज्योति को लेकर तुरत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्टेशन पहुँच जाओ। मैं तो बातों में ही लगा रहा। अब समय बिलकुल नहीं है। घबराओ नहीं, गाड़ी तुम लोगों को बिना लिए जायगी नहीं।"

हुआ भी वही। जब ये लोग बोरबली स्टेशन पहुँचे तब गाड़ी खड़ी थी। इनके सवार होते ही रवाना हुई। यात्रियों से इन्हें पता चला कि पता नहीं क्यों आज गाड़ी यहाँ आधा घंटा खड़ी रही। काफी लेट हो गयी।

इसी प्रकार की एक घटना शामभाई के साथ हुई थी। यह २० मई, सन् १९४३ ई० की घटना है। राजकोट में प्रवचन देते हुए महाराजजी अचानक बोल उठे—"शामजी, घर जाओ।"

शामजी ने कहा—"बापू, घर पर कोई काम नहीं है। आपके सत्संग से जाने का मन नहीं कर रहा है।"

महाराजजी ने कहा—"शामजी, तुम घर चले जाओ। तुम्हारी माँ तुम्हारे आने की प्रतीक्षा कर रही है। जल्दी घर जाओ।"

आखिर शामजी भाई को जाना पड़ा। महाराजजी को दण्डवत् करने के बाद वे घर की ओर रवाना हुए। चलते समय महाराज ने कहा—"लो, यह प्रसाद माँ को दे देना और जय सियाराम कहना।"

घर आकर शामजी ने माँ को प्रसाद दिया। उन्होंने ग्रहण किया। शेष प्रसाद शामजी को देती हुई माँ बोली—"इसे आसपास के बच्चों में बाँट दो। हाँ, बापू ने मुझे याद किया था या नहीं?"

शामजी ने कहा—"माँ, बापू ने याद करके मुझे यहाँ आपके पास भेजा है। उन्होंने चलते समय कहा कि यह प्रसाद माँ को दे देना और मेरा जय सियाराम कहना।

यह बात सुनकर माँ ने कहा—"जय सियाराम।"

इतना कहते ही तुरत माँ की आत्मा शरीर से बाहर निकल गयी। शामजी भाई के लिए यह अद्भुत घटना थी। वे माँ के शव के पास बैठकर रोने लगे।

× × ×

सन् १९२६ ई० की एक और घटना है। उन दिनों महाराजजी माणेकवाड़ा गाँव के बाहर भक्तों के बीच बैठे प्रवचन दे रहे थे। उस सभा में गाँव के कई मूर्धन्य व्यक्तियों के अलावा महिलाएँ तथा बच्चे भी थे।

एकाएक भक्त लोग जिनमें सभी किसान थे, घबरा उठे। पश्चिम दिशा से टिड्डियों का बहुत बड़ा दल आ रहा था। उनके पंखों की आवाज से हवा गूँजने लगी। टिड्डी को सौराष्ट्र की भाषा में खपेड़ी कहा जाता है।

किसानों की घबराहट देखकर महाराजजी सारी स्थिति समझ गये। तुरत एक किसान पटेल से कहा—"तुम मैदान में जाकर कहो कि खपेड़ियो, गाँव के खेतों में मत बैठना।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उस किसान पटेल ने सभा के बाहर आकर तेज स्वर में कहा—"हमारे गुरु महाराज श्री रणछोड़दासजी बापू कहते हैं कि आप लोग हमारे खेतों में नहीं बैठना। इतनी कृपा करना।"

इस आवाज को सुनते ही टिड्डियों का दल जैसे आया था, वैसे ही उड़कर दूसरी ओर चला गया। गुरुदेव ने उस किसान पटेल का नाम रखा—'खपेड़ी पटेल।' फलतः गाँव के सभी लोग उसे इसी नाम से पुकारने लगे।

एक बार की घटना है। भीखू महाराज नामक एक ज्योतिषी 'ब्रह्मानन्द परम-सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्'' श्लोक पढ़ते हुए महाराज के निकट आये। सामने भक्त-मंडली बैठी थी।

ज्योंही भीखू महाराज ने रणछोड़दासजी को प्रणाम किया त्योंही वे बोल उठे—"आइये ज्योतिषी महाराज। कुमुद, देखो भीखू महाराज आये हैं, अब ज्योतिष की बातें होंगी।"

भीखू महाराज ने विस्मय के साथ कहा—"हे सिद्ध गुरुदेव, आपको मेरा परिचय किसीने नहीं दिया और मैं आपके सामने पहली बार आ रहा हूँ। फिर भी आपने मुझे पहचान लिया, नाम आदि जान लिया। आपके दर्शन से मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। साथ ही आश्चर्य भी।" इसके बाद भक्तों की ओर देखते हुए उन्होंने कहा—"आप लोगों का यह अहोभाग्य है, जो ऐसे सद्गुरु की शरण में आये हैं।"

गुरुदेव ने कहा—"आप सहसा पहुँचे हैं, इस पर हमें भी आश्चर्य हो रहा है। कुमुद ने ज्योतिष की बातें कहीं तो आपका परिचय ज्ञात हो गया।"

इसके बाद गुरुदेव ने कुमुद की ओर देखते हुए कहा—"कल तुम्हारे ताऊजी यहाँ आये थे तब भी ऐसा हुआ था। तुम्हारे ताऊजी जब छोटे थे तब ट्रेन में अपने पिताजी के साथ जा रहे थे। जहाँ मैं बैठा था, वहीं आकर दोनों बैठ गये। मुझे देखकर तुम्हारे दादाजी ने सोचा कि सामने कोई महात्मा बैठा है। पितामह ने प्रणाम करते हुए मुझसे पूछा—"महात्माजी, आप ज्योतिष जानते हैं? कृपया मेरे इस पुत्र का भाग्य बताइये। मैं इसे वकील बनाना चाहता हूँ। मेरे कुल चार लड़के हैं। यह सबसे बड़ा है। इन दिनों इसकी उम्र १२ साल है।"

"मैंने कहा—'अब आप इसे स्कूल न भेजें। अपने कारोबार में तुरत लगा दें और व्यापारिक ज्ञान इसे दें।'

"वे मायूस हो गये। बोले—'यह पढ़ने में तेज है और मैं इसे वकील बनाना चाहता था।'

"मैंने कहा—'ऐसी गलती न करें तो अच्छा होगा। व्यापारिक अनुभव इसके लिए जरूरी है। अभी समय है। यह भगवान् की कृपा है कि आपने यह प्रश्न मुझसे पूछा। प्रश्न का उत्तर देना साधु का कर्तव्य है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"उन्हें मेरी सलाह पसन्द आ गयी। उन्होंने कहा कि आपकी सलाह के अनुसार काम करूंगा। आपने मुझे सावधान करके मार्ग दिखाया, इसके लिए आभारी रहूँगा।"

तभी कुमुदिनीजी के पिताजी वहाँ आये। उनसे उनकी बेटी ने गुरुदेववाली घटना सुनाने के बाद पूछा कि क्या यह बात सही है।

पिताजी को सारी बातें मालूम नहीं थीं। गुरुदेव के कहने पर उन्होंने कहा—"इस घटना के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है, पर बड़े भाई साहब की शिक्षा बीच में बन्द कर उन्हें व्यापार में लगाया गया था। इस घटना के तीन साल के भीतर पिताजी की मृत्यु प्लेग की बीमारी में हो गयी थी। बस, इतना जानता हूँ।"

× × ×

९ फरवरी, १९५३ की घटना है। गुरुदेव का दर्शन करने के लिए वेरावल से गोरधन भाई, सोमजी भाई आदि आये थे। इनका आग्रह था कि इनके पुत्र प्रवीण भाई के विवाह के अवसर पर गुरुदेव पधारें।

गुरुदेव ने कहा—"क्या मेरे स्थूल देह को ही हाजिरी मानोगे? मैं तो बराबर तुम्हारे साथ हूँ। जाओ, आनन्द के साथ लड़के का विवाह करो।"

११ फरवरी को गुरुदेव से विदा लेते समय गोरधन भाई ने उनके एक चित्र पर हस्ताक्षर करने का उनसे अनुरोध किया। गुरुदेव ने चित्र पर हस्ताक्षर करते हुए कहा—"लो, इसे अपने साथ बारात में ले जाना।"

१६ फरवरी की शाम को गुरुदेव भक्तों के बीच बैठे बातें कर रहे थे। अचानक वे खड़े हो गये और जल्दी से सीढ़ी उतरने लगे।

मोटी माँ ने पूछा—"क्या आज्ञा है?"

गुरुदेव ने कहा—"मोटी माँ, मैं बाहर जाना चाहता हूँ। कल तक वापस आ जाऊँगा। बहुत जल्दी है। इन्दु भाई, जरा अपनी मोटर से तुरत ले चलो।'

जिस तरह व्यस्तता के साथ गुरुदेव रवाना हुए, उस माहौल को देखते हुए लोग समझ गये कि किसी भक्त पर मुसीबत आयी है। दूसरे दिन दोपहर को १२ बजे गुरुदेव वापस आये।

मोटी माँ ने पूछा—"क्या बात रही?"

गुरुदेव ने कहा—"भगवान् ने अपना विरुद कर दिखाया। प्रपन्नों की रक्षा करते हुए लाज रखते हैं। गोरधन भाई के पुत्र की जान बच गयी।"

यह बात सुनकर सभी सन्न रह गये।

इन्दु भाई ने घटना का विवरण देते हुए कहा—"चलाला होकर इंगरोला जाने के मार्ग में, प्रवीण भाई जिस मोटर पर सवार होकर जा रहे थे, वह मोटर रास्ते में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उलट गयी। जब हम वहाँ पहुँचे तब देखा कि मोटर औंधी होकर एक ओर पड़ी है। सारा सामान बिखरा हुआ है। वहाँ से इंगरोला केवल दो मील की दूरी पर था। यह समाचार इंगरोला पहुँच गया था। समधी साहब उधर से पहुँचे और इधर से हम लोग हाजिर हो गये। दोनों ही एक साथ वहाँ पहुँचे थे। आश्चर्य की बात थह रहीं कि मोटर में बैठे प्रवीण भाई तथा अन्य यात्रियों को खरोंच तक नहीं आयी थी। श्री गुरुदेव का वह फोटो जिसे गुरुदेव ने यह कहकर दिया था कि इसे अपने साथ ले जाना, दहेज के बक्स पर रखा था। मोटर उलट गयी, संदूक उछलकर दूर गिरकर टूट भी गयी। अन्दर की सारी चीजें बिखर गयीं, पर बीच में टीन के एक पीपे पर गुरुदेव का फोटो सही सलामत था, जैसे गुरुदेव साक्षात् विराजमान हों, मानो सामानों की देखरेख कर रहे हों। बाद में सभी लोगों को इंगरोला पहुँचाया गया। निश्चित समय पर विवाह सम्पन्न हुआ। इसके बाद तुरत गुरुदेव ने आज्ञा दी कि अब हम लोग भावनगर चलें। वहाँ मोटी माँ चिन्ता कर रही है।

× × ×

कभी-कभी योगी पुरुष जान-बूझकर सामान्य व्यक्तियों की तरह अपने चरित्र का परिचय देते हैं। एक बार आप भ्रमण करते हुए अपने राजकोटवाले आश्रम में पहुँचे। रात अधिक हो गयी थी। आश्रम के सभी व्यक्ति गहरी नींद में सो रहे थे। अचानक गुरुदेव यहाँ पधारेंगे, इसकी सूचना किसीको नहीं थी।

गुरुदेव ने सोचा—क्यों किसीको जगाकर कष्ट दिया जाय। चुपचाप आश्रम में जाकर कहीं सो जाऊँगा। बाहर का पहरेदार भी कर्त्तव्यच्युत होकर सो रहा था, पर उसके कान सजग थे।

अचानक उसे लगा कि कोई व्यक्ति धीरे-धीरे आश्रम की ओर जा रहा है। तुरत जाग पड़ा। यह पहरेदार नया था। गुरुदेव को पहचानता नहीं था। तुरत कड़ककर बोला –"बाबाजी, जल्दी से बाहर निकल जाइये।"

अब गुरुदेव ने सोचा कि भीतर के लोगों को सूचना देकर जगाना उचित नहीं है। चुपचाप आश्रम के बाहर दूर एक वृक्ष के नीचे जाकर सो गये।

इधर कुछ ही क्षण बाद भगवत्-प्रेरणा से पहरेदार की बुद्धि जाग्रत हुई। उसे संदेह हुआ कि कहीं यह बाबा आश्रम के रणछोड़दास महाराज तो नहीं हैं? वह तुरत आश्रम के भीतर जाकर गुरुदेव का चित्र देखने लगा। चित्र देखते ही उसे साँप सूंघ गया। हे भगवन्, यह मैंने क्या किया? इस आश्रम के महाराज को ही धता बता दिया। तुरत उन्हें खोजता हुआ पेड़ के पास आया और उनके चरणों पर गिर पड़ा। अपनी भूल के लिए क्षमा माँगते हुए आश्रम आने की प्रार्थना करने लगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदाशय गुरुदेव प्रसन्न होकर उसके साथ आश्रम में चले आये। इस अपराध के लिए उन्होंने कुछ नहीं कहा।

दूसरे दिन जब यह घटना आश्रम के भक्तों को मालूम हुई तब वे बड़े दुःखी हुए। गुरुदेव के आश्रम में गुरुदेव का अपमान! सभी उनसे इस अपराध के लिए क्षमा माँगने लगे।

गुरुदेव ने कहा—"कैसी क्षमा, कैसा अपराध, कैसा अपमान? पहरेदार ने अपना कर्त्तव्य निभाया। अगर वह मुझे नहीं पहचानता तो अपराध कैसे हुआ? इसमें मेरा अपमान कहाँ हुआ? साधु को मान-अपमान से दूर रहना चाहिए।"

× × ×

इसी प्रकार एक बार आपने अपने प्रवचन में कहा—"मेरा सिद्धान्त है कि प्राण रहते दूसरों का हित करना।

व्यापक ब्रह्म अखंड अनंता।
अखिल अमोघ एक भगवंता।।

'यः सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्' वे ही राम सर्वभूतमात्र में स्थित हैं। 'सर्वेभ्यो भूतेभ्योन्तरो' वे सबके भीतर हैं। 'यं सर्वाणि भूतानि न विदुरः' जिसको सर्वभूत जानते ही नहीं हैं। 'यस्य सर्वाणि भूतानि शरीरम्' परन्तु सर्वभूतमात्र इन्हींके शरीर हैं। सर्व के अन्दर वे ही शरीरी हैं। 'सर्वस्य प्रभुं ईशानं सर्वस्य शरणं वृहत्' वे ईश्वर सबके स्वामी हैं और सर्व-समर्थ-शरण हैं।

भगवान् ने कहा है कि मैं सर्वप्राणीमात्र में समान रूप में हूँ—

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति।।

जो प्राणीमात्र में समान रूप से स्थित तथा देहादि के नाश होने पर भी, अविनश्वर रूप से रहनेवाले मुझे जानता है, वही ज्ञानी है।

सर्वभूतमात्र को अपने में और अपने को सर्वभूतों में एक आत्मरूप से समान भाव से देखता है, वही योगी है। ऐसी स्थिति में वह किससे द्वेष कर सकता है? किसका मोह और किसका शोक कर सकता है? अपने ही उपास्य से वैर, क्रोध, अनीति, अन्याय आदि कौन कर सकता है? वही, जो अपने को आस्तिक कहलाता है, पर भीतर से नास्तिक है।"

रणछोड़दासजी ने अपने इस वचन का पालन एक घटना में किया था। घटना गुजरात के जूनागढ़ की है। नगर से बाहर आते ही सभी गाड़ियाँ रुक गयीं। यहाँ से सभी लोग अपने-अपने गन्तव्य स्थान की ओर चले जायेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरुदेव की गाड़ी रुकते ही सभी भक्त पास आ गये। गुरुदेव एक वृक्ष के नीचे आसन लगाकर बैठ गये। थोड़ी देर बाद बोले—"सभी लोग आ गये न? अब सभी प्रसाद, फल, मिष्टान्न यहाँ लाकर रख दो। आप लोग यह आशा मत करनी कि इसमें से कुछ आपको दिया जायगा। मैं सबसे पहले ड्राइवरों को दूँगा। इसके बाद शेष महाप्रसाद सभी को मिलेगा। अब आप लोग मेरी सहायता करें। सभी ड्राइवरों को यहाँ बुला लाइये।"

ड्राइवरों के आने पर सभी को हाथ में काफी प्रसाद दिया गया। इसके बाद शेष लोगों को दोनों हाथ भरकर दिये गये। उसी समय न जाने कहाँ से ८-९ मोटरें आकर रुक गयीं। स्थानीय गाँव से ४०-५० देहाती भाई आ गये। गुरुदेव लोगों के नाम लेकर बुलाते रहे और भर-भर अंजलि प्रसाद देते रहे। अभी सभी को प्रसाद दे रहे थे कि गाँव से ५०-६० व्यक्ति और आये तथा पंक्तिवार खड़े हो गये। प्रणाम करने की होड़ लग गयी।

गुरुदेव ने कहा—"प्रणाम बाद में करना। पहले प्रसादी की लाइन में खड़े हो जाओ। पहले प्रसाद, बाद में प्रणाम।"

धीरे-धीरे कतार इतनी लम्बी हो गयी कि कुछ मत पूछिये। थोड़ी देर बाद कुमुदिनी ने हँड़िया की ओर देखा तो चकित रह गयी। अभी तो आधी हँड़िया खाली नहीं हुई है। इतने लोगों को प्रसाद बाँटने पर भी इतना शेष है?

कुमुदिनी को चकित देखकर गुरुदेव नें कहा—"यह तो मामूली बात है। इसमें आश्चर्य की क्या बात है? इस तरह के चमत्कार अनेक साधु करते हैं। तुम इसे नोट करो—

प्रभुता को सबही भजें, प्रभु को भजे न कोय।
जो कोई प्रभु को भजे, (तो) प्रभुता दासी होय॥

सन् १९१९ की घटना है। उन दिनों महाराजजी कोटड़ा में एक शिव-मंदिर में विराज रहे थे। यहाँ यज्ञोपवीत-समारोह हो रहा था। भंडारा हो चुका था।

आगत भक्तों में जयराम भाई ने महाराज से प्रार्थना की कि न्यारा में पधारने की कृपा करें।

गुरुदेव ने कहा—"ठीक है, पर मैं पैदल ही आऊँगा। घोड़े पर चढ़ने की इच्छा नहीं है।"

जयराम भाई ने कहा—"मैं समझ गया, गुरुदेव। आप प्राणी को कष्ट देना नहीं चाहते। एक बात की अनुमति चाहता हूँ। आपके साथ कोई एक व्यक्ति कर दूँ जो आपको मार्ग बताता हुआ चले।"

गुरुदेव ने कहा—"इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। मैं अकेला भ्रमण करता हूँ। आप चिन्ता न करें। मैं अकेला चला जाऊँगा। अब आप लोग अपने-अपने घोड़े से चले जायँ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरुदेव पैदल चल दिये। गुरुदेव के जाने के दस मिनट बाद जयराम भाई और उनके चाचा माधवभाई घोड़े पर सवार होकर रवाना हुए। काफी दूर आने पर भी मार्ग में कहीं गुरुदेव दिखाई नहीं दिये। यह देखकर ये लोग चिन्तित हो उठे। मार्ग में जो मिलता, उसीसे पूछते—"क्यों भाई, एक साधुजी को इधर से जाते देखा है ?"

कोटड़ा से न्यारा १४ मील दूर है। तेज घोड़े पर इतनी दूरी पार करने में दो घण्टे लगते हैं। जब न्यारा दो मील दूर रह गया तब एक किसान से मुलाकात हुई। उससे भी यही प्रश्न पूछा गया।

उसने कहा—"लगभग डेढ़ घण्टा पहले मैंने दूर से एक सफेद गोला आँधी की तरह आते देखा था। मुझे यह देखकर भय हुआ कि यह क्या आ रहा है। अभी मैं यह सब सोच रहा था कि मेरी आँखों के सामने से वह चीज निकल गयी। गौर से देखने पर ज्ञात हुआ कि श्वेत वस्त्र पहने एक साधु आँधी की तरह जमीन से कुछ ऊपर उठकर जा रहे हैं। वे न्यारा की ओर गये हैं।"

यह बात सुनते ही दोनों व्यक्तियों ने घोड़े की गति तेज कर दी। न्यारा पहुँचने पर इन लोगों ने देखा—गुरुदेव एक पेड़ के नीचे विश्राम कर रहे हैं।

नौकर ने बताया—"बाबू, महाराज तो यहाँ डेढ़-दो घण्टे से आराम कर रहे हैं।"

× × ×

महाराजजी अपने प्रवचनों में गीता, कबीर तथा तुलसीदास के पदों का उद्धरण देते थे। श्री सद्गुरु सेवा ट्रस्ट के नाम से बम्बई, राजकोट, पुष्कर, गोंडल, चित्रकूट आदि जगहों पर आश्रम स्थापित किया गया है। महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, बिहार, उड़ीसा, गुजरात और राजस्थान आदि प्रदेशों में नेत्र-आपरेशन होता है। पाठशाला, गोशाला, अस्पताल, अकाल के समय अन्न-वितरण एवं राहत-कार्य करते हुए जनता-जनार्दन की सेवा करते रहे। अब तक जितने सेवा-कार्य किये गये हैं, उनका संक्षिप्त विवरण कुमारी कुमुदिनी परमानन्द पजवाणी की पुस्तक में उल्लेख है। अभी हाल ही में वे परलोकवासी हुए हैं। लगभग चार सौ वर्ष तक वे भारत में साधना करते रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवधूत माधव पागला

शंकर की नगरी काशी में आज भी एक परम्परा का पालन होता है, आषाढ़ मास में जब पानी नहीं बरसता और गर्मी से लोग व्याकुल हो उठते हैं तब भक्त लोग, खासकर अहीर जाति के लोग गंगा-जल कलश में भरकर, 'हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे' का नारा लगाते हुए क्रमबद्ध रूप में अधिकांश मंदिरों में पानी चढ़ाते हैं। ऐसी मान्यता है कि इससे प्रसन्न होकर देवाधिदेव शंकर पानी बरसाते हैं।

काशी के शकरकन्द गली मुहल्ले में श्री गोविन्द का मंदिर है जहाँ माधव नामक पुजारी कार्य करते थे। कुछ झक्की स्वभाव के थे, इसलिए लोग उन्हें माधव पागला कहते थे। उस वर्ष आषाढ़ मास लगने पर जब पानी नहीं बरसा तब माधव ने निश्चय किया कि वे अपने इष्टदेवता श्री गोविन्द को १०८ कलश-जल से स्नान करायेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस समाचार को सुनते ही मंदिर के भक्तों में उत्सुकता उत्पन्न हुई। एक-एक कर नर-नारी आने लगे। देखते ही देखते काफी भीड़ एकत्रित हो गयी। माधव विग्रह पर पानी उड़ेलने लगे।

आगत लोगों में से किसीने कहा—"माधव भाई, आज आप १०८ कलश-जल से गोविन्दजी को स्नान करा रहे हैं, इसलिए आज पानी जरूर वरसना चाहिए। अगर ऐसा नहीं हुआ तो हम समझेंगे कि आपके मंत्र का कोई प्रभाव नहीं है।"

इस शिगूफा को सुनते ही उपस्थित जनसमूह ने भी कहा—"आपका कहना ठीक है। देखना है आज माधव भाई अपने मंत्र की शक्ति दिखाते हैं या नहीं।"

भक्तों का मन्तव्य सुनते ही माधव का मुँह सूख गया। मन ही मन घवराने लगे। यह कैसे संभव है कि श्री गोविन्द से प्रार्थना करने पर पानी वरसेगा? अगर न वरसा तो लोग समझेंगे कि मेरे मंत्र में, पूजा में, भक्ति में, कोई दम नहीं है। मैं पुजारी के योग्य नहीं हूँ।

इसी प्रकार के चिन्तन में माधव विग्रह को स्नान कराने के वाद उसे कमरे में ले आये और उनका श्रृङ्गार करने लगे। वाद में हाथ जोड़ते हुए विग्रह से निवेदन किया—"माधव, आज जरूर पानी वरसाना।"

माधव पागला अपने गोविन्द को भी अपने ही नाम से सम्वोधित करते थे। विग्रह को सजाने में वे इतने दत्तचित्त रहे कि वाहर क्या हो रहा है, इसका उन्हें आभास नहीं हुआ।

एक घंटा वाद वाहर निकलते ही मंदिर की स्वामिनी साधु माँ ने कहा—"माधव, देखी तुमने हमारे गोविन्द की लीला?"

माधव का ध्यान आँगन की ओर न जाकर साधु माँ की ओर केन्द्रित था। उसने चकित भाव से प्रश्न किया—"क्या हुआ?"

साधु माँ ने कहा—"देख नहीं रहे हो? चारों ओर पानी ही पानी है।"

अब माधव ने गौर किया तो देखा कि चारों ओर से वर्षा का जल वेग से वाहर निकल रहा है। यह दृश्य देखते ही वे समझ गये कि गोविन्द ने कृपा करके उनकी लाज रख ली। मन ही मन माधव अपने गोविन्द के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने लगे।

इस वर्षा के कारण उपस्थित सभी भक्त साधु माँ से कहने लगे—"निस्सन्देह आपका यह पुजारी असाधारण है। इनके मंत्र में शक्ति है। गोविन्दजी ने इनका मान रख दिया है।"

माधव अपने गोविन्दजी के एकनिष्ठ भक्त थे। जिस प्रकार कदम-कदम पर माधव अपने गोविन्दजी से प्रार्थना करते, ठीक उसी प्रकार गोविन्दजी भी उसे सावधान करते रहते थे। दोनों आपस में वातें भी करते थे। अगर निष्ठा के साथ सर्वस्व इष्ट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को समर्पित किया जाय तो प्रभु अपने भक्त पर अवश्य कृपा करते हैं। लेकिन आज भी इस बात को कुछ लोग समझ नहीं पाते।

आमतौर पर लोग बाजार से पूजन-सामग्री खरीदते समय दुकानदार से कहेंगे—पूजा के लिए लेना है। अर्थात् रद्दी या सस्ती सामग्री दो। पूजा के बाद सारी सामग्री फेंक दी जायगी या पुजारी उसका उपयोग करेगा। अगर यही सामग्री श्रद्धापूर्वक समर्पित की जाय तो देवता उसे ग्रहण करते हैं। अश्रद्धा करनेवालों को उसका फल मिल जाता है।

दीपावली का अवसर था। प्रतिवर्ष इस पर्व को मनाया जाता है। अन्नकूट-महोत्सव राधा-गोविन्द मंदिर में धूमधाम से मनाया जाता है। इस उत्सव में भाग लेने के लिए देश के विभिन्न स्थानों से भक्तों का आगमन होता है। दिनभर उपवास रहने के पश्चात् सायंकाल लोग भोग ग्रहण करते हैं।

प्रातःकालीन पूजा समाप्त करने के बाद माधव पुनः एक बार स्नान करने के लिए स्नानघर में आये। तभी उसे लगा जैसे गोविन्दजी मंदिर के भीतर से कह रहे हैं—"आज तुम यहाँ भोजन मत करना।"

इस दैववाणी को सुनकर माधव विस्मित रह गये। नाराज होकर बोल उठे—"इस घर में नहीं खाऊँगा तो क्या भूखा मरूँगा ?"

स्नान करने के पश्चात् अपने कमरे में आकर सोचने लगे—मैं यहाँ का पुजारी हूँ, भोग चढ़ाऊँगा। न जाने कितने तरह के पकवान बने हैं। सभी लोग खायँगे और एक मैं वंचित रह जाऊँगा। मैंने यहाँ का प्रसाद ग्रहण नहीं किया है, अगर इस बात का पता साधु माँ को लग गया तो वे क्या सोचेंगी ? आखिर मैं खाऊँगा क्या ? आज तो मुझे यहाँ से बाहर कहीं जाने भी नहीं दिया जायगा। अगर बाजार से कुछ मँगाकर खाऊँ तो साधु माँ बेहद नाराज होंगी। अजीब तमाशा है। इसी प्रकार के ऊहापोह में माधव खिजला उठा।

एकाएक बगल के मकान से एक लड़की आयी और बोली—"बाबा, उमा मौसी तुम्हें बुला रही है।"

माधव ने कहा—"चल, आता हूँ।"

कपड़े बदलकर माधव पड़ोस के मकान में आये तो देखा कि उमाशशि देवी ने उसके लिए फलाहार का प्रबंध किया है। माधव को देखते ही उमाशशि देवी ने गले में आँचल डालकर उन्हें प्रणाम किया। फिर बोली—"दादा, आज आपको मेरे यहाँ अन्नकूट का प्रसाद ग्रहण करना होगा। घर में पूजा हुई है।"

भोजन करते समय माधव की आँखें अपने-आप भर आयीं। अभी कुछ देर पहले वह अपने इष्ट गोविन्द पर नाराज होकर न जाने कितनी बातें कहते रहे और इधर उन्होंने उसके भोजन के लिए पहले से ही प्रबंध कर रखा है। प्रभु, आपकी माया अपरम्पार है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंदिर में आकर माधव ने अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया। इसके बाद ग्लानि के कारण जमीन पर लोटते हुए कहने लगे—"माधव, मुझे क्षमा कर दो। मैं आपकी कृपा को समझ नहीं सका। मुझसे बड़ा अपराध हो गया दीनबन्धु।"

इधर कुछ देर के बाद साधु माँ को जब यह बात मालूम हुई कि पुजारीजी ने पड़ोस के घर में जलपान किया है तब वे बिगड़ उठीं। उन्हें अपने आत्म-सम्मान में आघात लगा। उन्होंने माधव को बुलाकर डाँटना प्रारंभ किया। माधव सिर झुकाकर समस्त तिरस्कार चुपचाप सुनते रहे। अगर सही बात कहते तो कोई विश्वास न करता। अपने गोविन्द का आदेश उन्हें मानना ही था। आखिर गोविन्द ने ऐसा आदेश क्यों दिया, वे समझ नहीं पा रहे थे।

भोग-निवेदन करते समय एक अनहोनी घटना घट गयी। आचमन करते वक्त मंत्र भूल गये। भोग-निवेदन का मंत्र जबान पर नहीं आ रहा था। मस्तिष्क पर काफी जोर डालने पर भी कुछ स्मरण नहीं कर सके। आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? अपनी कमजोरी पर वे रोने लगे। तभी दैववाणी सुनाई दी—"मैं जूठा भोग खाऊँगा?"

'जूठा खाऊँगा' शब्द सुनकर अब माधव चौंक उठे। आखिर भोग जूठा कैसे हो गया? किसने यह अपराध किया? जूठा भोग तो गोविन्द को दिया नहीं जा सकता। शायद इसीलिए गोविन्द ने मुझे इस घर में भोजन करने के लिए मना किया। मेरे लिए दूसरे के घर प्रबंध कर दिया ताकि भूखा न रहूँ। हे माधव, यह सब क्या हो रहा है? इतने सारे भक्त तुम्हारा प्रसाद न खाकर किसी पातकी का जूठा खायेंगे?

अत्यन्त खिन्न होकर माधव मंदिर से बाहर आये। आगे बढ़ते ही दीनबन्धु नामक पाचक ने कहा—"पुजारीजी, आज मालपूआ और पायस डटकर खाना। बहुत बढ़िया बना है।"

यह बात सुनते ही माधव चौंक उठे। अब उसे यह समझते देर नहीं लगी कि भोग को जूठा किसने किया है। भोग बनाते समय इसने रसोईघर में चखा होगा। देवता को चढ़ाने के पहले चखने के कारण सारा भोग जूठा हो गया।

इधर बाहर भक्तों में भोग वितरण किया जा रहा था, पर माधव ने उसे ग्रहण नहीं किया। यह बात सुनकर साधु माँ ने पूछा—"तुमने आज भोग क्यों नहीं ग्रहण किया?"

माधव ने उत्तर दिया—"अपने गोविन्द से पूछ लेना।"

मंदिर में स्थायी रूप से भोग बनानेवाला पाचक कुछ दिनों से अस्वस्थ था, इसलिए दीनबन्धु नामक पाचक को अस्थायी रूप में रखा गया था। भोग बनाते समय अक्सर वह चख लेता था। एक दिन उसके भाग्य ने साथ नहीं दिया और मुसीबत आ गयी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसने भण्डारघर की नौकरानी से कहा—"आज की दाल बहुत कड़वी है। कोई खा नहीं सकेगा। साधु माँ से अच्छी दाल माँग लाओ। दूसरी दाल बना दूँ।"

दाल कड़वी है, अब अच्छी दाल चाहिए, यह बात सुनकर साधु माँ का माथा ठनका। पाचक को बुलाकर उन्होंने पूछा—"दाल कड़वी है, यह बात तुम्हें कैसे मालूम हुई? अभी तो भोग भी नहीं चढ़ाया गया है। क्या भोग चढ़ाने के पहले सारी सामग्री चख लेते हो?"

रँगे-हाथ पकड़े जाने के कारण दीनबन्धु सिर झुकाये खड़ा रहा। इससे अपराध स्पष्ट हो गया।

साधु माँ ने कहा—"माधव को आने दो। आज ही तुम्हारा हिसाब करके विदा कर दूँगी।"

माधव के आते ही साधु माँ ने कहा—"भोग की दाल को दीनबन्धु ने जूठा कर दिया है, अब क्या होगा?"

इस शिकायत को सुनते ही माधव ने कहा—"अगर मैं उसकी यही शिकायत उस दिन करता तो आप तथा अन्य लोग मुझ पर विश्वास न करते, उल्टे दो-चार बातें सभी सुनाते। झूठे अपवाद के कारण मैं दोषी बन जाता। आज आपको प्रत्यक्ष प्रमाण मिल गया। अन्नकूटवाले दिन मेरे माधव ने भोग खाने को मना किया था। मैं अपने माधव से इधर बराबर कहता आ रहा हूँ कि एक बार उसे पकड़वा दो। आज वह पकड़ा गया और सही जानकारी आप लोगों को मिली।"

इतना कहते-कहते माधव रो पड़ा। साधु माँ भी पश्चात्ताप के आँसू बहाने लगीं।

× × ×

श्री माधव पागला की जन्म-तिथि के बारे में मतभेद है। महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराजजी को उन्होंने बताया था कि उनका जन्म ढाका जिले में विक्रमपुर परगने के अन्तर्गत काचिआइल गाँव में माघ १३०७ बंगाब्द (१९०० ई०) में एक कुलीन ब्राह्मण के घर हुआ था। नाम रखा गया गोपालचन्द्र मुखोपाध्याय। चार वर्ष की आयु में आप पितृहीन हो गये। दादी ने स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा, वहाँ आपका नाम शैलजाकान्त मुखोपाध्याय लिखाया गया। प्रारंभिक शिक्षा समाप्त करके तेलारबाग स्थित के० एस० डी० एम० हाईस्कूल में प्रविष्ट हुए। यहाँ प्रथम श्रेणी में पास होने के बाद आप कलकत्ता चले आये। यहाँ देशबन्धु चित्तरंजन दास ने उनका नाम साउथ सबबर्न कॉलेज में लिखा दिया और प्रतिमाह ४० रुपये सहायता देते रहे। यहाँ से बी० ए० पास कर आप कानून की शिक्षा लेने लगे। बाद में रेलवे में ठीकेदारी करने लगे। सन् १९३१ में एक जमींदार के यहाँ प्राइवेट ट्यूटर हुए। इसके बाद १९३४ ई० में काशी चले आये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काशी में आपके मामा पण्डित आनन्दचन्द्र विद्यालंकार काशीराज के सभापण्डित तथा बंगाल सारस्वत-समाज के अध्यक्ष थे। यहाँ के पण्डित-समाज में उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। इनके कारण माधव बराबर काशी आते थे। सन् १९३४ में जब माधव यहाँ आये तब संयोगवश राम ठाकुर[1] यहीं निवास कर रहे थे। माधवजी उनका दर्शन करने गये। बातचीत के सिलसिले में श्रद्धापूर्वक दीक्षा देने की प्रार्थना की। ठाकुर महाशय तैयार हो गये।

इसके पूर्व जब आपकी उम्र १२ वर्ष थी तब आप दीक्षा लेने के उद्देश्य से महात्मा भोलानन्द गिरि के पास गये जो उन दिनों हरिद्वार में थे। उन्होंने कहा—"मैं तुम्हें दीक्षा नहीं दे सकता। आगे कोई महापुरुष देगा।"

बाईस वर्ष बाद इन्हें उपयुक्त गुरु से दीक्षा प्राप्त हुई। बाद में महात्मा भोलानन्द गिरि के प्रधान शिष्य महामण्डलेश्वर महादेवानन्द गिरि जब काशी पधारे तब आपने उनसे इस घटना का जिक्र किया। महामण्डलेश्वर ने कहा—"गुरु किना (क्रीत) होता है। तुम्हारा जो गुरु होगा वही दीक्षा देगा।"

इस घटना के बाद आप कुछ दिनों के लिए कलकत्ता चले गये। वहाँ एक साल रहने के बाद १९३६ में काशी आकर यहीं हमेशा के लिए रह गये। आपके साथ आपकी माताजी रहती थीं। उनका देहान्त १९४५ ई० में हुआ था। पहले बंगाली टोला में रहते थे। बाद में पातालेश्वर स्थित एक किराये के मकान में रहने लगे। सन् १९५१ में आप एक मस्जिद के बाहरी कमरे में रहने लगे। आपके शिष्यों में हिन्दू-मुसलमान दोनों ही थे।

आपके बारे में एक राय यह है कि आपका जन्म १९ अगहन, शुक्ल त्रयोदशी, मंगलवार को ढाका जिले के विक्रमपुर परगना के अन्तर्गत बिदगाँव में हुआ था। आपके पिता का नाम चन्द्रकान्त मुखर्जी था। नामकरण के दिन आपका नाम गोपालचन्द्र रखा गया था। आपकी माता श्रीमती मनोरमादेवी स्वयं श्री राम ठाकुर की शिष्या थीं।

आपके गुरुओं की लम्बी कहानी है। कई जन्मों के गुरुओं का उल्लेख किया गया है। आपके आदिगुरु श्री माधवेन्द्र पुरी थे। इष्टगुरु रामचन्द्र देव दयानिधि थे। महाप्रभु चैतन्यदेव के आविर्भाव-काल से अब तक आपने दस बार जन्म लिया है। इस जन्म के बाद अब आपका पुनर्जन्म नहीं होगा। इस बार आपका जन्म ननिहाल में हुआ था। सन् १९३४ ई० में आपने श्री राम ठाकुर से काशी में दीक्षा ली। आपके शिक्षागुरु श्री नरेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय थे। शिक्षागुरु से ही इन्हें ज्ञात हुआ कि पिछले जन्म में आप माधव पागला के नाम से प्रसिद्ध थे। शायद इसीलिए इस जन्म में आपने उस नाम को पुनः ग्रहण कर लिया। पूर्वजन्म में आप छपरा जिले में रहते थे। पागलों

१. देखिये भारत के महान् योगी, चौथा भाग।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की तरह मार्ग में घूमते हुए कहा करते थे—"आमार माधव खूब भालो।" (मेरा माधव बहुत अच्छा है।)

काशी-निवासकाल में आपने अनेक महात्माओं का सत्संग किया। माधवानन्द गिरि, बालानन्द ब्रह्मचारी के शिष्य मोहनानन्द, सीतारामदास ओंकारनाथ, स्वामी सर्वानन्द, मौनी बाबा, फकीरसाहब, स्वामी ब्रह्मानन्द, स्वामी कृष्णानन्द आश्रम, स्वामी प्रणवानन्द, ज्ञानानन्द स्वामी, शोभा माँ, रांगा माँ, केवलानन्द ब्रह्मचारी आदि।

× × ×

माधव को दीक्षा देने के दो वर्ष बाद श्री राम ठाकुर पुनः काशी आये। माधव पागला गुरु-दर्शन के लिए उनके निकट गये। गुरु ने पूछा—"नाम जप रहे हो न ?"

माधव ने कहा—"मेरा मन बड़ा चंचल रहता है। मुझसे यह सब नहीं होगा।"

ठाकुर ने कहा—"एक बार में नहीं होगा। नाम की जड़ पकड़े रहो। जड़ पकड़े रहने पर सब अपने-आप ठीक हो जायगा।"

श्री ठाकुर हमेशा अपने भक्तों तथा शिष्यों को नाम जपने की सलाह देते थे। उनका कहना था कि यही सबसे सरल मार्ग है—चिदानन्द को पाने के लिए।

श्री राम ठाकुर ने एक बार माधव पागला से कहा कि किसीका नाम लेते समय 'श्री' शब्द आगे जरूर लगाना चाहिए। यह सलाह सुनते ही उन्हें ख्याल आया कि वे बातचीत के सिलसिले में अपने गुरुदेव का नाम 'राम ठाकुर' कहते हैं। अन्तर्यामी गुरुदेव ने शिष्य के अपराध को कितने सहज ढंग से समझा दिया।

एक बार राम ठाकुर काशी आकर पांड़े धर्मशाला में ठहरे। अस्वस्थ रहने के कारण वे किसीसे मिलते नहीं थे। भक्त आते, दरवाजा बन्द देखकर लौट जाते थे। ऐसे माहौल में माधव पागला गुरुदेव का दर्शन करने के लिए चल पड़े। मार्ग में दर्शन से वंचित भक्तों की भीड़ मिली तो उन लोगों ने कहा—"गुरुदेव का दर्शन नहीं कर सकेंगे। दरवाजा बन्द है।"

यह बात सुनकर माधव पागला निराश नहीं हुए। उन्होंने सोचा कि गुरु द्वारा दिये गये नाम से अगर मैं भवसागर पार हो सकता हूँ तो क्या उस नाम के जरिये गुरु का दर्शन नहीं कर सकता ? अगर आज ऐसा न हुआ तो मैं इस नाम को ही नहीं, बल्कि अपने गुरु को भी त्याग दूँगा। झक्की आदमी थे। मन ही मन इस प्रकार निश्चय करके वे धर्मशाला में आये तो देखा—गुरुदेव के कमरे का दरवाजा खुला हुआ है।

भक्त की विजय हुई। गुरुदेव को प्रणाम करने के बाद प्रसन्नचित्त घर वापस आ गये। माँ से उन्होंने कहा—"माँ, मैं गुरुदेव का दर्शन कर आया।"

लड़के की बात सुनकर माँ चकित रह गयी। आज वह स्वयं दर्शन करने गयी थीं तब दरवाजा बन्द रहने के कारण निराश लौट आयी थीं। बोलीं—"बेटा, मुझे तो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दर्शन नहीं मिला। मैं ही क्यों, जितने लोग दर्शन की आशा से गये थे, वे सभी निराश होकर वापस चले आये।"

माँ की बात सुनकर माधव पागला अत्यन्त दुःखित हुए। उन्होंने कहा—"माँ, कल दर्शन करने चली जाना। इस बार जरूर दर्शन होगा। अगर दरवाजा न खुला तो मैं इसका प्रबंध कर दूँगा।"

बेटे की बात पर विश्वास कर माँ उसके मित्र यदुलाल बनर्जी के साथ गुरुदेव का दर्शन करने आयीं तो देखा—दरवाजा कल की तरह बन्द है। वह निराश होकर वापस चली गयीं।

माँ की जबानी सारी बातें सुनने के बाद माधव पागला अपने साथ माँ और यदुलाल बनर्जी को लेकर चल पड़े। दरवाजे के समीप आते ही भीतर से आवाज आयी—"कोई मुझे बुला रहा है। जल्द दरवाजा खोल दे।"

दरवाजा खुला। सभी लोगों ने श्री राम ठाकुर का दर्शन किया। इस घटना के बाद से इन्हें बिना किसी बाधा के दर्शन प्राप्त होता रहा।

एक दिन धर्मशाला में श्री राम ठाकुर के सामने कुछ लोग बैठे हुए थे। सभी को वे उपदेश दे रहे थे। माधव पागला आये और चुपचाप एक किनारे बैठ गये। गुरुदेव किसी शिष्य को सत्यनारायण-कथा कराने की तो किसीको बेलपत्ती-फूल से विग्रह की पूजा करने की बातें कह रहे थे।

इन्हीं सब उपदेशों को सुनते-सुनते माधव पागला के मन में एक विचार उत्पन्न हुआ। दीक्षा प्राप्त किये काफी दिन हो गये हैं। गुरु से ही शिष्य को ब्रह्मज्ञान प्राप्त होता है। आज मैं गुरुदेव से निवेदन करूँगा कि वे मुझे ब्रह्मज्ञान दें।

यही सब सोचते हुए उन्होंने गुरुदेव के चरणों पर अपना मस्तक रखा। गुरुदेव ने उनकी पीठ पर हाथ रखते हुए एक मुद्रा बनायी। इसके बाद कुछ देर तक किसी मंत्र का जाप करते रहे। एकाएक माधव पागला को एक नयी अनुभूति प्राप्त हुई। उन्हें समझते देर नहीं लगी कि आज से पहले उन्हें इस प्रकार का आशीर्वाद प्राप्त नहीं हुआ था।

बातचीत के सिलसिले में ठाकुर ने कहा—"साधना के पथ पर अग्रसर होने के लिए हमेशा जप पर ध्यान देना आवश्यक है। सबसे पहले गुरु-मूर्ति का ध्यान करना चाहिए। अगर ध्यान में उनकी मूर्ति न आये तो उनका एक चित्र उत्तम स्थान पर रखकर भक्तिपूर्वक गंध-पुष्प से पूजा तथा स्तव-पाठ करना चाहिए। पहले-पहल मानसिक कष्ट, क्लेश, सांसारिक चिन्ताओं के कारण मन उद्वेलित होगा। लेकिन इन बाधाओं से जूझते हुए निरन्तर जप करते रहना चाहिए। घर-गृहस्थी के कार्यों में लगे रहते हुए भी सर्वदा जप करते रहना चाहिए। जब इस दिशा में प्रगति करोगे तब कान के समीप साँय-साँय या शंख या घंटा बजने जैसी आवाजें आयेंगी। आँखों से आँसू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निकलेंगे और शरीर में सिहरन उत्पन्न होगी। इससे घवराना नहीं और न इसे रोग समझकर इलाज करना। यह उत्तम लक्षण है। ध्यान करते वक्त जब गुरु-मूर्ति स्पष्ट रूप से दिखाई दे तब समझ लेना कि मन स्थिर हो गया है। इस प्रकार अपने को गुरु के चरणों में समर्पित कर देना चाहिए। इससे रिपुओं का नाश होता है और मन शान्त हो जाता है। गुरु पर विश्वास होता है और आस्था जमती है। उस समय गुरु की चिन्मय सत्ता तुम्हारे अन्तर में प्रकट होगी। गुरु-शिष्य की अभेदात्मा स्थापित होगी। अपनी समस्त जिम्मेदारी से मुक्त हो जाओगे तब धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, सुख-दुःख आदि संस्कार तुम्हें विचलित नहीं कर सकेंगे। इसके वाद तुम अपनी सारी जिम्मेदारी गुरु को देकर निरपेक्ष भाव से विचरण करोगे।

"इस स्थिति में गुरु तुम्हारे शरीर में आवेशित होकर तुमसे नाना प्रकार के कार्य करा लेंगे। उन कार्यों को अपनी क्षमता मत समझना। इससे अनिष्ट हो सकता है और साधना का मार्ग अवरुद्ध हो सकता है। साधक अपनी योग्यता के अनुसार ही फल प्राप्त करता है। गुरु-शक्ति से ही सब कुछ सुलभ होता है। क्रमशः उन्नीत होने पर इष्ट से साक्षात्कार होता है। उस वक्त जप-ध्यान से केवल इष्ट की अनुभूति होती है। अपनी सत्ता नहीं रहती। समस्त इंद्रियाँ स्वतः इष्ट की ओर उन्मुख हो जाती हैं।

"कहने का आशय यह है कि इस संसार में जब तक यह शरीर रहे तब तक भजन-जप करते रहना चाहिए। भजन के प्रारंभ में गहरी भक्ति उत्पन्न होती है। इसे साधन-भक्ति कहा जाता है। जब यह भक्ति और गहरी हो जाती है तब प्रेम-भक्ति का रूप ले लेती है। यह तो केवल हृदय में प्रकट होती है। अव तो समझ गये न ?"

गुरु-वचन को सुनकर माधव पागला आत्मविभोर हो उठे। उन्होंने निश्चय किया कि भविष्य में वे इस उपदेश का निष्ठापूर्वक पालन करते रहेंगे।

× × ×

दीक्षा लेने के चार वर्ष वाद की वात है।

माधव पागला घर-घर जाकर छात्रों को पढ़ाया करते थे। इस कार्य के लिए कुल जमा पन्द्रह रुपये मिलते थे। इतनी छोटी रकम से गृहस्थी की गाड़ी चल नहीं रही थी। परिवार में माँ और वे स्वयं थे। माँ को भी भरपेट भोजन न दे पाने का उन्हें कष्ट था। रात को अधिकतर वे लाई-चना खाकर सो जाते थे। अपने इस कष्ट के कारण कभी-कभी इतने दु:खी हो जाते थे कि रात को चुपचाप घंटों रोते रहते थे।

सोचा करते—मैं गरीव आदमी हूँ, इसलिए गुरुदेव की मुझ पर कृपा नहीं हो रही है। वे बड़े आदमियों के यहाँ ठहरते हैं, ऐसी स्थिति में मेरे जैसे नगण्य शिष्य पर उनका ध्यान नहीं जाता। मेरी याद उन्हें कैसे आयेगी, भला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक दिन इसी प्रकार की चिन्ता करते-करते उन्होंने दशाश्वमेध घाट की सीढ़ियों पर बैठकर मुँह ढाँप लिया और रोने लगे।

इस घटना के कई दिनों वाद उनकी वाल्य-सहचरी से अचानक मुलाकात हो गयी। दोनों एक-दूसरे को देखकर चकित रह गये। दोनों एक ही गाँव में पैदा हुए थे, साथ खेलते रहे। आज वाईस वर्ष वाद यह मुलाकात हुई है।

माधव पागला ने विस्मय के साथ पूछा– "तू तो साधुनी वन गयी है।"

उसने भी कहा—"और तू ? तू भी साधु बन गया है। तू श्री राम ठाकुर का शिष्य है और मैं भी। गुरुदेव ने मुझे तेरे पास भेजा है।"

गुरुदेव की चर्चा चलने पर माधव पागला के दिल का दर्द उमड़ आया। उन्होंने कहा—"गुरुदेव बड़े लोगों के हैं। उन्हींका ध्यान रखते हैं। हमारे जैसे दरिद्रों की ओर ध्यान देने के लिए उनके पास अवकाश कहाँ है ?"

यह वात सुनते ही शिव दुर्गा ने कहा—"चुप-चुप। गुरुदेव के वारे में ऐसी वातें नहीं कहते। शोभा नहीं देतीं। जानता है, तेरे रोने के कारण आजकल वे वहुत अस्थिर हो उठे हैं। वरावर कहते हैं कि मेरा माधव रो-रोकर मुझे परेशान कर रहा है। तुझे शान्त करने के लिए उन्होंने मुझे यहाँ भेजा है। इधर तू रोता है और उधर उन्हें कष्ट होता है। गुरुदेव ने कहा है कि क्या अभाव होने पर रोना चाहिए ?"

सारी वातें सुनने के वाद माधव पागला को आश्चर्य हुआ, आखिर इन तमाम वातों से गुरुदेव कैसे परिचित हो गये ? इसका अर्थ यह है कि वे मेरी वर्तमान स्थिति से परिचित हैं। इस शरीर पर तो श्री ठाकुर का अधिकार है।

एक दिन रात को माधव ने स्वप्न में देखा कि वाढ़ के कारण चारों ओर पानी ही पानी है। वह गुरुदेव के साथ एक नाव पर यात्रा कर रहा है। राम ठाकुर नाव पर खिचड़ी और आलू का चोखा बना रहे हैं। भोजन तैयार हो जाने पर गुरुदेव ने कहा—"आओ, भोजन करें।"

गुरु की आज्ञा सुनकर वे चौंक उठे। वोले—"यह क्या गुरुदेव ? आप ठहरे गुरु और मैं शिष्य हूँ। एक ही थाली में कैसे खा सकता हूँ ?"

तभी उनकी नींद खुल गयी। उस दिन अपने शिक्षागुरु श्री नरेन्द्रनाथ वनर्जी से उन्होंने इस स्वप्न का अर्थ पूछा। बनर्जी वावू ने कहा कि इसमें कोई दोष नहीं है।

श्री राम ठाकुर काशी वरावर आते थे। यहाँ वे कभी पांड़े धर्मशाला या हरसुन्दरी धर्मशाला में ठहरते थे। इसी प्रकार जव एक बार ठाकुर आये तव उनका दर्शन करने वे धर्मशाला में गये तो देखा कि एक सज्जन को गुरु-पूजा के वारे में अनेक झंझटवाली प्रक्रिया समझा रहे थे। सारी वातें सुनने के वाद माधव पागला ने सोचा—अगर मुझे यह सब करने को कहा जायगा तो मुझसे हो नहीं पायेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उक्त सज्जन से बातचीत समाप्त करने के बाद ठाकुर ने माधव पागला से कहा—"आप मेरा नाम लेते हुए जो कुछ हाथ में लेंगे, वह मुझ तक पहुँच जायगा। याद रखिये, मैं उसे ग्रहण भी कर लूंगा।"

श्री राम ठाकुर में एक विशेषता यह थी कि वे प्रत्येक व्यक्ति से बातचीत करते समय सर्वदा 'आप' शब्द का प्रयोग करते थे। गुरुदेव के इस उपदेश को सुनते ही माधव प्रसन्न हो गये। प्रणाम करने के पश्चात् चल पड़े।

× × ×

सन् १९३९ की घटना है। द्वितीय महायुद्ध प्रारंभ हो गया था। चारों ओर सनसनी फैली हुई थी।

माधव अपने मित्र यदुलाल बनर्जी की दुकान पर गये। सुबह के दस बजे थे। अपने मित्र के मुरझाये चेहरे को देखकर माधव ने पूछा—"क्या बात है? चूसे हुए आम की तरह शक्ल क्यों बनाये हुए हो?"

यदुलाल ने कहा—"क्या बताऊँ, सवेरे से अब तक केवल चार आने की बिक्री हुई है। अगर यही हालत रही तो कैसे काम चलेगा? समझ में नहीं आता।"

माधव ने कहा—"मेरे ठाकुर को अमरूद खिलाइये, बिक्री बढ़ जायगी।"

यदु बाबू को इन सब बातों पर विश्वास नहीं था। काफी देर तक किचकिच करने के बाद यदु बाबू ने एक आने का अमरूद मँगवाया और कहा—"ठीक है। लो, इसे ले जाकर अपने ठाकुर को भोग लगा देना।"

माधव ने कहा—"घर जाने की जरूरत नहीं है। यहीं भोग लगा देता हूँ।"

इतना कहने के बाद माधव ने अमरूदों को चाकू से चीरकर उसे दो भागों में बाँटा। इसके बाद एक हिस्सा यदू बाबू को देकर दूसरा हिस्सा स्वयं खाने लगे।

यह दृश्य देखकर यदुलाल बिगड़ उठे—"बड़े भारी धोखेबाज हो। अमरूद खाने की इच्छा थी तो साफ कहते। इस तरह मूर्ख क्यों बनाया?"

माधव ने हँसते हुए कहा—"मैं खा रहा हूँ यानी स्वयं ठाकुर खा रहे हैं। आप भी प्रसाद ग्रहण कीजिए।"

यदुलाल को यह मजाक पसन्द नहीं आया। वे देर तक झनकते रहे। यह देखकर माधव ने कहा—"अगर आज आपकी बिक्री अच्छी हुई तो समझ लीजिएगा कि इस फल को ठाकुर ने खाया है।"

यदुलाल का मिजाज इस परिहास से और भी बिगड़ गया। बोले—"ठीक है। पता चल जायगा। अब आप यहाँ से चलते-फिरते नजर आइये। मेरा पारा गरम हो रहा है।"

शाम को माधव टहलते हुए पुनः दुकान पर आये। तब तक कुछ भी बिक्री नहीं हुई थी। थोड़ी ही देर बाद धीरे-धीरे ग्राहक आने लगे। इसके बाद यह हालत हो गयी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि ग्राहकों को सँभालना कठिन हो गया। कहाँ नित्य ४०-५० रुपये की बिक्री होती थी और उस दिन १२३ रुपये की बिक्री हुई।

रात ९ बजे आकर माधव ने पूछा—"कहो, क्या हाल है ?"

यदुलाल बनर्जी ने प्रसन्नचित्त से कहा—"आज तो चमत्कार हो गया। सिर्फ चार घंटे में १२३ रुपये की बिक्री हुई। पिछले छः माह में इतनी बिक्री कभी नहीं हुई थी।"

माधव ने हँसकर कहा—"अब भविष्य में कभी मेरे ठाकुर के बारे में दोषारोपण न कीजिएगा।"

× × ×

खाली समय में माधव अक्सर दशाश्वमेध घाट पर टहलने चले जाते थे। काशी के घाटों पर कथावाचक कथा कहते हैं, जिसे अधिकतर बंगाली महिलाएँ, कुछ वृद्ध पुरुष कथा सुनते हैं।

स्वामी निखिलानन्द से माधव की घनिष्ठता थी। बातचीत के सिलसिले में एक दिन दोनों में विवाद हो गया। स्वामीजी ने उसे फटकारते हुए कहा—"एक ओर तुम साधु बनते हो और दूसरी ओर स्वामियों का मखौल उड़ाते हो। यह गलत बात है। प्रत्येक संन्यासी को नारायण समझकर उनके प्रति श्रद्धा-ज्ञापन करना चाहिए। श्रीकृष्ण ने यही उपदेश उद्धव को दिया था।"

माधव ने पूछा—"उद्धव ? यह कौन था ?"

माधव के इस प्रश्न पर स्वामीजी चौंक उठे। उन्होंने पूछा—"ब्राह्मण-सन्तान होकर तुम उद्धव को नहीं जानते ? धार्मिक ग्रन्थों का पाठ किया है या नहीं ?"

स्वामीजी के प्रश्न को सुनकर माधव लज्जित हो उठे। उन्हें बड़ी ग्लानि हुई। अपनी अज्ञानता के प्रति उन्हें क्षोभ हुआ। बड़े संकोच के साथ विनम्र भाव से उन्होंने कहा—"स्वामीजी, क्या आप मुझे गीता पढ़ाने का कष्ट करेंगे ?"

स्वामीजी ने कहा—"नहीं। मैं नहीं पढ़ा सकता। मैं काफी वृद्ध हो गया हूँ। तुम किसी अन्य विद्वान् से पढ़ लेना।"

उस दिन माधव रातभर बेचैन रहे। ब्राह्मण-पुत्र होकर उन्होंने गीता का अध्ययन नहीं किया। बार-बार अपने गुरुदेव का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा—"गुरुदेव, मुझे गीता पढ़वाकर ज्ञानी बना दो। अपना दुःख आपके सिवा किससे कहूँ ?"

इस घटना के कई दिनों बाद दशाश्वमेध घाट पर टहलते हुए एक व्यक्ति पर माधव की नजर पड़ी। देखने में वे लगभग ४० वर्ष के थे यानी माधव से ४-५ वर्ष बड़े थे। माधव इन्हें १०-१२ दिनों से चुपचाप टहलते देखा करते थे। एक दिन आगे बढ़कर उन्होंने अपना परिचय दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उक्त अपरिचित सज्जन ने कहा—"मेरा नाम नरेन्द्रनाथ वनर्जी है। तुम मुझे दादा कह सकते हो। तुम्हारे गुरु महापुरुष हैं। मैं उन्हें जानता हूँ। उनका मुझ पर स्नेह है। लगता है, आप योगाभ्यास करते हैं?"

माधव ने कहा—"जी नहीं। मैं केवल नाम जपता हूँ। कुछ दिन हुए शव-शिवा मंदिर में स्थित पंचमुंडी आसन पर मंत्र सिद्ध किया है।"

नरेन्द्रनाथ ने कहा—"यह बात गुरु के अलावा अन्य किसीको नहीं वतानी चाहिए। अव यह वताओ कि तुम मुझसे क्या चाहते हो?"

"मैं गीता पढ़ना चाहता हूँ। क्या आप मुझे गीता पढ़ा सकते हैं?"

नरेन्द्रनाथ ने कहा—"जरूर पढ़ाऊँगा। कल तुम गंगा-स्नान करने के वाद नये वस्त्र पहनकर मेरे यहाँ चले आना। साथ में थोड़ा घिसा हुआ चन्दन लेते आना।"

दूसरे दिन निर्देशानुसार माधव स्नानादि करने के वाद नरेन्द्रनाथ के यहाँ पहुँचे। उन्हें प्रणाम करने के वाद चन्दन लगाया। नरेन्द्रनाथ माधव के मस्तक, बाँह, मुंह और वक्षःस्थल पर चन्दन लगाने के वाद वोले—"उस स्टूल पर बैठ जाओ।"

आज्ञानुसार माधव स्टूल पर वैठ गये। उन्होंने सोचा कि अव शायद दादा गीता-पाठ करेंगे। देखते ही देखते माधव का शरीर अवसन्न हो गया। दोनों आँखें वन्द हो गयीं। धीरे-धीरे वे सो गये। पर भीतर ही भीतर जप चलता रहा। कुछ देर वाद घड़ी की आवाज से उनकी नींद खुली तो देखा—दादा एकटक उसकी ओर देख रहे हैं।

माधव को जागते देख नरेन्द्रनाथ ने पूछा—"नींद खुल गयी? काफी देर तक सोते रहे।"

माधव की समझ में कुछ नहीं आया। लज्जित भाव से उन्होंने कहा—"पता नहीं कैसे नींद आ गयी।"

नरेन्द्रनाथ ने कहा—"ठीक है, गीता के श्लोक कहो।"

"मैं गीता नहीं जानता।"

"मैं कह रहा हूँ, उसे दोहराते चलो।"

इसके वाद नरेन्द्रनाथ ने गीता का एक श्लोक सुनाया। तुरत उसे दोहराते हुए माधव ने अर्थ भी वताया।

नरेन्द्रनाथ ने प्रसन्न होकर कहा—"तुम तो श्लोक का उच्चारण अच्छी तरह कर लेते हो और अर्थ भी वता देते हो।"

"मैं आपकी जवानी सुनता गया और उसकी पुनरावृत्ति करता गया। इसमें कौन-सा कमाल किया?"

इसी प्रकार एक के वाद एक करके श्लोकों की आवृत्ति होती रही। यहाँ से उस दिन रवाना होने के वाद माधव के मन में एक सवाल वरावर टकराने लगा—दादा जरूर कोई जादू जानते हैं। शायद इसीलिए नींद आ गयी थी और मैं गीता का अर्थ कहता गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लगातार कई दिनों तक गीता-पाठ का कार्यक्रम चलता रहा। एक दिन नरेन्द्रनाथ ने कहा—"अब यहाँ आने की जरूरत नहीं है। जब तुम्हें इसकी जरूरत होगी तब अपने-आप आवृत्ति हो जायगी।"

गीता की शिक्षा के बाद माधव नरेन्द्रनाथ से उपनिषदों का पाठ पढ़ने लगे।

एक दिन एक श्लोक की प्रथम पंक्ति सुनाने के बाद नरेन्द्रनाथ दूसरी पंक्ति का स्मरण करने लगे, पर कुछ देर तक उन्हें याद नहीं आया। तभी माधव ने उस श्लोक की आवृत्ति कर दी।

नरेन्द्रनाथ ने चौंककर पूछा—"क्यों भाई, उपनिषद् मेरे अलावा और किसीसे पढ़ते हो क्या ?"

माधव ने हँसते हुए कहा—"जी नहीं। मैंने केवल उपनिषद् का नाम मात्र सुना है। अभी तक देखा नहीं है।"

"तब आपने श्लोक की पूर्ति कैसे की ?"

"जब आप इस श्लोक की अर्द्धाली सुना रहे थे तब मुझे ऐसा लगा जैसे इस श्लोक को कहीं सुन चुका हूँ या जानता हूँ।"

नरेन्द्रनाथ ने पूछा—"इस श्लोक का अर्थ बता सकते हो ?"

माधव ने कहा—"जी हाँ।"

कहने के बाद उन्होंने श्लोक का अर्थ बताया।

नरेन्द्रनाथ को समझते देर नहीं लगी कि माधव पागला सामान्य व्यक्ति नहीं है। यह असाधारण व्यक्ति है। गुरु-कृपा से इसे अलौकिक शक्ति प्राप्त हो गयी है। इधर नरेन्द्रनाथ के व्यवहार और ज्ञान से माधव भी काफी प्रभावित हो गये थे।

माधव अपने दादा नरेन्द्रनाथ का निरन्तर चिन्तन करते थे। एक प्रकार से वह नरेन्द्रमय हो गये थे। उनका ख्याल था कि दादा का निरन्तर ध्यान करते रहने पर उनका ज्ञान मुझमें आ जायगा और मैं योग्य बन जाऊँगा।

धीरे-धीरे कई माह गुजर गये। चैत्र का महीना आ गया। सहसा एक दिन उपलवृष्टि हुई। दोपहर का वक्त था। माधव अपने कमरे में सो रहे थे। अचानक उन्होंने देखा—दादा अपने कमरे में खाट पर बैठे काँप रहे हैं। दरवाजा तथा खिड़कियों से पानी की बौछार उनके कमरे में आ रही है। घर में सहायता करनेवाला कोई नहीं है।

यह दृश्य देखकर माधव परेशान हो उठे। उन दिनों माधव पातालेश्वर और नरेन्द्रनाथ बाँसफाटक मुहल्ले में रहते थे जिनकी दूरी एक-डेढ़ मील थी। तुरत अपनी माँ से गरम कपड़े लेकर वे दादा के घर आये। सूक्ष्म दृष्टि से दादा के यहाँ का जो दृश्य माधव ने देखा था, यहाँ आने पर वही दृश्य देखा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कमरे के भीतर प्रवेश करने के बाद माधव ने कहा—"घर बैठे आपकी हालत देखकर रहा नहीं गया। अपने साथ कुछ गरम कपड़े लाया हूँ।"

नरेन्द्रनाथ ने कहा—"तुम्हारे इस व्यवहार के कारण लोग तुम्हें पागल समझते हैं।"

माधव ने जवाब दिया—"घर पर बैठा था। अचानक आपकी यह हालत देखी। यह सच है या नहीं, यही देखने के लिए चला आया।"

नरेन्द्रनाथ ने कहा—"यह सब छोड़ दो। इससे कोई लाभ नहीं। अपनी शक्ति इस दिशा में मत लगाओ।"

क्षुण्ण मन माधव ने कहा—"मैं इधर कहाँ मन लगाता हूँ ? अपने आप मुझे दिखाई देने लगता है।"

समझौताभरे शब्दों में नरेन्द्रनाथ ने कहा—"अगर गुड़ खाकर तृप्त हो जाओगे तो मोहनभोग कैसे खाओगे ? अगर इस दिशा में मन लगा रहा तो साधना में प्रगति नहीं होगी।"

इस घटना के कुछ दिनों बाद नरेन्द्रनाथ वृन्दावन चले गये। उनके जाने के कई दिनों बाद पुनः माधव ने देखा कि नरेन्द्रनाथ एक खाट पर कम्बल ओढ़े सो रहे हैं। सारा शरीर फूला हुआ है। शायद बुखार से पीड़ित हैं। यह दृश्य देखकर उन्हें अपार कष्ट हुआ। पता मालूम नहीं था। उस दिन २८ दिसम्बर था। इस तारीख को माधव ने नोट कर लिया।

कई माह बाद नरेन्द्रनाथ वापस आये। मुलाकात होने पर माधव ने पूछा—"२८ दिसम्बर के दिन आप कहाँ थे ?"

नरेन्द्रनाथ ने कहा—"माधव भाई, मैंने इसके पहले तुम्हें मना किया था और अब पुनः कर रहा हूँ। क्यों अपनी शक्ति इधर लगाते हो ? जानते हो, इसकी कीमत कितनी है ? केवल तीन पैसे मात्र यानी एक पोस्टकार्ड लिखकर मेरी हालत की जानकारी प्राप्त कर सकते थे।"[1]

माधव ने मायूस होकर कहा—"मैंने इसके लिए कुछ नहीं किया। यह तो मुझे अपने-आप दिखाई देने लगा था। इसमें मेरी गलती कहाँ है ? अगर कोई दृश्य अपने-आप दिखाई,दे तो उसे मैं कैसे रोक सकता हूँ ?"

माधव की सरलता से नरेन्द्रनाथ प्रसन्न होकर बोले—"तब कोई बात नहीं। लेकिन इस दिशा में प्रगति करोगे तो भगवान् की चिन्ता नहीं कर सकोगे। हर वक्त भगवद्-चिन्तन में मन लगाओ।"

---

१. परमहंस रामकृष्ण तथा अन्य संत भी इस तरह की योग-विभूति के बारे में कह चुके हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आखिर एक दिन वह भी आया जब शिक्षा-गुरु नरेन्द्रनाथ ने अपने शिष्य माधव पागला से कहा कि अब मैं हमेशा के लिए अरविन्द आश्रम जा रहा हूँ। इस समाचार से माधव अत्यन्त व्याकुल हो उठे। उन्होंने नरेन्द्रनाथ के पैर पकड़ते हुए कहा—"मैं आज तक आपसे ज्ञान प्राप्त करता रहा। आपके चले जाने पर कौन मुझे ज्ञान देगा ? कहीं प्राप्त-ज्ञान लोप न हो जाय ?"

नरेन्द्रनाथ ने हँसकर कहा—"तुम्हारा यह भय व्यर्थ है। अपने पूर्वजन्म में तुम प्रकाण्ड पण्डित थे। गुरु ने उस आवरण को हटा दिया है, इसीलिए तुममें स्वतः ज्ञान का स्फुरण हो रहा है। भविष्य में तुम जिस पुस्तक का अध्ययन करोगे, आसानी से समझ जाओगे। यह मेरी नहीं, श्री राम ठाकुर की कृपा है। तुम क्या हो, इसे अभी तुम समझ नहीं पा रहे हो। भविष्य में ज्ञान के विकास होने पर स्वतः समझ जाओगे।"

× × ×

नरेन्द्रनाथ चले गये। कई महीने बाद की घटना है।

समाधि के समय माधव पागला को अक्सर बड़ी परेशानी होती रही। आखिर अपने इष्ट को किस नाम से पुकारें। इसी ऊहापोह में वे व्याकुल हो उठते थे। भगवान् के तो अगणित नाम हैं, पर इनमें से उन्हें कोई नाम पसन्द नहीं आ रहा था।

एक दिन वे खोये हुए भाव से कोदई चौकी मुहल्ले में स्थित बरगद के पेड़ के नीचे से गुजर रहे थे। ठीक इसी समय ऊपर से आवाज आयी—"तू मुझे माधव के नाम से पुकार सकता है। इससे मैं संतुष्ट हो जाऊँगा।"

इस दैववाणी को सुनते ही उनका तन-मन एक अव्यक्त आनन्द से सिहर उठा। राह चलते-चलते उनकी स्थिति पागलों जैसी हो गयी। आखिर ऐसा क्यों हो रहा है, इसे वे समझ नहीं पा रहे थे। इसी चिन्तन में उनकी आँखें ढपने लगीं और उन्हें नरेन्द्र भाई की वह बात याद आ गयी जिसे उन्होंने एक अर्सा पहले सुनायी थी।

एक दिन बातचीत के सिलसिले में उन्होंने कहा था—"अपने पूर्वजन्म में तुम छपरा जिले के एक गाँव में रहते थे। कन्धे पर एक फटी कथरी डाले, पागलों की तरह सड़कों पर घूमा करते थे। राह चलते बालक तुम्हें पागल समझकर ढेला मारते, चिढ़ाते और तंग करते थे। तुम्हारे ऊपर कीचड़ फेंककर 'माधव पागला' कहा करते थे। कुछ लोग ऐसे भी थे जो तुम्हें आदर के साथ अपने घर ले जाकर भोजन कराते थे। छपरा जिले में श्री माधव का एक मंदिर है। तुम उसी मंदिर के पुजारी थे। कठोर साधना के कारण तुम पागल हो गये। आश्चर्य की बात यह रही कि लोगों की फटकार, ताड़ना, किसीका आदर, पीड़ा तुम्हें कभी प्रभावित नहीं करती थी। हर वक्त तुम 'मेरा माधव बहुत अच्छा है' कहा करते थे।"

कोदई चौकी में उक्त दैववाणी को सुनने के बाद एक दिन माधव पातालेश्वर स्थित अपने भवन में समाधि लगाकर गुरुप्रदत्त मंत्र का जप कर रहे थे। उनका हृदय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इष्ट की तलाश में व्याकुल था। धीरे-धीरे वे भावावेश में आ गये और उनकी आँखें वन्द हो गयीं। उन्होंने देखा कि गुरुदेव मुरलीधर श्री माधव का हाथ पकड़े उसके पास आये। कितनी सुन्दर मूर्ति है। माधव के शरीर पर विभिन्न प्रकार के अलंकार हैं। श्याम-वर्ण, पैरों में नूपुर, पीत वस्त्र, कानों में कुण्डल, सिर पर मयूर-पुच्छ, सुकुमार वालकों की तरह हँसी। गुरुदेव के अनुरोध पर वे दर्शन देने आये थे। माधव पागला अपने इष्ट को देखकर अचैतन्य हो गये। थोड़ी देर बाद सारा दृश्य गायब हो गया।

कुछ देर वाद जब उन्हें होश आया तब उनका तन-वदन परिपूर्ण आनन्द से सराबोर हो चुका था। गुरुदेव की असीम कृपा से आज उन्हें अपने प्रभु के दर्शन हुए। इस घटना के बाद वे नवद्वीप के राजा कृष्णचन्द्र द्वारा स्थापित शव-शिवा मंदिर में स्थित पंचमुंडी आसन पर दो रात बैठकर साधना करते रहे। इस साधना से वे मंत्र सिद्ध हो गये। बाद में उन्हें सर्वत्र श्री नाम का आभास होने लगा। लगता था, जैसे सहस्रों कंठों से नाम ध्वनित हो रहा है।

× × ×

पातालेश्वर स्थित जिस मकान में माधव रहते थे, उस मकान में श्री श्याम-सुन्दर तथा गोपालजी की मूर्ति स्थापित थी। इस मंदिर के प्रतिष्ठाता थे—श्री रामहरि ठाकुर। एक दिन विचित्र घटना हुई।

नित्य रात का शयन-आरती करनेवाला व्यक्ति उस दिन किसी कारण से नहीं आया। यह देखकर घर की मालकिन ने माधव से आरती करने का अनुरोध किया। माधव ने अपनी माँ से कहा—"मैं आरती कैसे करूँगा? मैं मन्त्र वगैरह कुछ नहीं जानता।"

माँ ने कहा—"कोई हर्ज नहीं। तू अपना इष्ट मंत्र जपते हुए आरती कर दे। इसीसे सब कुछ हो जायगा।"

माँ के आज्ञानुसार मंदिर में जाकर उन्होंने आरती की। बाद में विग्रह को गोद में उठाकर लिटाने गये तो वे चौंक उठे। उन्हें प्रस्तर-प्रतिमा के स्थान पर जीवन्त मूर्ति-बोध हुआ। बाद में गृहस्वामी से पूछने पर ज्ञात हुआ कि इस मूर्ति की प्रतिष्ठा एक सिद्ध महात्मा के द्वारा हुई है।

इस घटना के कुछ दिनों बाद एक दिन माधव गंगा-स्नान करने के पश्चात् घाट की सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे। इनके पीछे-पीछे एक बालक आ रहा था। उसने चलते-चलते कहा—"देखो, ये लोग मुझे पायस नहीं देते।"

माधव अपनी धुन में थे। अनमने भाव से उन्होंने जवाब दिया—"नहीं देते तो मैं क्या करूँ?"

वह बालक अपनी रट लगाता हुआ घर के समीप तक आया और फिर न जाने कहाँ गायब हो गया। यह देखकर माधव को चैतन्य हुआ। भीतर आकर उन्होंने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गृहस्वामी से इस घटना का जिक्र करते हुए कहा—"आप आज ही श्यामसुन्दर को भोग में पायस दीजिए।"

गृहस्वामी ने कहा—"ओह ! बड़ी भूल हो गयी। पायस-भोग देने के लिए कलकत्ते से खजूर का गुड़ मँगवाया था। बक्से में बन्द रखने के कारण हम लोग भूल गये। आज ही श्यामसुन्दर को पायस-भोग दूँगा।"

इसी प्रकार माधव के जीवन में अनेक चमत्कारिक घटनाएँ हुई हैं। पंडित गोपीनाथ कविराज ने लिखा है—"एक विचित्र बात है कि इतने वैराग्यसम्पन्न अवधूत महापुरुष होते हुए भी अब तक एक गृहस्थ-परिवार से इनका पारिवारिक सम्बन्ध स्थापित है। इस सम्बन्ध में पूछने पर इन्होंने एक दिन इसका भेद खोलते हुए मुझसे कहा—"यदुलाल बनर्जी की चौक में दवा की दुकान थी। नरेन्द्रनाथ बनर्जी ने मुझे एक दिन बताया था कि तुम इस परिवार के अभिन्न अंग थे। बाद में गंभीरतापूर्वक विचार करने पर मुझे ज्ञात हुआ कि वे हमारे पूर्वजन्म के पिता थे। सन् १९५६ ई० में उनका देहान्त हो गया। इनके एक पुत्र था। परिवार में पुत्र, पुत्रवधू और माँ थी। माँ को मैं चाची कहा करता था। पुत्र की चार संतानें हैं जिनके पालन-पोषण का भार मेरे ऊपर है। ये लोग मेरी भरपूर सेवा करते हैं। मैं स्वयं भी इनकी सहायता करता हूँ। इस प्रकार संस्कारजन्य बन्धन से बँधा हूँ।"

इसी बीच एक दिन माँ का निधन हो गया। अब माधव पूर्ण रूप से बन्धन-हीन हो गये। माँ के निधन के पश्चात् आप सकरकन्द गली में स्थित राधा गोविन्दजी मंदिर में पुजारी बने जिसका उल्लेख प्रारंभ में किया गया है। इस मंदिर की स्वामिनी को लोग 'साधु माँ' कहते थे। वे अत्यन्त निष्ठापूर्वक भजन-पूजन करती हैं। धर्म-ग्रंथों का अध्ययन करती हैं और राधा-गोविन्द का पूजन श्रद्धा-भक्ति से कराती हैं।

माधव को जब पुजारी के पद पर रखा गया तब पुराने पुजारी ने कहा—"आप पुजारी तो बन गये, क्या आपसे सारा काम सँभलेगा ? दुबला-पतला शरीर है और इधर राधारानी और गोविन्द की मूर्ति काफी भारी है। नित्य उन्हें स्नान कराने के बाद सिंहासन पर रखना पड़ता है। दोपहर को उन्हें लिटाना पड़ता है। शाम को पुनः बैठाना पड़ता है और रात को शयन-आरती के बाद लिटाना पड़ता है। क्या आपसे इतना श्रम हो सकेगा ? अगर आप इतना कर सकेंगे तो अपने कार्य में सफल होंगे।"

पुजारी का वक्तव्य सुनकर माधव चिन्तित हो उठे। वे कितने कमजोर हैं, इसका ज्ञान उन्हें था। पहली बार जब वे मूर्ति उठाने लगे तब उनका सारा शरीर काँपने लगा। पसीने-पसीने हो गये। किसी सूरत से दोनों मूर्तियों को लिटाने के बाद धीरे से माधव ने कहा—"गोविन्द, तुम हल्के हो जाओ। तुम इतने भारी हो कि मुझसे उठाते नहीं बन रहा है। तुम्हें हलका होना है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रात को सोते समय, इन्ही बातों को दोहराते हुए माधव ने कहा—"अगर तुम हलके न हुए तो मैं यहाँ काम नहीं कर पाऊँगा।"

दूसरे दिन स्नान कराने के बाद माधव ने जब मूर्ति को उठाया तब कुल वजन पाँच सेर था। बड़ी आसानी से दोनों मूर्तियों को स्नान कराने के बाद उन्हें सिंहासन पर स्थापित किया।

कई दिनों बाद साधु माँ प्रश्न कर बैठी—"कहिये पुजारीजी, आपको विग्रह उठाने में कोई परेशानी तो नहीं होती ?"

माधव ने हँसकर कहा—"साधु माँ, भले ही गोविन्दजी औरों के निकट वजनी हों, पर मेरे निकट बालक जैसे हैं। कहिये तो उन्हें गोद में उठाकर दौड़ सकता हूँ।"

यह जवाब सुनकर साधु माँ चकित रह गयीं। प्रारंभ से ही वे माधव में अद्भुत भाव देखती आ रही हैं। उन्हें लगा, जैसे इतने दिनों बाद एक वास्तविक पुजारी मिला है।

इस घटना के कुछ दिनों बाद की बात है। देवता को भोग देने के बाद माधव ने महाराज से कहा—"आपने आज दाल ठीक नहीं बनायी है। मिर्च कुछ अधिक है।"

यह शिकायत सुनकर पाचक महाराज आगबबूला हो गये। साधु माँ से शिकायत करने पर वे बोलीं - "नाराज क्यों हो रहे हो ? बात सही है या नहीं, जाँच कर लेने पर पता चल जायगा।"

उस दिन भोजन करते समय सभी लोगों ने स्वीकार किया कि आज महाराज ने दाल में मिर्च अधिक डाल दी है।

इसी प्रकार माधव अक्सर भोग की कमी का उल्लेख करते रहे। पाचक को आश्चर्य होता कि इस पागल को इन बातों की जानकारी पहले से कैसे हो जाती है।

एक बार पूछने पर माधव ने जवाब दिया—"मुझे गोविन्द बता देते हैं।"

लेकिन इस बात पर कोई विश्वास नहीं करता था।

× × ×

माधव में दो कमजोरियाँ थीं। एक तो ताश खेलने में मशगूल हो जाते थे, दूसरे सिगरेट बहुत पीते थे। एक बार मित्रों के साथ ताश खेलने बैठे तो उन्हें समय का ध्यान नहीं रहा। तभी एक मित्र ने आकर कहा—"माधव, तुम यहाँ बैठे ताश खेल रहे हो, उधर मंदिर का दरवाजा बन्द हो गया है। रात के नौ बज चुके हैं।"

इतना सुनते ही माधव ताश के पत्ते फेंककर तुरत मंदिर की ओर दौड़े। राह चलते भगवान् से प्रार्थना करने लगे—"हे माधव, मेरी रक्षा करो। अब मैं कभी ताश नहीं खेलूंगा।"

घर के पास आकर देखा—दरवाजा खुला है और भीतर मंदिर में विग्रह स्थापित है। संतोष की साँस लेते हुए माधव ने मन ही मन कहा—"माधव, आज तुमने बचा लिया। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब भविष्य में कभी ताश नहीं खेलूंगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धीरे-धीरे साढ़े-नौ बज गये। अब माधव ने चकित भाव से पाचक के पास जाकर पूछा—"महाराजजी, साढ़े-नौ बज गये और अभी तक भोग क्यों नहीं तैयार हुआ? फाटक भी बन्द नहीं किया गया?"

पाचक ने कहा—"भोग बनाते समय आज पता नहीं, क्यों तीन-तीन बार चूल्हा बुझ गया। चौथी बार बना रहा हूँ, इसलिए देर हो गयी।"

पाचक का जवाब सुनकर माधव अपने-आपमें कहने लगे—हे माधव, आज आपने मेरी रक्षा की। अब साधु माँ की डाँट से बचा लो।

इस मंदिर का एक विशेष नियम है। यहाँ रहनेवाले सभी लोग रात को आठ बजे तक भीतर आ जाते हैं वरना उन्हें साधु माँ डाँटती हैं। भोजन करते समय माधव ने जान-बूझकर साधु माँ से पूछा—"आज आपने मुझे फटकारा क्यों नहीं?"

साधु माँ ने पूछा—"आखिर क्यों डाँटूंगी? मैं बरामदे पर बैठी सब देखती रहती हूँ। तुम ठीक आठ बजे भीतर आये। गमछा लेकर कल-घर में मुंह धोने गये। इसके बाद यहाँ बैठे सिगरेट पीते रहे और अब पूछते हो कि डाँटा-फटकारा क्यों नहीं?"

माधव ने सोचा—यह भी मेरे गोविन्द की लीला है। अगर वे सहायक रहें तो कोई कुछ नहीं कर सकता।

दूसरी घटना सिगरेट के बारे में है।

माधव को सिगरेट पीने की बुरी लत है। एक दिन शाम के समय माधव सायं-आरती करने के बाद साधु माँ के पास आकर बोले-"साधु माँ, मुझे चार आने दीजिए।"

"क्या करोगे?"

"मेरे पास सिगरेट नहीं है। सिगरेट खरीदूँगा।"

साधु माँ एक अर्से से माधव को समझा रही थीं कि वह सिगरेट पीना छोड़ दे, पर वह अपनी आदत से बाज नहीं आ रहा था। आज मौका मिला तो साधु माँ जिद कर बैठीं। बोलीं—"सिगरेट के लिए पैसे मेरे पास नहीं हैं।"

साधु का जवाब और जिद देखकर माधव ने कहा—"देखो साधु माँ, मैं सिगरेट पीना बन्द नहीं करूँगा। भले ही तुम पैसे न दो, गोविन्द का बाप देगा।"

साधु माँ भी चिढ़कर बोलीं—"देखूं, कौन तुम्हें सिगरेट पीने के लिए पैसे देता है?"

मंदिर से बाहर आकर माधव गंगा किनारे टहलने लगे ताकि कोई परिचित मिल जाय तो उससे पैसे माँगकर सिगरेट का जुगाड़ करे। लेकिन उस दिन कोई नहीं मिला। इधर सिगरेट की तलब तंग कर रही थी। धीरे-धीरे वक्त गुजरता गया। सायं-आरती का समय हो रहा है समझकर माधव मंदिर की ओर रवाना हुए। लेकिन सिगरेट के लिए छटपटा रहे थे। सोचने लगे—कहीं रात को नींद न आयी तो मुश्किल होगी। क्या करें, समझ नहीं पा रहे थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वनाथ गली में प्रवेश करते ही अचानक उनकी निगाह फर्श पर पड़ी एक चवन्नी पर गयी। उसे उठाकर वे राह चलते लोगों से पूछने लगे—"यह चवन्नी किसकी गिर गयी है ?" आसपास के दुकानदारों से भी यही प्रश्न पूछा।

लेकिन किसीने कोई उत्तर नहीं दिया। उस चवन्नी का कोई भी दावेदार सामने नहीं आया। माधव को समझते देर नहीं लगी कि माधव ने उनके लिए यह इन्तजाम किया है। तुरत पास की दुकान पर जाकर उन्होंने एक पैकेट सिगरेट खरीदी और ठाठ से कश खींचते हुए मंदिर में आये।

भोग-आरती के वाद साधु माँ को चिढ़ाने के लिए दनादन सिगरेट पर सिगरेट पीने लगे।

यह देखकर साधु माँ ने विस्मय से पूछा—"वहुत सिगरेट पी रहा है ? सिगरेट के पैसे किसने दिये ?"

माधव ने कहा—"साधु माँ, मेरी वात झूठी नहीं है। गोविन्द के वाप ने ही मुझे पैसे दिये। दस पैसे की सिगरेट खरीदी, वाकी छः पैसे मेरी जेब में हैं।"

वाद में साधु माँ को उन्होंने चवन्नी कैसे मिली, इसकी पूरी कहानी सुनाई।

साधु माँ ने कहा—"भक्त की हर इच्छा भगवान् पूरी करते हैं। अव आगे से सिगरेट के पैसे माँग लेना।"

इस घटना के कुछ दिनों वाद माधव अस्वस्थ हुए। कई दिनों वाद उन्होंने अरविन्द आश्रम में श्री माताजी तथा नरेन्द्रनाथ को पत्र लिखा कि मैं रोग-मुक्त होना चाहता हूँ।

एक दिन जव वे अकेले में चुपचाप सिगरेट पी रहे थे तव उनकी आँखों के सामने श्री माताजी की मूर्ति तैर गयी। माधव ने स्पष्ट रूप से सुना—"धूम्रपान वन्द कर दो। वदले में दूध पिओ।"

शायद यह आँखों का भ्रम है समझकर माधव ने इस आदेश को टाल दिया। चौथे दिन पाण्डीचेरी से इसी आशय का एक पत्र आया। इस पत्र को पढ़ने के वाद माधव ने सिगरेट पीना वन्द कर दिया।

× × ×

गोविन्दजी के लिए एक दिन माधव रोटी वना रहे थे। ठीक इसी समय सदर दरवाजे पर एक पागल आया और चिल्लाकर वोला—"भूख लगी है, रोटी लाओ।"

इस आवाज को सुनकर साधु माँ दरवाजे के पास आयीं और वोलीं—"अभी गोविन्दजी के लिए रोटी वन रही है। थोड़ी देर वाद मिलेगी।"

पागल ने कहा—"क्या मैं गोविन्द नहीं हूँ ?"

साधु माँ को ऐसे जवाव की आशा नहीं थी। वे मन ही मन डर गयीं। वोलीं—"अच्छी वात है, वैठो। तुम्हारे लिए रोटी वनवा देती हूँ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माधव भीतर बैठा सारी बातें सुन रहा था। पागल का उत्तर सुनकर उसने सोचा—सामान्य पागल इस तरह का जवाब नहीं दे सकता। इसमें कोई विशेषता जरूर होगी।

उसने साधु माँ से कहा—"मैं पागल को एक बार देखना चाहता हूँ। उसे रुकने के लिए कहिये। मैं उसके लिए रोटी बना देता हूँ।"

इतना कहकर उसने कई रोटियाँ बनायीं और उन्हें लेकर पागल के समीप आकर कहा—"लीजिए।"

पागल एक चबूतरे पर रोटियाँ लेकर बोला—"ओ ढाका के रहनेवाले, जरा चटनी भी लेते आओ।"

पागल के इस सम्बोधन से माधव बुरी तरह चौंक उठे। मैं ढाका-निवासी हूँ, इसे कैसे मालूम हुआ? बनारस के इने-गिने लोग इस बात को जानते हैं। पछाँह में एक अर्से तक रहने के कारण पूर्वी बंगाल की भाषा भी भूल गया हूँ। आखिर इस पागल को इस बात की जानकारी कैसे हो गयी?

तभी पागल ने पुनः कहा—"जाओ, चटनी ले आओ।"

इस चेतावनी को सुनकर माधव घबराकर भीतर आया और साधु माँ से चटनी की माँग की। साधु माँ ने कहा—"इस बार बीमारी की वजह से चटनी नहीं बना सकी।"

माधव को एकाएक ख्याल आया कि आज से १०-१२ दिन पहले आम की चटनी खाने के लिए साधु माँ ने दी थी जिसे उसने मंदिर के बाहर ताखे पर रख दिया था। अभी तक खायी नहीं। उस चटनी को ले जाकर उसने दे दी।

इस घटना के बाद वह पागल अक्सर आता और अद्भुत बातें कहा करता था। एक दिन साधु माँ की बातों से माधव क्षुण्ण हो गया था। उस दिन जब पागल आया तब माधव ने पूछा—"एक बात बताओ। अब मुझे यहाँ और कितने दिन नौकरी करनी पड़ेगी?"

पागल ने कहा—"जब तक तुम्हारी इच्छा हो, कर सकते हो। जब जाने की इच्छा होगी तब तुम्हें कोई रोक नहीं सकेगा।"

इस बातचीत के तीसरे दिन एक घटना हो गयी। साधु माँ ने एक ब्राह्मण का अपमान किया। यह देखकर माधव अपनी क्षुब्धता को रोक नहीं सका। हमेशा के लिए राधा-गोविन्द के मंदिर से चला गया। आश्चर्य की बात यह हुई कि माधव के जाने के बाद से पागल का आना भी बन्द हो गया।

मंदिर की नौकरी छोड़ देने के बाद भी माधव कभी-कभी यहाँ आते रहे। माधव के एक ठीकेदार मित्र थे। जिन दिनों उनकी हालत बहुत खराब थी, उन दिनों माधव के माध्यम से गोविन्दजी की मिन्नत करने पर एक बड़ा काम मिल गया था जिसमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काफी आमदनी हुई थी। इससे सन्तुष्ट होकर उन्होंने माधव के पास गोविन्दजी को भोग चढ़ाने के लिए पाँच रुपये भेजे।

रुपये पाकर माधव मंदिर में आये और साधु माँ को देकर कहा—"मेरे एक मित्र ने पाँच रुपये अपनी मनौती के भेजे हैं। गोविन्दजी को पायस का भोग दीजिएगा।"

माधव वहाँ से अपने डेरे की ओर रवाना हुए तो मार्ग में सुना जैसे गोविन्दजी कह रहे हैं—पायस के साथ आम खाने की इच्छा है। दो बार इस कथन को सुनकर माधव परेशानी महसूस करने लगा। उसने मन में सोचा—सारी रकम तो मंदिर में दे आया, अब आम कहाँ से खरीदूँ ? जेब टटोलने पर साढ़े पाँच आने पैसे मिले। उस रकम से एक आम खरीदकर पुनः मंदिर में आये।

साधु माँ, पाचक, पुजारी तथा अन्य कर्मचारी जितने लोग वहाँ मौजूद थे, उनके सामने आम देते हुए माधव ने कहा—"पायस-भोग के समय इस आम को भी चढ़ा दिया जाय। भूलें नहीं।"

दूसरे दिन सवेरे जब माधव स्नान कर रहा था तभी गोविन्दजी की आवाज सुनाई दी—कल मुझे पायस के साथ आम नहीं दिया गया।

इतना सुनना था कि माधव का पारा गरम हो गया। स्नान अधूरा छोड़कर तेजी से मंदिर की ओर रवाना हो गया। मंदिर में आते ही वृद्ध पुजारी से पूछा—"कहिये पुजारीजी, कल मैं सभी लोगों से बार-बार अनुरोध कर गया था कि पायस-भोग के साथ आम को जरूर चढ़ा दीजिएगा। आखिर आम क्यों नहीं चढ़ाया गया ?"

गोविन्द का भोग हो गया था। इस वक्त लोगों को परोसा जा रहा था। माधव के इस प्रश्न से पुजारी चौंक उठे। अपनी गलती के लिए क्षमा माँगने लगे।

एक ओर बैठी साधु माँ प्रसाद ग्रहण कर रही थीं। गलती हो गयी है सुनकर उन्हें दुःख तो हुआ, पर आश्चर्य भी। उन्होंने विस्मय के साथ पूछा—"तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि गोविन्दजी को भोग में आम नहीं दिया गया है ?"

माधव ने हँसकर कहा—"जिसे नहीं दिया गया, वही तुम्हारी शिकायत मुझसे कर गया है।"

यह सुनकर न केवल साधु माँ बल्कि उपस्थित सभी लोग दंग रह गये। लोगों को समझते देर नहीं लगी कि निस्सन्देह माधव अलौकिक शक्तिवाला व्यक्ति है।

अभी तक गोविन्द सिंहासन पर बैठे थे। उन्हें आम का भोग दिया गया। उस आम को काटकर प्रसाद के रूप में लोगों को दिया गया। आम चखते हुए लोगों ने स्वीकार किया कि आम बहुत मीठा है।

इस घटना के बाद से लोग माधव से भयभीत रहने लगे। इस व्यक्ति से गोविन्द अपनी बातें कहते हैं।

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माधव के एक घनिष्ठ मित्र विनय बाबू थे। इनके यहाँ माधव का बराबर आना-जाना, भोजन करना तथा वक्त-जरूरत पर सहायता प्राप्त करना आदि होता था। विनय बाबू एक बैंक में क्लर्क थे।

एक बार इन्हें खुजली की बीमारी हुई। छुतहा-रोग जानकर बैंक ने इन्हें कुछ दिनों के लिए छुट्टी दे दी। जिस रोग को लोग खुजली समझ रहे थे, आगे चलकर वह कुष्ठ प्रमाणित हुआ। शर्म के कारण विनय बाबू का घर से बाहर निकलना बन्द हो गया। संपूर्ण शरीर में जगह-जगह पीप भर गया। घाव में कीड़े बिलबिलाने लगे।

एकाएक एक दिन उन्हें माधव की याद आयी। उसे बुलाने के लिए आदमी भेजा। माधव के आने पर उन्होंने कहा—"भाई, तुममें भगवद्-शक्ति है। अगर तुम चाहो तो मुझे बचा सकते हो। मुझे बचा लो वरना मेरी नौकरी छूट जायगी।"

माधव ने कहा—"ठीक है, मैं अपने माधव से कहूँगा।"

विनय बाबू की रोग-मुक्ति के लिए माधव पूजा पर बैठ गया। शालग्राम काँपने लगे। एकाएक आवाज आयी—"तुम प्रसाद ग्रहण मत करना।"

पूजा समाप्त करने के बाद उसने मन में कहा—"अगर कोई अनुरोध करेगा तो खायेगा, वरना नहीं। आश्चर्य की बात यह रही कि तीन दिन लगातार पूजा करते रहने पर भी किसीने प्रसाद खाने को नहीं कहा। तीसरे दिन चलते समय पुनः गोविन्द की आवाज आयी—"मुझे पायस खिलाना पड़ेगा।"

इस पूजा के बाद विनय बाबू धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगे और आगे चलकर बैंक में काम करने लगे। एक दिन माधव ने उनसे पायस-भोग की चर्चा की। उन्होंने भोग के लिए कुछ रुपये दिये।

साधु माँ को जब पायस-भोग के लिए उसने रुपये दिये तब उन्होंने कहा कि कल आकर प्रसाद ले लेना।

माधव ने कहा—"ठीक है, आ जाऊँगा।"

राह चलते माधव को पुनः आवाज सुनाई दी—"तुम्हें कह चुका हूँ कि प्रसाद मत ग्रहण करना।"

इस आवाज को सुनते ही माधव चौंक उठा। उसे सारी बातें याद आ गयीं। मन में कहने लगा—"मैंने साधु माँ को वचन दिया है। मैं अवश्य जाऊँगा।"

इसी जिद के कारण उस दिन अधिक रात तक बाजार में टहलते रहे। जब घर आये तब मकान में रहनेवाली एक अन्य किरायेदार बुढ़िया ने कहा—"दादा, कल डिप्टी साहब के यहाँ तुम्हारा निमंत्रण है। तुम्हें भोजन के लिए बुलाया है। वहाँ तुम्हें गीता-पाठ भी करना होगा। तुम्हारी ओर से मैंने वचन दे दिया है। इनकार मत करना।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह बात सुनकर माधव मन ही मन हँस पड़े। मंदिर में प्रसाद-ग्रहण करने न जाऊँ, इसलिए गोविन्द ने मेरे लिए अन्यत्र प्रबंध कर दिया।

उन दिनों माधव पागला गंगामहल मुहल्ले में रहते थे। यह घटना उसी स्थान की है—

नित्य कथा कहने के लिए वे लक्ष्मणपुरा जाते थे। वहाँ से वापस आने के बाद स्वयं अपने हाथ से भोजन बनाकर खाते थे।

एक दिन रात एक बजे चूल्हे पर खिचड़ी चढ़ाकर वे चुपचाप बैठे सिगरेट पी रहे थे। अचानक पीछे की ओर नजर गयी तो देखा—सफेद धोती पहने एक विधवा महिला दरवाजे के पास खड़ी है। गले में रुद्राक्ष की माला, हाथ में कमण्डल है।

माधव से दृष्टि-विनिमय होते ही महिला ने कहा—"बेटा मैं राह भूल गयी हूँ।"

माधव ने सोचा – बुढ़िया कहीं कीर्तन सुनने गयी थी। अब अँधेरे में रास्ता भूल गयी है। उसने पूछा—"कहाँ रहती हैं आप ?"

बुढ़िया ने कहा—"रांगामाटी कालीबाड़ी में।"

माधव ने खिजलाकर कहा—"आप तो घर के पास ही आ गयी हैं। इस सड़क के अगले मोड़ से मुड़ने के बाद कालीबाड़ी का फाटक दिखाई देगा। चलिये, आपको पहुँचा आऊँ।"

बुढ़िया को गन्तव्य स्थान तक पहुँचाकर आने के बाद अकस्मात् माधव के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ—इतनी रात गये यह बुढ़िया इस गली में क्यों आयी ? वह भी मेरे घर में क्यों आयी ? क्या बुढ़िया के रूप में कोई देवी थीं ?

सहसा आज सवेरे की घटना याद आ गयी। डिप्टी साहब के घर पर माधव नित्य गीता-पाठ करने जाता था। बातचीत के सिलसिले में लोग अपने-अपने इष्ट देवता के महत्त्व पर विचार प्रकट करने लगे। कोई काली तो कोई तारा, कोई दुर्गा तो कोई छिन्नमस्ता को महत्त्व देने लगा।

माधव ने कहा—"आप लोगों के इष्ट भयंकर हैं। सबसे अच्छे माधव हैं जिन्हें सामने पाकर गोद में उठा लेने की इच्छा होती है। अगर ऐसे देवता को इष्ट बनाया जाय तो भय उत्पन्न नहीं होगा।"

तो क्या मेरी इस धारणा को दूर करने के लिए काली माता बुढ़िया के रूप में आयी थीं। यह विचार मन में उत्पन्न होते ही दूसरे दिन माधव पड़ोस में स्थित कालीबाड़ी में गये। वहाँ जाकर माधव ने देखा कि दो विधवाएँ एक सधवा महिला आपस में बातें कर रही हैं।

माधव ने पूछा—"यहाँ की एक बुढ़िया कल रात को एक बजे मेरे घर गयी थीं। वे कहाँ हैं ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माधव के प्रश्न को सुनकर तीनों महिलाएँ हँस पड़ीं। मंदिर में स्थित कालीदेवी की ओर इशारा करती हुई एक महिला बोली—"शायद वही बुढ़िया गयी थी। उसे पहचान नहीं सके ?"

माधव ने कहा—"मजाक मत करिये। आप लोगों के अलावा यहाँ और कौन बुढ़िया रहती है ?"

महिला ने कहा—"हम तीनों के अलावा यहाँ अन्य कोई महिला नहीं रहती। इसके अलावा यहाँ रात दस बजे फाटक बन्द हो जाता है। फिर कोई आ-जा नहीं पाता।"

माधव को समझते देर नहीं लगी कि काली माता बुढ़िया के रूप में आकर उसकी इष्टवाली धारणा को भ्रमपूर्ण प्रमाणित कर गयीं। चुपचाप देवी को प्रणाम कर वे मंदिर के बाहर चले आये।

डॉ० गोपीनाथ कविराजजी ने एक बार माधव पागला से प्रश्न किया था कि आप और आपके गुरु श्री राम ठाकुर सामान्य से असामान्य की कोटि में, अपनी साधना के जरिये बन गये। गुरुप्रदत्त साधना-क्रम को अगर आप लोक-कल्याण के लिए बता दें तो उसका उल्लेख करूँ।

प्रत्युत्तर में माधव पागला ने विस्तार के साथ उक्त साधना-क्रम को लिखकर कविराजजी के पास भेजा था, जो निम्नलिखित है। इसके अध्ययन से इस मार्ग के जिज्ञासु अपनी पिपासा शान्त कर सकते हैं।

प्रथम क्रम

साधना-पथ में दृढ़ विश्वास के लिए स्थिरचित्त होकर साधक आगे बढ़े। प्रथमतः श्री श्री गुरु-मूर्ति को उत्तम स्थान पर स्थापित कर यथानियम भक्तिपूर्वक गंध-पुष्पादि द्वारा नाना उपचार से अभीष्ट-कामना या साध्यानुसार पूजा तथा स्तोत्र-पाठ करे।

आरंभ में दैहिक क्लेश, मानसिक चांचल्य, वैषयिक चिंता इत्यादि उत्पात होंगे। इनसे विचलित न होकर साधक नियम की रक्षा करे।

श्री श्री गुरु-पूजा-समापन के अनंतर उस मूर्ति की ओर एक दृष्टि होकर कुछ क्षण देखें और मन-ही-मन मंत्र-जप करे।

सांसारिक कार्यों में रत को चाहिए कि मन-ही-मन इष्ट-मंत्र-जप करते हुए श्री श्री गुरुचरण को ही सर्वथा अपनी शरण माने। जप निरंतर चलता रहे। क्रमशः चरण से लेकर शरीर के ऊपर ध्यान की चेष्टा करे। फिर विपरीत क्रम से मुखमंडल से चरण-युगल तक का ध्यान करे। इस ध्यान-क्रम का अभ्यास कभी बंद न हो। साधक जिस भाव में दृष्टि रख सके, उसी भाव में ध्यान का अभ्यास करे। कुछ काल अभ्यास के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फलस्वरूप इसमें परिपक्वता का लाभ कर वह द्वितीय क्रम में प्रवेश का अधिकारी हो जायगा।

द्वितीय क्रम

इस क्रम में आकर श्री श्री गुरु की पूर्णांग-रूप-चिंता तथा सर्वावस्था में जप-ध्यान करे। अभ्यास के दृढ़ होने पर कान में अविरल सांँय-सांँय शब्द, शंख, घंटा किंवा दूरागत वंशीरव सुनायी पड़ेगा। उससे अश्रु, कंपन, पुलक इत्यादि लक्षण देह में प्रकाश करेंगे। उन्हें कोई रोग समझकर घबड़ायें नहीं, प्रत्युत उत्तम लक्षण समझकर आनंदानुभव करे। अबाधितजप ही इसकी सिद्धि का प्रमाण है। इसी रूप में श्री गुरु-मूर्ति का पूर्णांग रूप मानसपट पर स्थायी भाव से रखे। इसके सफल होने पर मन स्थिर हो गया, ऐसा समझना चाहिए। यह द्वितीय क्रम की परिणति है।

तृतीय क्रम

साधना के तृतीय क्रम में जब आ जाय तब श्री गुरु की पूर्णांग-मूर्ति का चिन्तन-पूर्वक जप करते-करते देह श्री गुरुदेव को समर्पित करे।

अब देह को श्री गुरुदेव की इच्छामात्र से चलाये और अंतर में सर्वदा गुरु-मूर्ति का दर्शन करे। इससे विषय-शक्ति क्रमशः लुप्त हो जायगी। काम-क्रोधादि रिपुओं की भीषणता घट जायेगी। मन शांत होकर शनैः-शनैः प्रसन्नता लाभ करेगा। क्रमशः देह में आत्मबुद्धि तथा अभिमान-राशि घटती जायगी। सांसारिक भावों का उदय कम होगा। श्री श्री गुरु-शक्ति पर श्रद्धा एवं विश्वास दृढ़ होगा। गुरु-कृपा के फलस्वरूप उनकी चिन्मयसत्ता साधक के अंतर में प्रकट होगी। फिर उसकी इंद्रियाँ, देह, मन, बुद्धि आदि गुरु-शक्ति से ही चलने लगेंगी। चित्त का उससे तादात्म्यलाभ होगा। गुरु-शिष्य में अभेदत्व की स्थापना हो जायगी। गुरु-शक्ति से अभेदत्व अथवा एकत्वभाव स्थापित होने पर अपना समस्त दायित्व-बोध होगा। साधक मुक्त हो जायेगा। धर्माधर्म पाप-पुण्य, सुख-दुःखादि संस्कार फिर उसे विचलित नहीं कर सकेंगे। साधक अपने समस्त दायित्व को गुरु में न्यस्त करके निरपेक्ष भाव से विचरण करने लगेगा। यह भक्ति संसार की अतीव दुर्लभ एवं गुह्य वस्तु है। इस प्रकार की अवस्था प्राप्त किये बिना रागानुग-भजन संभव नहीं है। इसलिए श्री श्री चैतन्यचरितामृत में कहा गया है—

'शास्त्रयुक्ति नाहीं माने रागानुगा प्रकृति'

इस अवस्था में उन्नत होकर शाम्भवी-मुद्रा के प्रयोग से अखंड नामजप व ध्यान के परिपाक होने पर देहाभिमान संपूर्ण भाव से चला जायगा और श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित निर्द्वन्द्व अथवा गुणातीत अवस्था प्राप्त होगी।

इस अवस्था के परिपाकांत में श्री गुरु साधक की देह में आवेशित होंगे और शिष्य के द्वारा अनेक अलौकिक कार्य सम्पन्न करायेंगे। इसको अपनी क्षमता या बल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समझने से अनिष्ट हो सकता है। अग्रगति अवरुद्ध हो जाने की आशंका भी रहेगी। अतः इस विषय में बहुत सावधान रहना चाहिए।

चतुर्थ क्रम

पूर्ववर्णित गुणातीत अवस्था पार करके साधक चतुर्थक्रम में उपनीत होगा। इसमें भजन केवल-मात्र गुरु-शक्ति द्वारा होता है। तब जीव का जीव साधन संस्कार नहीं रह जाता है। साधक के चित्त में योग्यतानुसार भाव-प्रकाश होता है। रस इस भाव के अनुगत है। भावानुयायी रस-चित्त को आनंद देता हैं और इष्ट में अर्पित होता है। यही इस क्रम की परिपक्वावस्था है। इष्ट तदात्मक प्राप्त है। उस क्षण अखंड जप एवं ध्यान के बाद साधक के चित्त में केवल मात्र इष्ट-स्वरूप की अनुभूति होती है। इस दशा में साधक जो आचरण करता है, वही सर्वेन्द्रियों में कृष्णानुशीलन है। कारण कि तत्क्षण उसकी निज-सत्ता नहीं रहती, इष्ट-सत्ता ही स्फुरित होती है और इष्ट के प्रति प्रीतिजन्य इंद्रियादि कर्मरत होती है। मन, बुद्धि, अहंकारादि ज्ञान एवं कर्मसंस्कार छोड़कर सर्वतोभावेन इष्टानुसन्धान में लीन होते हैं।

इस भाव में स्नेहसहित यत्नपूर्वक निरंतर (अर्थात् जब तक शरीर रहे) मनन करता रहे। इस प्रकार का भजन अत्यंत दुर्लभ है। यहीं रागानुगा भक्ति की शेष परिणति है। इस अवस्था से ही प्रगाढ़ भक्ति के लक्षण इंद्रियों द्वारा प्रकाशित होते हैं। इसीको साधन-भक्ति कहते हैं। विशेष प्रगाढ़ होकर यही प्रेम-भक्ति की संज्ञा पाती है। उसी क्षण हृदय में इष्टदेव का प्राकट्य हो जाता है। बाहर सब कुछ धुँधला दिखाई देने लगता है—भीतर अखण्ड दिव्यज्योति प्रकाशित होती है। 'भक्तिरसामृत सिन्धु' में इसी दिशा को लक्ष्य करके कहा गया है—

'नित्यसिद्धस्त भावस्य प्राकट्यं सिद्धिसाध्यता।'

भाव यह कि तत्क्षण चित्त में प्रेम प्रकट होने पर आस्वादित स्वादित हो जाता है।

इस दशा में साधक इष्टरूप में स्थिर होकर चिन्मय-रस-विग्रह अथवा सच्चिदानन्द-स्वरूप हो जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon